Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साहित्य-अकादेमी-पुरस्कार-प्राप्त

आनन्दी बाई

(बंगला भाषा के प्रख्यात लेखक का कथा-संग्रह)

मूल लेखक

श्री राजशेखर बोस

अनुवादक

श्री प्रबोधकुमार मजूमदार

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कं० प्राइवेट लि०

पुस्तक प्रकाशक एवं विक्रेता

आगरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

R14A
21211 Rs 2.50
2.3.1961
63

प्रकाशक
राधेमोहन अग्रवाल
मैनेजिंग डाइरेक्टर
शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी प्रा० लिमिटेड
हास्पिटल रोड, आगरा

प्रथम हिन्दी संस्करण : १९६०

मूल्य दो रुपये पचास नये पैसे

मुद्रक :
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स (दि टाइम्स आफ़ इंडिया प्रेस)
१० दरियागंज, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्रम

१.	आनन्दी बाई	५
२.	योगामिनी-सुधा	१५
३.	बटेश्वर की देन	२४
४.	निर्मोक नृत्य	३५
५.	डम्बरू पण्डित	४१
६.	दो सिंह	५०
७.	कामरूपिणी	६०
८.	काशीनाथ का पुनर्जन्म	६७
९.	गगन चप्पल	८०
१०.	अदला-बदली	८९
११.	राजमहिषी	१००
१२.	नवजातक	१११
१३.	पत्र-व्यवहार	११९
१४.	सत्य सन्धी विनायक	१२८
१५.	ययाति की जरा	१३७

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १ :

आनन्दीबाई

अनेक बड़े-बड़े व्यवसायों के मालिक त्रिक्रमदास करोड़ी अपने दिल्ली के दफ़्तर के खास कमरे में बैठे चैकों पर दस्तखत कर रहे थे। अर्दली ने आकर एक कार्ड दिया—'एम. जुल्फिकार खाँ।' त्रिक्रमदास ने कहा, "जरा ठहरने को कहो!"

कुछ देर के बाद दस्तखत किये हुए चैक लेकर क्लर्क निकल गया। त्रिक्रमदास ने घंटी बजाते हुए अर्दली को बुलाकर कार्ड दिया और कहा, "अन्दर बुलाओ!"

जुल्फिकार खाँ ने भीतर आकर आदाब अर्ज किया और कहा—"सेठ जी, मैं इण्टेलीजेन्स ब्रांच से आ रहा हूँ।"

घबराते हुए सेठ जी ने सवाल किया, "इन्कम टैक्स के बारे में कुछ गड़बड़ हुआ है क्या?"

"वह मुझे नहीं मालूम। हमारे डिपार्टमेंट में आपके बारे में एक सीरीयस चार्ज आया है।"

"क्यों, क्या कसूर है मेरा?"

"आपने तीन शादियाँ कर रखी हैं।"

जरा हँसकर त्रिक्रमदास ने कहा, "यह बात? अगर तीन शादियाँ की भी हों तो उसमें मेरा क्या कसूर है? मैं तो हिन्दू हूँ, सैकड़ों शादियाँ कर सकता हूँ। आप लोगों की तरह चार बीवियों के बाद ही रुक जाने की जरूरत मुझे नहीं है।"

खाँ साहब ने हाथ हिलाते हुए कहा, "ओह सेठ जी, आप रुपया ही कमाना जानते हैं, मुल्क की खबर नहीं रखते हैं। हिन्दू, बौद्ध, जैन और सिक्ख कोई भी अब इस देश में एक से ज्यादा शादी नहीं कर सकता। यह कानून हाल ही में चालू हो गया है। क्या आप नहीं जानते?"

"क्या कहते हैं आप? मैं हजारों धंधों में फँसा रहता हूँ, इसलिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब खबर रखने की फुर्सत ही नहीं मिलती। कौन-सा टैक्स नया लागू हुआ, कौन-सा नया लायसेंस लेना है, मैं इन सभी बातों की खोज रखता हूँ लेकिन आपकी खबर पर यकीन नहीं होता। मेरे फूफा हरचन्द जी दो जोरू लेकर बड़े मजे में हैं, उनके नाम पर तो कोई चार्ज नहीं आया है।"

"कानून चालू होने से पहले ही उनके पास दो बीवियाँ हैं। इससे उनका कोई कसूर नहीं। लेकिन आपने हाल में ही तीन शादियाँ की हैं जिसके लिए कड़ी सजा मिलेगी। दस साल की कैद के अलावा काफी रुपया जुर्माना भी हो सकता है।"

सेठ जी ने डरते हुए कहा, "यह तो बड़ी मुश्किल हो गई। अब इसका क्या इलाज है ?"

"देखिए सेठ जी; आप इज्जतदार रईस हैं। आपको हम मुश्किल म फँसाना नहीं चाहते। एक महीने की मुहलत दे रहे हैं। इसीमें आप कोई वन्दोबस्त कर डालिए !"

"कितने रुपए लगेंगे।"

"आप एक बीवी को बहाल रखकर बाकी दोनों को तलाक दे दीजिए ! उसके लिए क्या मुआवजा देना पड़ेगा, मैं नहीं बता सकता। वकील के साथ मशवरा कर लीजिए ! और इधर कितने रुपए लगेंगे, वह तो आपके और हमारे बीच की बातचीत है। वह बाद में होगी।"

सिर पीटते हुए त्रिक्रमदास ने कहा, "हे राम, हे परमात्मा, मुझे बचाओ ! पहली से मैंने सनातनी विधि से शादी की है, दूसरी से आर्यसमाजी विधि से, और तीसरी के साथ मेरी सिविल मैरिज हुई है। किसी से भी छुट्टी नहीं पा सकता।"

"घबराइए मत सेठ जी ! आपके पास रुपए की क्या कमी है ? दो-चार लाख रुपया खर्च करने से सब काम हो जायगा। दो पत्नियों को मोटा मुआवजा देकर कबूल करवा लीजिए कि वे आपकी असली जोरू नहीं हैं, सिर्फ प्रेमिकाएँ हैं। उसके बाद हम लोग मामले को दबा लेंगे। देरी न कीजिए ! अभी-अभी कोई अच्छा-सा वकील तय कीजिए। अच्छा, आज मैं चलता हूँ। हफ़्ते भर बाद फिर मुलाकात होगी। आदाब।"

त्रिक्रमदास की उम्र पचास से कुछ ज्यादा है। उसका वैवाहिक इति-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हास कुछ अनोखा है। साल-भर पहले उनकी एक-मात्र पत्नी कई लड़के-लड़कियाँ छोड़कर गुज़र चुकी। उसके कई महीने बाद उन्होंने आनन्दीबाई से शादी की। उसके बाद हाल में उन्होंने दो और विवाह किये। लेकिन उसकी खबर नाते-रिश्तेदार किसी को नहीं दी। आजकल की पत्नियों में पहली आनन्दीबाई खजौली स्टेट के भूतपूर्व दीवान हरजीवनलाल की इकलौती बेटी थी और बड़ी मिल्कियत की वारिस भी। हरजीवन की मृत्यु के बाद उसका एक दूर के रिश्ते का भाई अभिभावक बनकर भतीजी को धोखा देने की कोशिश में था; लेकिन लड़की के मामुओं की सहायता से आनन्दी से शादी करके उसकी जायदाद त्रिक्रमदास ने अपने कब्जे में कर ली। आनन्दीबाई की उम्र पच्चीस के करीब है और देखने में भी अच्छी नहीं, जरा झगड़ालू है और ऊँचे खानदान की होन का गरूर भी करती है।

त्रिक्रमदास के कारोबार का केन्द्र और हेड आफिस दिल्ली में है। इसके अलावा कलकत्ता और बम्बई इन दोनों जगहों पर जो ब्रांच-आफिस हैं, वे भी छोटे नहीं। वे साल में तीन-चार बार उन शाखाओं का भी निरीक्षण कर आते हैं। आनन्दी के साथ शादी होने के कुछ ही दिन बाद वह बम्बई गये। वहाँ मैनेजर किशनराम खोबानी एक दिन अपने मालिक को निमन्त्रित करके अपने घर ले गए। वे सिन्ध के रहने वाले थे, देश के बँटवारे के बाद वे दिल्ली चले आए और उसके बाद सेठ जी के ब्रांच-मैनेजर बनकर बम्बई में रह रहे थे। किशनराम शौकीन व्यक्ति थे; उनका फ़्लैट काफी सजा हुआ था। उन्होंने अपनी पत्नी और साली के साथ मालिक का परिचय करा दिया।

सेठ जी पुराने ढर्रे के व्यक्ति थे। आधुनिक महिलाओं से मिलने का मौका उन्हें आज तक नहीं मिला था। किशनराम की साली राजहंसी मलकानी को देखकर वे मुग्ध हो गए। कितना गोरा रंग था और कैसी सुन्दर लड़की थी? वह हल्के नीले रंग की सलवार और गाढ़े नीले रंग का कुरता पहने हुए थी और उसके ऊपर सलमे का काम किया हुआ हल्के नीले रंग का दुपट्टा झलक रहा था। बातचीत बड़ी मीठी। उसमें कहीं भी कोई जड़ता नहीं। हँस-हँसकर 'यह खाइए', 'वह खाइए', कहती जाती और खाने के लिए अनुरोध करती जाती।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खाना खत्म हुआ। किशनराम को आड़ में बुलाकर सेठ जी ने राजहंसी मलकानी के बारे में सब खबर लगा ली। लड़की के माँ-बाप जिन्दा नहीं हैं। एक भाई है। वह सिंगापुर में अच्छा-खासा व्यापार करता है, लेकिन बहन की कोई खबर नहीं लेता। इसलिए किशनराम ने अपनी साली को यहाँ आश्रय दिया है। वह अच्छा अभिनय कर सकती है, गा सकती है, सिनेमा में जाने की इच्छा भी है, पर इसके लिए किशनराम और उनकी स्त्री की सम्मति नहीं है।

सेठ जी ने उसी दम अपनी राय पक्की कर ली और कहा, "मेरे साथ राजहंसी का ब्याह कर दो ! मैं इसे सुख से रखूँगा। इसी बम्बई शहर में मेरे लिए जल्द एक मकान खरीद डालो ! राजहंसी वहीं पर रहेगी और मैं भी साल में ज्यादा समय बम्बई ही में रहूँगा। यहाँ का कारोबार फैलाना चाहता हूँ।"

आनन्दीबाई की बात सेठ जी दबा गए। किशनराम जानते थे कि उनके मालिक विधुर हैं, इसलिए खुशी-खुशी उन्होंने सम्मति दे दी। राजहंसी भी राजी हो गई और सेठ जी की ज्यादा उम्र के लिए बिलकुल एतराज नहीं किया। आर्यसमाजी रीति से शादी हो गई। उसके बाद नया मकान भी खरीदा गया और राजहंसी उसमें रहने लगी।

कुछ दिन के बाद त्रिक्रमदास अपने कलकत्ता के कारोबार की देख-भाल के लिए वहाँ गये। वहाँ के मैनेजर परितोष चौधरी बड़े काम के आदमी हैं। अलीपुर में साहबी ढंग से रहते हैं। वे अपने मालिक को डिनर पर न्योता देकर घर ले गए। वहाँ परितोष की बीबी और बहन के साथ त्रिक्रमदास का परिचय हुआ। मिस बलाका चौधरी को देखकर सेठ जी दंग रह गए। वह राजहंसी-जैसी सुन्दरी तो नहीं, लेकिन साड़ी पहनने का ढंग कितना मनमोहक है और बातचीत, अदब-कायदा भी कितना सुन्दर है। मेम-साहबों की तरह खास लहजे में अंग्रेजी बोलती है। हिन्दी बोलने में गलती करती, पर वह गलती भी कितनी प्यारी है। सेठ जी एकदम बेकाबू हो गए। परितोष चौधरी ने बताया कि मिस बलाका एम. ए. पास है, नाच और गाने में उसके मुकाबले की कोई दूसरी कलकत्ता में नहीं है, फिल्म वाले उसे पाने के लिए खुशामद कर रहे हैं, पर परितोष की उसमें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सहमति नहीं है। त्रिक्रमदास अपने को सँभाल नहीं पाए, बोल ही पड़े—"मिस बलाका मैं तुमसे शादी करूँगा।"

बलाका ने हँसते हुए जवाब दिया, "यह तो अच्छी बात है, लेकिन दिल्ली की गर्मी मुझसे बरदाश्त नहीं होगी और न मैं आप लोगों की दाल-रोटी, भाजी, दही-बड़ा हज्म कर पाऊँगी।"

सेठ जी ने कहा, "अरे, तुम्हें दिल्ली जाने को कौन कह रहा है? मैं इसी अलीपुर में एक मकान खरीद दूँगा। उसमें तुम अपने दादा के नजदीक ही रह पाओगी। मैं साल में आठ-नौ महीने यहीं गुजारूँगा। कलकत्ता में जरा कारोबार फैलाना चाहता हूँ। तुम्हें दाल-रोटी नहीं खानी पड़ेगी। मच्छी-भात ही खाना! मच्छी खाने में मुझे भी कोई एतराज नहीं। पर उसमें प्रायः बदबू आती है।"

बलाका ने कहा, "मैं गुलाबी इत्र से हिलसा मछली राँधकर आपको खिलाऊँगी। आपको लगेगा कि आप कलाकन्द खा रहे हैं।"

बलाका ने अपने बड़े भाई से सुना था कि सेठ जी विधुर हैं, तभी वह शादी के लिए तैयार हो गई। बीस दिन के बाद दोनों की सिविल मैरिज हो गई।

त्रिक्रमदास बारी-बारी से दिल्ली, बम्बई और कलकत्ता का चक्कर लगाने लगे। उनके दाम्पत्य की त्रिधारा में कोई बाधा नहीं आई। बड़े आनन्द से दिन कटने लगे। उसके बाद अचानक एक दिन जुल्फिकार खाँ ने आकर दुस्संवाद सुनाकर उनकी शान्ति भंग कर दी।

वकील खजानचन्द त्रिक्रमदास के अनुगत मित्रों में हैं। इन्कमटैक्स का हिसाब दाखिल करते वक्त उनकी मदद के बिना काम नहीं चलता। सेठ जी ने उसी दिन शाम को खजानचन्द के पास जाकर अपनी मुसीबत कह सुनाई।

खजानचन्द ने कहा—"सेठ जी, आपने बिलकुल बच्चों-जैसा काम किया है। आप मुझ पर विश्वास करते हैं और उस बम्बई वाली और कलकत्ता वाली को वचन देने से पहले आपने मुझे कुछ भी नहीं बताया, यह बड़े अफसोस की बात है।"

सेठ जी ने हाथ जोड़ते हुए कहा—"माफ़ कर दो भाई, बुढ़ापे में एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बीवी रहते हुए भी और दो शादी करने का लालच हुआ है, यह बात मारे शर्म के मैंने तुमसे नहीं कही। अब इससे छुटकारा पाने का रास्ता बताओ !"

कुछ देर सोचने के बाद खजानचन्द ने कहा—"आनन्दीबाईको कुछ कहने की जरूरत नहीं है। वह सुनेगी तो दुःख पायगी, रोने-धोने लगेगी। बाकी दोनों को सिलसिलेवार आप सब बातें कहिए ! वे हैं माडर्न गर्ल; उनको आत्म-सम्मान का बोध ज्यादा है। आपका कुकर्म खुलने पर वे गुस्से से आग-बबूला हो जायँगी, आपकी शक्ल तक देखना नहीं चाहेंगी। उससे आपको फायदा ही होगा। मोटा मुआवजा देने पर और आपके दोनों मैनेजरों को खिलाने पर सब-कुछ ठीक हो जायगा। दो-चार लाख रुपया खर्च हो सकता है। लेकिन उससे आपका खास कुछ बिगड़ता नहीं।"

यह सलाह त्रिक्रमदास को पसन्द नहीं आई। उन्होंने कहा—"खजान भाई, तुम मेरे मन की बात नहीं समझ पा रहे हो। मैं बिजनेस बढ़ाना चाहता हूँ और उसके लिए नामी लोगों से मिलने-जुलने की जरूरत है। अगर मैं मंत्रियों या बड़े-बड़े अफसरों को पार्टी दूँ तो मेरे घर की कौन लेडी मेहमानों की आवभगत करेगी ? आनन्दी ? राम-राम कहो ! राजहंसी और बलाका इसी काबिल हैं। अगर खारिज करना पड़े तो आनन्दी को ही करना होगा। उससे मेरा कलेजा चूर-चूर हो जायगा। काफी रकम की जायदाद से ही हाथ धोना पड़ेगा। फिर भी मैं उसके लिए तैयार हूँ। मुश्किल यह है कि राजहंसी और बलाका में किसे रखें और किसे छोड़ें यही तय करना मुश्किल है। लेकिन मुझे कलकत्ता वाली बलाका देवी ज्यादा पसन्द है। उसे अगर रखना किसी हालत में मुमकिन न हो तो बम्बई वाली राजहंसी तो है ही। रुपये के लिए मत सोचो ! इस काम में दस-पन्द्रह लाख तक खर्च करने में मुझे झिझक न होगी।"

वकील ने बहुत समझाया कि आनन्दीबाई उनकी कानूनी बीवी है और उसका हक सबसे ऊपर है। उसे त्याग करने के लिए काफी छल-फरेब की जरूरत होगी। उसकी विरासत में मिली जायदाद से हाथ धोना पड़ेगा, और नतीजा यह होगा कि नुकसान काफी ज्यादा होगा। साथ ही आनन्दीबाई को उस बदमाश चचा के चंगुल में फँसना पड़ेगा। लेकिन त्रिक्रमदास

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किसी तरह से भी अपने संकल्प से नहीं डिगे। चुनाँचे खजान ने कहा—"अच्छी बात है। मैं भरसक कोशिश करूँगा। आप देर न करके तीनों के सामने सारी बातें खोलकर कह दीजिए! उनके मन पर इसका असर देखकर मुझे जो कुछ करना है करूँगा।"

बिना समय बर्बाद किये त्रिक्रमदास हवाई जहाज से बम्बई गये और सीधे राजहंसी के मकान पर पहुँचे। राजहंसी अपने ड्राइंग-रूम में बैठी हुई एक अच्छी पोशाक वाले नौजवान से बातें कर रही थी। आश्चर्य करती हुई बोली—"अरे सेठ जी, ऐसे यकायक कैसे चले आए? खबर क्यों नहीं की तुमने? इन्हें तुम नहीं पहचानते। ये हैं मिस्टर झुमकमल मटकानी। दूर के रिश्ते में मेरे फुफेरे भाई लगते हैं। हिसाब के काम में बड़े उस्ताद हैं। यहाँ के दफ़्तर का अकाउंटेंट तो बूढ़ा हो गया। उसे विदा करके झुमकमल को वह पोस्ट दे दो!"

त्रिक्रमदास ने कहा, "सोचकर बताऊँगा। राजहंसी, तुम्हारे साथ मुझे एक जरूरी बात करनी है।"

झुमकमल के चले जाने के बाद त्रिक्रमदास ने डरते-डरते अपनी तीनों शादियों की खबर दी। लेकिन उसका रिएक्शन एकदम अप्रत्याशित हुआ। राजहंसी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गई।—"वाह-वाह सेठ जी, तुम तो बड़े रँगीले आदमी निकले। तुम्हारी दो और जोरुएँ हैं तो क्या हुआ? मैं उनकी परवाह नहीं करती। तुम बेफ़िक्र रहो, सब ठीक है। लेकिन यह बात फैल न जाय। हाँ, भली याद आई, यह मकान झटपट मेरे नाम रजिस्टरी करना जरूरी है, क्योंकि म्यूनिसिपैलिटी वाले बहुत तंग कर रहे हैं।"

सेठ जी ने कहा—"इसका इन्तजाम हो जायगा। आज मैं यहाँ नहीं ठहर सकता। जरूरी काम से मुझे अभी-अभी कलकत्ता जाना है।

कलकत्ता पहुँचकर त्रिक्रमदास सीधे अलीपुर में बलाका के पास गये। ड्राइंग-रूम में एक सुदर्शन चेहरे के सज्जन पियानो बजा रहे थे और बलाका उसीके ताल-लय पर नाच रही थी। त्रिक्रम को देखकर बलाका ने कहा—"यह क्या सेठ जी! इस तरह अचानक कैसे चले आए? इन्हें शायद नहीं पहचानते हो? यह हैं लोटनकुमार, मेरे दूर के रिश्ते के मौसेरे भाई। नाच के उस्ताद। इनसे मैं कबूतर-नृत्य सीख रही हूँ। जरा देखोगे?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त्रिक्रम ने कहा—"अभी मुझे नाच देखने की फुर्सत नहीं। बलाका, तुमसे मुझे एक जरूरी बात करनी है।"

लोटनकुमार के चले जाने के बाद त्रिक्रमदास ने काँपते हुए दिल से तीन शादी वाली बात सुनाई। बलाका ने गालों पर उँगली टिकाकर कहा—"हाय अम्मा, ऐसी बात! ओ सेठ जी तुम तो एक असल पनडुब्बी हो। नटवर नागर! लेकिन तुम इतना घबराए हुए क्यों हो? तीन बीबियाँ हैं तो क्या हुआ? ठीक है, तुम सोच मत करो, मैं झगड़ालू औरत नहीं हूँ। भली याद आई। देखो सेठ जी, एक नई मोटर-कार न होने से काम नहीं चल रहा है। पुरानी आस्टिन हरदम बिगड़ती है। तुम मुझे बीस हजार का एक चैक देते जाओ! उससे कम में अच्छी गाड़ी नहीं मिलती।"

त्रिक्रमदास ने कहा—"अच्छा उसका इन्तजाम हो जायगा। मैं अभी-अभी जा रहा हूँ। मुझे दिल्ली जाना है।"

दिल्ली में आते ही त्रिक्रम ने अपने वकील के पास जाकर सब हाल बयान किया। उसके बाद उन्हें साथ लेकर वह अपने मकान पर आये और खजान को ड्राइंग-रूम में इन्तजार करने को कहा।

अन्दर की ड्योढ़ी में जाकर त्रिक्रम ने आनन्दीबाई को सोने के कमरे में बुला लिया। आनन्दी ने कहा—"तीन दिन से तुम्हारा कोई पता नहीं। चेहरा उतर गया है। मामला क्या है गवर्नमेंट के साथ फिर क्या कोई उलझन पैदा हुई है?"

त्रिक्रमदास ने सिर झुकाये सारी गुप्त कथा कह डाली। आनन्दी कुछ देर तक तो स्तब्ध रही। उसके बाद कमर में हाथ टिकाती हुई आँखें तरेरकर बोली—"क्या कहा तुमने?"

सेठ जी ने डरते हुए कहा—"आनन्दी ठंडी हो जाओ, सब ठीक हो जायगा।"

बंगला साहित्य कितना ही समृद्ध और उच्च स्तर का क्यों न हो, हिन्दी भाषा में गाली-गलौज का जो शब्द भंडार है उसकी तुलना वह नहीं कर सकता। आनन्दीबाई हाथ-पैर फेंकती हुई उन्हें कोसने लगी। होज-पाइप से निकली हुई जल-धारा के समान आनन्दीबाई में से जो फटकार निकलने लगी, वह जितनी तीखी थी उतनी ही मर्मस्पर्शी भी। उसके सभी वाक्य

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शरीफों के सुनने लायक नहीं थे और भद्र नारी के मुँह से निकलने लायक तो वे थे ही नहीं। लेकिन आनन्दीबाई उस समय शुभाशुभ का ज्ञान खो चुकी थी। लगातार उसके बढ़ते हुए जोश को देखकर सेठ जी घबरा गए और हाथ जोड़कर बोले—"आनन्दी, एक बार तुम मुझे माफ करो ! सब ठीक हो जायगा।"

आनन्दी गरज उठी—"चुप रह सड़क के कुत्ते ! ड्रेन के छछून्दर ! यह कहते हुए शेरनी की तरह झपटकर उसने सेठजी के दोनों गाल काट लिये। उसके बाद पीछे हटकर अपने बाएँ हाथ से दस जोड़ी सोने की मोटी-मोटी चूड़ियाँ निकालकर पति के सिर का निशाना साधकर झन-झन करती हुई फेंकने लगी। सेठ जी के माथे से खून फूट पड़ा। वह चिल्लाकर जमीन चूमने लगे। उससे भी ज्यादा जोर से चिल्लाकर आनन्दीबाई अपने पूजा के कमरे में चली गई और संगमर्मर के फर्श पर लेटकर फफक-फफक कर रोने लगी। घर में बड़ा शोर-गुल होने लगा। जो रिश्तेदारिनें थीं, वे आनन्दी को दिलासा देने लगीं। सेठ जी के लिए खजानचन्द उसी वक्त डॉक्टर बुला लाए।

सात दिन के बाद सेठ जी काफी स्वस्थ हो गए हैं और दुमंजिले के बरामदे में आराम-कुर्सी पर बैठे फरसी गड़गुड़ा रहे हैं। उनके सिर पर अब भी पट्टी बंधी है। जगह-जगह पर स्टिकिंग प्लास्टर भी लगा है। वकील खजानचन्द ने आकर कहा—"कहिए सेठ जी, तबीयत कैसी है ?"

सेठ जी ने कहा—"काफी अच्छी ! सुनो खजान भाई, राजहंसी और बलाका के साथ मैं कोई रिश्ता नहीं रखना चाहता। तुम तुरन्त बम्बई और कलकत्ता जाकर झटपट फैसला कर डालो ! जितने रुपये लगेंगे मैं भर दूँगा। वह बम्बई वाली और कलकत्ता वाली सिर्फ मेरा रुपया चाहती हैं। खुशबू मिल रही है तुम्हें ? आनन्दी खुद मेरे लिए अरहर की दाल की खिचड़ी बना रही है। और यह देखो उसने मुझे गुलूबन्द बुनकर दिया है।"

खजानचन्द ने कहा—"बड़ी खुशी की बात है सेठ जी ! अब आप किसी तरह की चिन्ता न कीजिए, मैं सब ठीक कर लूँगा। आप आनन्दी-बाई को लेकर मथुरा, वृन्दावन और द्वारिका घुमा लाइए ! इसीसे उनका मिजाज ठीक हो जायगा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पत्नी की सेवा से त्रिक्रमदास बहुत शीघ्र स्वस्थ हो गए। चतुर वकील खजानचन्द की कोशिश से राजहंसी और बलाका के साथ फैसला हो गया। जुल्फिक़ार खाँ भी पान खाने के लिए मोटी रकम पा गए हैं। कलकत्ता के सबसे बड़े ज्योतिष-सम्राट् ज्योतिषचन्द्र ज्योतिषार्णव से हजार रुपये का एक वशीकरण जन्तर लाकर आनन्दीबाई ने पति के गले में डाल दिया है। इस पुरश्चरण जन्तर का फल भी विचित्र है। सेठ जी आजकल अपने विश्वासी मित्रों से कहते हैं कि सिवाय आनन्दी के सारी औरतें चुड़ैल हैं।[1]

---

[1] एक अंग्रेजी कहानी के प्लाट का अनुसरण करते हुए। लेखक का नाम याद नहीं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: २ :

चंगायिनी-सुधा

'कैलकटा टी कैबिन' के नाम से आप लोग बेशक वाकिफ होंगे। नई दिल्ली में गोलमार्केट के पीछे वाली गली में कालीबाबू की वही मशहूर चाय की दुकान।

विजय-दशमी (दशहरा), शाम के सात बजे। पेंशनभोगी वयोवृद्ध रामतारण मुकर्जी, स्कूल-मास्टर कपिल गप्त, बैंक के बाबू वीरेश्वर सिंह, अखबार के रिपोर्टर अतुल हालदर आदि नियमित अड्डेबाज सभी इकट्ठे हैं। विजय दशमी की रीत्यनुसार प्रणाम-आशीर्वाद तथा गले मिल चुकने के बाद अब नाश्ता-पानी हो रहा था। कालीबाबू ने आज खास इन्तजाम किया था—चाय के साथ भुना चिउड़ा, फुलौड़ी, सुहाल और गुझिया।

अतुल हालदर ने कहा, "आज का इन्तजाम तो कालीबाबू ने उम्दा ही किया है, पर इसमें एक कमी रह गई, जरा भंग का शर्बत भी होता तो विजय दशमी के रंग में चार चाँद लग जाते।"

रामतारण मुकर्जी ने कहा, "तुम लोगों की भी क्या वाहियात फरमाइश होती है। चाय की दुकान पर भांग के शर्बत का कौन-सा तुक ? भाँग एक पवित्र वस्तु है, जिसका शास्त्रीय नाम है सिद्धि या विजया। कालीबाबू की यह दुकान तो भानुमती का कुनबा है—यहाँ कैसे भाँग चल सकती है ? देवी दुर्गा के विसर्जन के उपरान्त मंगल-कलश और वयोवृद्धों को प्रणाम कर के पवित्र अन्तःकरण से भाँग पीनी चाहिए। मैं तो घर पर ही जरा-सा चखकर तब यहाँ आया हूँ—नेम जो पूरा करना था।"

एक साधू बाबा ने टी-कैबिन में प्रवेश किया। छः फुट लम्बा, मजबूत डील-डौल, कन्धे तक लटकते बाल, मोटी मूँछें, फावड़ा-मार खिचड़ी दाढ़ी, माथे पर भभूत का त्रिपुंड, गले में रुद्राक्ष की माला, सिर पर कानों तक ढाँपती हुई गेरुआ रंग की टोपी, बदन पर गेरुआ चोगा, हाथ में अलमिनियम का बना बड़ा-सा एक कमंडलु या मूठ वाला गडुवा। आगन्तुक कमरे में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आते ही ऊँची आवाज में बोले, "नमस्ते महाशयगण, सब कुशल से तो हैं ?"

कपिल गुप्त बोल पड़े, "अरे बक्शी जी ह, आइए आइए ![1] दो साल से मुलाकात ही न हुई, इतने दिन कहाँ रहे आप ? देख रहा हूँ कि भेख भी बदल डाला है आपने, कब से यह बाना अपना लिया ? वाह ! दाढ़ी पर तो आपने पर्मनेंट शेव भी करा डाला है ! क्या खर्च पड़ा ?"

रामतारण मुकर्जी बोले, "सुनोजी जटाधर बक्शी, दो-दो दफा ठग चुके हो, अब तुम्हारा कोई बचाव नहीं, पुलिस के सुपुर्द कर दूँगा।"

अतुल हालदर बोले, "हँ हँ भैया !"

कपिल गुप्त बोले, "अरे इस भलेमानुस को जरा दम तो लेने दीजिए, बैठने दीजिए और सब हाल-चाल सुन लीजिए, उसके बाद पुलिस बुलाइ-एगा ! अजी कालीबाबू, बक्शीजी को चाय और नाश्ता दो, मेरे अकाउंट में।"

जैसा कि रविवर्मा के चित्र में है—मेनका की गोद में शिशु शकुन्तला को देखकर विश्वामित्र मुँह फेरकर हाथ हिला रहे हैं—उसी मुद्रा में जटाधर बोले, "न, न मुझे अब और न लज्जित कीजिए, आप लोगों का काफी खा चुका हूँ, मुझे अब उसी उधार को चुकाना है।"

रामतारण बोले, "तुम्हारी अचला का क्या हाल-चाल है—अरे वही जिससे तुमने विधवा-विवाह किया था ?"

जटाधर के मुँह से कोई स्वर निकला और वे एक गहरी उसाँस लेते हुए बोले, "उसका जिक्र न कीजिए मुकर्जी बाबू, दिल दुखता है। अचला अपने पहले पति बलहरि के साथ ही चली गई। बलहरि उसे जबर्दस्ती ले गया और मेरे पचास रुपये भी छीन ले गया। अचला के लिए यहाँ से कुछ चाँप ले गया था वह भी उस राक्षस ने छीनकर खा लिया।"

कपिल गुप्त बोले, "जाने भी दीजिए, 'गतं न शोचन्ति पंडिताः।' अब

---

१. जटाधर बक्शी की पूर्व कथाएँ 'कृष्णकलि' और 'नीलतारा' पुस्तकों में हैं।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने संन्यास का इतिहास सुनाइए ! अरे आप तकल्लुफ क्यों कर रहे हैं, चाय और नाश्ता करते-करते ही सुनाइए, हम लोग सभी सुनने के लिए आतुर बैठे हैं। अजी काली बाबू, बक्शी जी को एक और प्याली चाय और नमकीन आदि का एक और प्लेट दो, दो बर्मी चुरट भी दो और सभी मेरे खर्चे में।"

चाय के प्याले में चुस्की लेते हुए जटाधर बोले, "अगर सुनने पर ही तुले हुए हैं तो सुनाता हूँ। सुनिए ! अचला के चले जाने के बाद मन में एक बड़े वैराग्य का उदय हुआ, घर-गिरस्ती से जी उचट गया। 'धत्तेरी' कहकर एक तीर्थ-यात्री-दल के साथ निकल पड़ा। घूमते-घूमते मानस-सरोवर कैलाश पर्वत जा पहुँचा। वहाँ अचानक कन्हैया बाबा के साथ भेंट हो गई। उनका पूर्व नाम था कानाइ बटब्याल, बहुत बड़े सायंटिस्ट थे और एक जमाने में कई तरह के कारोबार भी कर चुके थे। आखिरी उम्र में विरक्त होकर हिमालय की एक गुफा में पाँच साल तपस्या करके सिद्धि प्राप्त कर चुके थे। मेरा उनसे पहले का मामूली परिचय था, पर देखते ही उन्होंने पहचान लिया। उनके पैर पकड़कर अपना सारा दुखड़ा उनके सामने रो डाला। कान्ह ठाकुर बोले, 'कुछ सोच मत करो जटाधर, निष्काम होकर कर्मयोग का अवलम्बन करो, मेरा शिष्यत्व स्वीकार कर लो ! मैंने संकल्प किया है कि इस मानस-सरोवर के किनारे एक बड़े से मठ की स्थापना करूँ; जिसमें यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था हो। तिब्बत-सरकार की परमिशन मिल गई है, दलाई लामा, तासी लामा, पंचेन लामा, सभी ने शुभेच्छाएँ भेजी हैं। मैं चन्दा बटोरने के लिए देशाटन में निकलूँगा, तुम साथ रहकर मुझे सहायता पहुँचाओगे।' कान्ह महाराज की बातों पर मैं फौरन राजी हो गया। उसके बाद साल भर तक उनके साथ भ्रमण करता रहा, हिमालय से कन्या कुमारी तक। मठ के लिए गरीब-अमीर सभी ने चन्दा दिया, जिसकी जैसी सामर्थ्य थी, एक आना से लेकर एक लाख रुपये तक। हाँ तो रुपये भी कुछ कम वसूल नहीं हुए, करीब पौने चार लाख, सभी इंडो-टिबेटन यक्ष बैंक में जमा हैं। कान्ह महाराज हाल में दिल्ली ही में ठहरे हुए हैं, दरियागंज में सेठ गजानन जी की कोठी पर। उनसे इजाजत लेकर आप लोगों से एक बार मिलने चला आया।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रामतारण बोले, "पहले ही से बताये देता हूँ, हम लोगों में से कोई भी एक पैसा चन्दा नहीं देगा। तुम पर हमारा कोई विश्वास नहीं है।"

जटाधर बक्शी ने प्रसन्न वदन होकर कहा, "मुकर्जी बाबू की बातें कुशल ज्ञानयोगी-जैसी ही हैं। मुझ पर भला आप विश्वास भी क्यों करने लगे, मेरा उज्ज्वल पक्ष आपने देखा ही कहाँ है? भाग्य के फेर से मुसीबत में पड़कर बिलकुल मोहताज बन गया और आप लोगों के सामने कसूरवार हूँ—क्या मैं इसे भी भूल सकता हूँ? चन्दा सत्कार्य के लिए है, खास तौर से मठ बनाने का चन्दा श्रद्धा के साथ ही दिया जाना चाहिए। 'श्रद्धया देयम्'—यह है शास्त्र-वाक्य। श्रद्धा न होने पर भला आप दीजिएगा ही क्यों, और मैं लूँगा भी क्यों?"

अतुल हालदर बोले, "थैंक्यू जटाइ महाराज, आपके वाक्यों से ढाढ़स बँधा। मठ-स्थापना की बात सुनकर आतंक छा गया था कि अभी शायद आप चन्दा माँग बैठेंगे और न देने पर कन्हैया बाबा के शाप का भय दिखायँगे। बहरहाल श्रद्धा ही जब नहीं है तो चन्दा भी ठेंगा। आपके उस विशाल गड्वे में क्या है?"

जटाधर बोले, "इसे आप गड्वा न कहिए। इसका नाम है रुद्र-कमंडलु, कान्ह महाराज की आज्ञा पर सेठ गजानन जी ने बनवा दिया है। अलुमिनियम का कारखाना है न उनका।"

रामतारण ने सवाल किया, "है क्या? कुछ कलबला रहा है उसमें।"

"जी, उसम चंगायिनी-सुधा है, आप ही लोगों के लिए लेता आया हूँ।"

रामतारण बोले, "मृतसंजीवनी सुधा ही जानता हूँ, चंगायिनी क्या बला है?"

"यह एक अनोखी वस्तु है मुकर्जी बाबू, कान्ह महाराज का महान् आविष्कार। पीने पर मन चंगा हो उठता है सो इसका नाम चंगायिनी—सुधा है।"

"शराब है क्या?"

"राम कहिए। कान्ह महाराज मादक द्रव्यों का उपयोग कभी नहीं करते, चाय तक नहीं पीते। चंगायिनी में क्या है यह सुनना चाहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं ? आप लोगों को बतलाने में कोई एतराज नहीं है पर कृपया इसका फारमूला गुप्त रखिएगा !"

कपिल गुप्त बोले, "घबराइए नहीं बक्शी जी, बस हम इतने लोग हैं इनके अलावा किसी और को कुछ भी पता न चलेगा।"

"तो सुनिए ! इसमें बीस वैद्यकी जडी-बूटियाँ हैं, बीस किस्म के डाक्टरी अर्क हैं, बीस तरह के होमिओ ग्लोब्यूल हैं, बीस किस्म की हकीमी दवाइयाँ हैं, इसके अलावा तांत्रिक स्वर्णभस्म, हीरकभस्म, वायुभस्म, व्योमभस्म, दुनिया-भर के विटामिन और पाव भर इलेक्ट्रिसिटी। और हिमालय जात सोमलता है जिसे आप लोग भाँग कहते हैं और कश्मीरी मकरन्द। इन सबका शीश के यंत्र में एक साथ आसव निकाला गया है। कान्ह महाराज का कहना है कि यह चंगायिनी-सुधा ही प्राचीन ऋषियों का सोमरस है, उन्होंने केवल फारमूले को आज के युग के अनुकूल परिवर्तित कर दिया है।"

अतुल हालदर ने अपनी जाँघ पर थप्पड़ जमाते हुए कहा, "अरे जनाब ऐसीही चीज की तो आज जरूरत है। थोड़ी देर पहले ही मैंने कहा था कि अगर जरा भंग का शर्बत होता तो हमारी यह विजया सम्मिलनी को सम्पूर्णता का अवसर प्राप्त हो जाता।"

रामतारण बोले, "अरे अतुल इतनी जल्दबाजी न करो, जटाधर की चंगायिनी-सुधा नशीली चीज नहीं है यह तुम्हें कैसे मालूम हो गया ?"

जटाधर बक्शी ने अपनी विशाल जीभ काटते हुए कहा, "आप भी कैसी बातें करते हैं मुकर्जी बाबू ! क्या आप लोगों के लिए मैं कोई नशीली चीज ला सकता हूँ—मुझे क्या धर्म-अधर्म का ज्ञान नहीं। इसमें भाँग बेशक है, पर वह कोई मामूली भाँग नहीं, वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा उसे शोधित करके उसकी मादकता को एकदम न्यूट्रालाइज़ कर दिया गया है। आयुर्वेद-शास्त्र में जिसे हृद्य वृष्य बल्य मेध्य कहते हैं, चंगायिनी वही है। सेवन करने पर शरीर चंगा होगा, इन्द्रियाँ और बद्धि प्रखर होगी, चित्त में पुलक जागृत होगी, सब ग्लानि और अशान्ति दूर भाग जायगी। कपिल बाबू जरा ट्राइ कीजिए न ! चाय की प्याली पहले जरा धो लीजिए, यह वस्तु बड़े ही पवित्र ढंग से पीनी चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कपिल गुप्त ने अपनी चाय की प्याली धो डाली और उसे आगे बढ़ाते हुए कहा, 'बहुत जरा-सा दीजिएगा ! यह चवन्नी रख लीजिए, अपने कन्हैया मठ के लिए यथासाध्य सहायता ।"

चवन्नी लेने के बाद जटाधर ने अपने दससेरी रुद्र-कमंडलु का ढक्कन खोला । भीतर से एक छोटा-सा कलछुल निकालकर उसीकी एक मात्रा कपिल गुप्त के प्याले में उँड़ेलते हुए बोले, 'श्रद्धया पेयम्' ।

अतुल हालदर बोले, "मुझे भी जरा देना जी जटाधर महाराज ! यह लो दो दुअन्नी !"

वीरेश्वरसिंह ने भी चवन्नी दक्षिणा देकर एक कलछुल ले ली । चख-कर बोले, "क्या चोखा बनाया है जटाधर जी ने, कुछ-कुछ कोकाकोला-जसा है ।"

अतुल हालदर बोले, "वाह रे मूरख, किसके साथ किसकी तुलना कर दी । उस रोज हंगेरियन एम्बेसी की पार्टी में मिल्क पंच पिया था, उससे पहले फ्रेंच कन्सल के डिनर में शैम्पेन भी पी, लेकिन इस चंगायिनी-सुधा के सामने वह सब कुछ नहीं । वाह, क्या खूब चीज बना डाली है जटाइ बाबा ने ! मीठा, खट्टा, नमकीन, झाल, जरा-सा तीता, जरा-सा कसैला, सभी रस हैं, पर सबमें एक अन्दाज है । चरपरा भी बहुत है, शायद इलैक्ट्रि-सिटी के लिए, पेट में पहुँचकर चिन-चिन शाक मार रहा है । एक कलछुल और दो जी ।"

रामतारण मुकर्जी बोले, "मुझे बाई की बीमारी है, डायबिटीज का मर्ज भी थोड़ा बहुत है । क्यों जी जटाधर, चंगायिनी पीने से कहीं तकलीफ बढ़ तो नहीं जायगी ?"

जटाधर बोले, "बढ़ेगी क्या जनाब, एकदम जड़-मूल से साफ हो जायगी, शरीर की सब व्याधि, मन की सब ग्लानि, दिल की सारी जलन, पता नहीं चलेगा कैसे सब हवा हो गए । मुँह खोलिए, एक कलछुल डाले देता हूँ, भक्ति से सेवन कीजिए । 'श्रद्धया पेयं, श्रद्धया देयम्' ।

"न, न, तुम तो बहुत ही पीछे पड़ गए हो, कुछ वसूल किये बिना छोड़ोगे ही नहीं । लो, पूरा पूरा एक रुपया ही लो !"

वृद्ध रामतारण मुकर्जी के सद्-दृष्टांत से उत्साहित होकर सभी ने चंगा-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यिनी का सेवन किया। तीन कलछी पीने के बाद वीरेश्वर सिह रुआँसा होकर बोल पड़ा, "जटाधरजी, मेरे मन में कोई सुख नहीं, बड़ी तकलीफ, बड़ी बेइज्जती में पड़ा हूँ। बीबी हरदम बोदा, बुद्धू या गोबरगनेस नाम से पुकारती है।"

जटाधर बोले, "वीरेश्वर बाबू जरा-सा चंगायिनी और पी लीजिए, सब अफसोस रफूचक्कर हो जायगा। आप तो वीरपुंगव पुरुषसिंह हैं, किसकी मजाल, जो आपकी बेइज्जती करे। बुद्धूराम कहती है ! देखिएगा आज से और न कहेगी, सभी लोग आपसे डरेंगे।"

रामतारण बोले, "अजी जटायु पंछी, तुम्हारी चंगायिनी भी क्या उम्दा चीज है। यह लो दो रुपये, जरा ज्यादा तादाद में देना। घर वाली नाहक बका करती है, यह बेअक्किल बूढ़ा सठिया गया है। यह औरत मुझे भला-मानुस पाकर मेरी परवाह नहीं करती, अमीर की बेटी होने की वजह से यह सारा गरूर है। अरे बाप के कितने रुपये तू मेरे घर लाई है ? आज घर लौटकर देख लूंगा, लग रहा है कि शरीर में तेज आ गया।"

जटाधर बोले, "इस चंगायिनी में सौरतेज, रुद्रतेज, ब्रह्मतेज सब-कुछ है मुकर्जी बाबू ! आप निष्ठावान ब्राह्मण हैं, ऋषियों के वंशधर, आपके पूर्वपुरुष सोमयज्ञ करते थे—घड़े-घड़े सोमरस पीते थे। आपको किस तेज की चिन्ता है ! लीजिए चाय का प्याला भर दिया, झट गले के नीचे उतार दीजिए। पाँच रुपये दक्षिणा—'श्रद्धया देयम्, श्रद्धया पेयम्।' "

काली बाबू के टी-कैबिन में जितने लोग मौजूद थे सभी ने थोड़ी-बहुत चंगायिनी-सुधा पी। पर उस वस्तु का प्रभाव सभी पर समान न हुआ। कपिल गुप्त गंभीर होकर बड़बड़ाते हुए 'मैकबेथ' की आवृत्ति करने लगे। वीरेश्वर सिंह और दो जने नन्हे बच्चों की भांति फफक-फफक कर रोने लगे। दो-तीन जने फर्श पर लेट गए और सोने लगे। अतुल हालदर खड़े होकर हाथ हिलाते हुए नाटकीय स्वर में बोलने लगे, 'शाहजादी सम्राट्नन्दिनी, किसे दिखाती हो तुम मृत्यु का भय ?' रामतारण मुकर्जी बेंच पर उकड़ूं बैठे चुटकी बजा-बजा कर रामप्रसादी कीर्त्तन गाने लगे—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'काली, तेरा खड्ग ले लूं
तेरी लपलपाती जीभ काटकर माँ
भक्ति से काट कर माँ
बाबा शिव के चरणों पर चढ़ाऊँ'

कालीबाबू अपने मेज के पीछे-पीछे बैठे-बैठे सब-कुछ निरख रहे थे। अब आगे बढ़कर जटाधर से पूछने लगे, "क्यों जटाधर बाबू, आज कितने रुपये मार दिए ?"

जटाधर बोले, "चन्दे के बारे में कह रहे हैं ? बहुत कम, ज्यादा-से-ज्यादा पचास रुपये। आपके मुवक्किल कोई भी रुपये वाले तो हैं नहीं, सभी रोज कुआँ खोदते रोज पानी पीते हैं।"

"मेरी दुकान पर कारोबार करने पर मुझे कमीशन देना पड़ता है यह तो समझते ही होंगे ?"

"खूब समझता हूँ। यह लीजिए पाँच रुपये, टेन पर्सेंट से कुछ ज्यादा ही बैठा।"

"तुम्हारे उस गड़ुवे में कुछ बचा भी है ?"

"हाँ, है तो, दो प्याला और होगा। पियेंगे ?"

"पर दाम नहीं दूंगा।"

"अरे आपसे दाम की क्या बात ? यह लीजिए, यह लीजिए, पूरा ही पी लीजिए !"

कालीबाबू ने दो प्याला भरकर चंगायिनी-सुधा पी और जरा देर बाद ही उनकी आँखें भारी हो आईं।

जटाधर बोले, "मेज पर लेटकर जरा आराम कर लीजिए कालीबाबू ! सोच न कीजिए, दस मिनट में ही आप लोग सब भले-चंगे हो जायँगे। हाँ भली याद आई—मेरे पास रुपये कुछ कम पड़ गए हैं—कुछ उधार चाहिए, श्रृंगेरी मठ जाने का राह-खर्च चाहिए, पच्चीस-एक रुपये से ही काम बन जायगा। आपके गल्ले से ले लेता हूँ। कोई एतराज तो नहीं है ? एक हैंडनोट लिख दूं ?—सो भी नहीं ? थैंक्यू कालीबाबू, आप बड़े ही सज्जन हैं, मित्र को सहायता करने में क्यों एतराज करेंगे। रुपया मेरे नाम से अपने

21211

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खाते में डेबिट कर दीजिएगा, फिर जिस रोज आऊँगा सूद-असल सब चुका दूँगा।"

शिवनेत्र बने कालीबाबू ने लड़खड़ाती जबान से कहा,"फिर कब दर्शन मिलेगा ?"

"सब-कुछ महाराज जी की मर्जी पर है कालीबाबू। कन्हैया बाबा जमी बुला लेंगे आ जाऊँगा। अच्छा अब इजाजत दीजिए, दरवाजा भेड़ देता हूँ। जरा चौकन्ना रहिएगा, चोरों की बड़ी .....। नमस्कार!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ३ :

बटेश्वर की देन

बटेश्वर सिकदार एक प्रख्यात ग्रन्थकार हैं और सरस्वती के एक-निष्ठ साधक, यानी पेशेवर लेखक हैं। जिनके पास लिखने के अलावा और कोई पेशा न हो उन्हें अक्सर रुपये-पैसे की तंगी रहती है, लेकिन बटेश्वर धनी है। इस अन्तर्विरोध का कारण यह है कि वे पहले दर्जे के साहित्यिक हैं और बड़े-बड़े उपन्यास लिखते हैं। दूसरे या तीसरे दर्जे के लेखकों की तरह कहानी, लेख, कविता, लघु निबन्ध या यात्रा-डायरी लिखकर वे अपनी प्रतिभा की फिजूलखर्ची नहीं करते। उनका कोई भी उपन्यास सात सौ पन्ने से कम का नहीं होता और प्रकाशित होते ही बंगला के भूखे पाठक-पाठिकाएँ उसे झटपट पढ़ डालते हैं और उनकी अगली रचना के लिए व्यग्र होकर प्रतीक्षा करते हैं। हाल ही में उनकी पैंसठवीं वर्षगाँठ बड़ी धूमधाम से मनाई गई है।

सवेरे बटेश्वर अपने साधना-कक्ष में बैठकर लिख रहे थे और बीच-बीच में एक बड़े टी-पाट से चाय उँडेलकर पी रहे थे, उसी समय एक अनजान नौजवान कमरे में आया और उसने झुककर नमस्कार करते हुए कहा, "मेरा नाम प्रियवत राय है, क्या आप मुझे पाँच मिनट का समय दे सकते हैं ?"

आगन्तुक की उम्र करीब तीस के होगी, सुन्दर चेहरा, पोशाक में गरीबी के कोई लक्षण नहीं और न तड़क-भड़क। बटेश्वर ने एक कुर्सी दिखाते हुए कहा, "बैठो ! नई पत्रिका निकाल रहे होंगे और उसके लिए मेरी रचना चाहते हो—है न ? पहले ही बताये दे रहा हूँ कि मैं कल्पतरु नहीं हूँ, जो भी आकर माँगे उसीको रचना दे दूँ। अगर एक आशीर्वाद का सन्देश चाहते हो तो दे सकता हूँ—दस रुपये लगेंगे।"

प्रियव्रत ने कहा, "जी, रचना के लिए आपको तंग करने नहीं आया हूँ। 'प्रगामिनी' पत्रिका में 'कौन रहे कौन जाय' नाम से आपकी जो कहानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकल रही है उसे खत्म होने में और कितने दिन लगेंगे ? क्या आप कृपया यह बता सकते हैं ?"

"अभी छः-सात महीने और लगेंगे । क्यों क्या मामला है ? कहानी कैसी लग रही है ?"

"बहुत खूब, सभी चरित्र मानो बोल रहे हों । मुझे तो बहुत कौतूहल हो रहा है, इसीलिए जानने आया हूँ कि कहानी की नायिका अलका, जो इस समय टी. बी. सैनेटोरियम में है उसे आराम तो हो जायगा न ?"

प्रियव्रत का आग्रह देखकर बटेश्वर खुश हो गए । जरा हँसकर उन्होंने कहा, "वह तुम्हें क्यों बताऊँ ? पहले से ही प्लाट खोल देने से रस भंग होता है ।"

दोनों हाथ जोड़कर प्रियव्रत ने कहा, "सर ! मेहरबानी करके अलका को बचा दीजिएगा !"

"यह तो तुम्हारी अजीब जिद्द है । कहानी की नायिका के लिए इतनी चिन्ता क्यों करते हो ? लोग सुखान्त और दुखान्त दोनों किस्म की कहानियाँ पसन्द करते हैं, तुम्हारी फरमाइश के मुताबिक मैं नहीं लिख सकता हूँ । सुखान्त चाहते हो तो मेरे 'नोंच खसोट', 'तीन खिंचाव' ये सब उपन्यास पढ़ सकते हो !"

प्रियव्रत ने करुण स्वर से कहा, "जरा दया कीजिए सर !"

"तुम बिल्कुल पागल हो ! अब जाओ, मुझे बहुत काम करना है । अलका के लिए दिमाग खराब न करके अपना इलाज कराओ ! तुम्हें निःसन्देह कोई मानसिक रोग है ।"

प्रियव्रत विषादमय चेहरा लेकर सिर नीचा किये हुए धीरे-धीरे कमरे से निकल गया ।

रात साढ़े नौ बजे बटेश्वर खाना खाने जा रहे थे, उसी समय टेलीफोन की घंटी बजी । रिसीवर पकड़कर कहा, "किसे चाहते हैं ? हाँ, मैं ही बटेश्वर हूँ । आप कौन हैं ?"

जवाब आया, "नमस्कार ! मैं डाक्टर संजीव चटर्जी हूँ, आपसे कुछ खास काम है । कल सवेरे अगर आठ बजे आऊँ तो आपको कोई असुविधा तो नहीं होगी ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बटेश्वर ने कहा, "नहीं-नहीं, आप आ सकते हैं। क्या जरूरत है बताइए न ?"

"मिलने पर ही बताऊँगा सर ! अच्छा नमस्कार !"

डॉक्टर संजीव चटर्जी का नाम बटेश्वर ने सुना था। दो-एक साल हुए वह विलायत से लौटे हैं, उम्र ज्यादा नहीं है, लेकिन सुनते हैं काफी अच्छे सर्जन (शल्य-शास्त्री) हैं और अपने पेशे में काफी सफल भी हुए हैं।

अगले दिन सवेरे डॉक्टर संजीव पहुँचे। "गुड मार्निंग सर ! आपका कीमती वक्त मैं बरबाद नहीं करूँगा। दस मिनट में ही अपना बयान खत्म कर दूंगा। ओफ, कितनी आश्चर्यजनक शक्ति है आपमें ! 'प्रगामिनी' पत्रिका में 'कौन रहे कौन जाय' नाम से जो कहानी आप लिख रहे हैं उसकी कोई तुलना नहीं। देश-भर के लोग मुग्ध हो गए हैं। शरत् चटर्जी, ताराशंकर, वनफूल, प्रबोध सान्याल सभी को आपने मात कर दिया है।"

बटेश्वर ने हँसते हुए कहा, "सुनते हैं कि आपकी प्रैक्टिस काफी जमी हुई है। मेरी रचना पढ़ने का वक्त कहाँ से निकालते हैं ?"

"वक्त निकालना ही पड़ता है, न पढ़ने से काम नहीं चलता। हर कहीं इस कहानी के बारे में सुनता रहता हूँ, यहाँ तक कि अपने मैडिकल क्लब में भी। उस दिन एक बूढ़े सज्जन का हर्निया का आपरेशन कर रहा था कि वह ऐनेस्थेसिया के नशे में यकायक बोल पड़े—'क्या खूब लड़की है अलका, जीती रहो अलका।' मेरे भाई, बिरादरी, रिश्तेदार, दोस्त सभी आपकी अलका के लिए पागल हो गए हैं। आप धन्य हैं। सभी कहते हैं कि आज के साहित्य-सम्राट् बटेश्वर सिकदार हैं। उनके सामने दामोदर नश्कर गल्प-सरस्वती खड़े ही नहीं हो सकते। अब मैं अपना निवेदन आपके सामने रखता हूँ। अपने मित्र वर्ग की ओर से मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि अलका को झटपट आराम करा दीजिए, सभी उसके लिए चिन्तित हैं। सेनेटोरियम से उसे स्वस्थ करके लौटा लाइए ! एकदम 'थारो क्योर' होना चाहिए—समझे ? उसके पति हेमन्त की हैसियत भी तो अच्छी ही है, अलका को लेकर वह शिमला या उटकमंड चला जाय, वहाँ पर तीन महीने काटकर उसे काफी मोटी-तगड़ी बनाकर घर लौटा लाय।"

बटेश्वर ने हिचकिचाते हुए कहा, "ऐसा होना तो मुश्किल है, डॉक्टर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चटर्जी ! मेरी यह रचना ट्रैजेडी है, अलका जी नहीं सकती ।"

"क्या कहते हैं आप साहब, वह जरूर जी सकती है । आधुनिक इलाज में टी. बी. के मरीज सौ में से नब्बे जी जाते हैं । अलका का अच्छा ट्रीटमेंट कराइए, पी-ए-एस, ऐसोनाजाइड, स्ट्रेप्टोमाइसीन, यह सब दवाएँ दीजिए ! अगर आप कहें तो अपने दोस्त डॉक्टर बड़ाल के साथ आपके कन्सल्टेशन का इन्तजाम करूँ ।"

बटेश्वर सकपका गये । कल एक पागल आया था और आज उससे भी एक बड़े पागल से पाला पड़ा है । लेकिन यह संजीव डॉक्टर गुणग्राही आदमी है, इसे धमकाकर भगाया नहीं जा सकता । उसकी प्रशंसा और निरर्थक उपदेश से छुटकारा पाने के लिए बटेश्वर ने सोचा कि बेहतर यही होगा कि उसे कहानी की लम्बाई बता दी जाय । कहा, "आप भूलते हैं डॉक्टर चटर्जी, अलका सचमुच जिन्दा नारी नहीं है, वह मेरे उपन्यास की नायिका मात्र है । उसे जिला देने से मेरा प्लाट बरबाद हो जायगा । अलका मरेगी, उसके दो साल के बाद उसके पति हेमन्त के साथ शर्वरी की शादी होगी । वह लड़की, जो हेमन्त के लिए पाँच साल से इन्तजार कर रही है ।"

मेज पर घूँसा मारकर संजीव डॉक्टर ने कहा, "एबसर्ड, ऐसा हो ही नहीं सकता । अलका का पति उसके हक का धन है, दूसरी लड़की उसे क्यों छीन लेगी ?"

"शर्वरी के बारे में भी जरा सोचिए डॉक्टर चटर्जी ! रूप, गुण, विद्या और स्वास्थ्य में वह अलका से बढ़कर है । इतने साल प्रतीक्षा के बाद हेमन्त को न पाने पर उसका दिल टूक-टूक हो जायगा ।"

"टूक-टूक कैसे हो जायगा । दिल इतनी जल्दी टूक-टूक नहीं हो सकता, काफी सख्त टिशुओं से बना होता है । हार्ट खराब हो तो इलाज कराइए, डिजिटैलिस, ऐमिनोफैलिन, खेलीन ये सब दीजिएगा । सीने पर बोरिक कम्प्रेस, अलसी की पुल्टिस और ऐसबैग का प्रयोग कीजिए ! शर्वरी की शादी न कीजिए, बल्कि उसे राजकुमारी अमृतकौर के पास भेज दीजिए, वह उसे नर्सिंग सिखाने का बन्दोबस्त करेंगी ।"

"आप मेरी रचना पढ़कर जोश में आ गए हैं, काल्पनिक पात्र-पात्राओं को जीवित समझ रहे हैं, यह मेरे लिए गौरव की बात है । लेकिन जरा शांत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होकर लेखक के बारे में भी ग़ौर कीजिए ! सुखान्त, दुःखान्त दोनों किस्म की कहानियाँ हमें ही लिखनी पड़ती हैं। भगवान् सुख देते हैं और दुःख भी, मनुष्य की रक्षा भी करते हैं और मारते भी हैं। उन्होंने मिलन-विरह से संसार का सृजन किया है। हम लेखक भी भगवान् की नकल करते हैं। लोग खुद तो दुःख पाना नहीं चाहते, लेकिन ट्रेजेडी का रस खूब लेते हैं। इसीलिए महाकवियों ने सीता, अजमहिषी इन्दुमती, ओफेलिया, डेसडिमोना इत्यादि का सृजन किया है।"

"क्या कह रहे हैं आप जनाब ? भगवान् की नकल करेंगे, इतनी जुर्रत ! भगवान् तो लाचार हैं, हर एक पर दया करने से उनका काम नहीं चलता। क्या आप यह बात समझते हैं ? चूहे पर अगर वह दया करें तो बिल्ली भूखी मर जायगी। मछली, मुर्गी, बकरी, भेड़ पर अगर वह दया करें तो आपका, मेरा पेट ही नहीं भरेगा। वह जब आदमी पर दया करते हैं तो माइक्रोब ध्वंस होता है और जब माइक्रोब पर दया करते हैं तब आदमी मरता है। अपने हाथ-पैर बँधे होने की वजह से ही भगवान् ने आदमी बनाया है।"

उन्होंने कहा—"मेरी ओर से तू जितनी कर सके दया करना—याद रखना अहिंसा ही परम धर्म है। कहानी लिख रहे ह इसलिए आप आदमियों का कतल करेंगे यह कैसी बात है ? उस जमाने में कालिदास शेक्सपियर ने क्या लिखा था भूल जाइए ! यह गांधीजी का युग है, दुःखान्त रचना एकदम नहीं चल सकती। जो ट्रेजेडी लिखते हैं और पढ़ना पसन्द करते हैं वे मार्बिड हैं, प्रच्छन्न रूप से निर्दय हैं, छुपे जालिम हैं। मनुष्य के पास दुःख की कमी नहीं है फिर उस पर मनगढ़न्त दुःख की कहानी क्यों लादते हैं ? आनन्द की कहानी लिखिए, मनुष्य को और मत रुलाइए, सिर्फ हँसाइए। आप लोगों को क्या चिन्ता है ? कलम की नोक से सृष्टि, स्थिति, प्रलय सब-कुछ कर सकते हैं। अलका को जिलाना ही होगा, समझे सिकदार साहब ? शार्लक होम्स को कानन डायल ने मार डाला था लेकिन पाठकों की धमकी से उसे फिर से जिलाना पड़ा। आप भी क्यों न उसे जिलायें ?"

ऊबकर बटेश्वर ने कहा, "क्षमा कीजिएगा डॉक्टर चटर्जी, आपके मत के साथ मेरा मत मेल नहीं खाता। हम लेमैन लेखक आप लोगों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डॉक्टरी इलाज में नाक घुसेड़ना नहीं चाहते तो आप ही लेखकों पर हुक्म क्यों चलाते हैं ? अनधिकार चेष्टा किसी तरफ से भी अच्छी नहीं।"

संजीव डॉक्टर उठ खड़े हुए और बोले, "मैं अनधिकार चेष्टा नहीं करता हूँ, डॉक्टर का काम जीवन की रक्षा करना है और आप हत्या करने जा रहे हैं। उसमें मेरा विरोध करना कर्त्तव्य है। अच्छी बात, जो खुशी हो कीजिएगा। आपके परम भक्त दो लाख पाठक और चार लाख पाठिकाएँ बिगड़कर आपको शाप दगी और आपको अपने कुकर्म का फल परलोक में भुगतना पड़ेगा। जरा बचकर सावधानी से रहिएगा जनाब, यहाँ के छोकरे कुछ अच्छे नहीं हैं। अच्छा, चलता हूँ। हड्डी-वड्डी टूट-टाट जाय तो खबर दीजिएगा। नमस्कार !"

डॉक्टर संजीव बटेश्वर का दिमाग खराब करके चले गए। कल सवेरे जो छोकरा आया था—प्रियव्रत राय—वह पागल होने पर भी शांत और स्थिर था। लेकिन यह संजीव डॉक्टर घोर उन्मादी है। सिर्फ उन्मादी ही नहीं लगता, मजाकिया, लोफर और शराबी भी है। ऐसे आदमी की प्रैक्टिस में तरक्की कैसे हुई ? जो कुछ भी हो पागलों की बातों पर बटेश्वर ध्यान नहीं देंगे। अपने तय किये हुए प्लाट को किसी भी हालत में नहीं बदलेंगे। लेकिन संजीव डॉक्टर धमका गया है, जरा होशियारी से रहना पड़ेगा।

तीन दिन के बाद। तिपहर को दुमंजिले के बरामदे पर बैठकर बटेश्वर चुरट पी रहे थे। उनकी गठिया का दर्द जरा बैठ गया था, सीढ़ी से चढ़ने-उतरने में तकलीफ हो रही थी। बच्चों को लेकर बीवी काशीपुर में अपनी छोटी बहन के घर घूमने गई थी। न तो बटेश्वर में कहीं जाने की शक्ति थी, न कोई बातचीत करने के लिए आदमी ही था। उनके प्रेमी मित्रों में कोई अगर ऐसे समय आ जाता तो वह खुश होते।

नौकर ने आकर खबर दी कि एक महिला उनसे मिलने आई है। बटेश्वर ने कहा, "यहाँ ले आओ !"

अच्छे कपड़ों से सजी चौबीस-पच्चीस साल की एक लड़की उनके पास आई। जरा मोटी होने पर भी वह सुन्दरी ही थी। पैर छूकर वह प्रणाम करने के लिए झुकी ही थी कि बटेश्वर ने कहा, "बस, बस, रहने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हो। कहाँ से आ रही हो।"

"आप मुझे पहचान नहीं पा रहे हैं? मैं कदम्बानिला चटर्जी हूँ। फिल्म में क्या आपने मुझे नहीं देखा है? मध्यगगन की तारिका न होने पर भी मुझे सब उदीयमान ही मानते हैं।"

"बहुत खूब! सिनेमा तो ज्यादा देखता नहीं हूँ, उसका हाल-चाल भी ठीक से मालूम नहीं है। आप खड़ी क्यों हैं, उस कुर्सी पर बैठिए!"

"मुझे आप 'आप' न कहिए!"

कदम्बानिला पान चबाते हुए बातें कर रही थी। यह बेअदबी देखकर बटेश्वर जरा नाखुश हो गए थे। लेकिन उसकी नम्र बातचीत से उनका विराग दूर हो गया। सोचा, मेरे सामने सिगरेट नहीं पी रही है यही गनीमत है। प्रश्न किया, "कदम्बानिला तो तुम्हारा छद्मनाम है, तुम्हारा असल नाम क्या है?"

"वह तो नहीं बता सकती। संन्यासी और फिल्म-तारिका का पूर्व-नाम जानना मना है, गुरु की मनाही होती है न! कदम्बानिला कहने में आपको कोई अड़चन हो तो आप मुझे 'कदू' नाम से पुकारिए!"

"ऊँ हूँ, कदू नहीं चलेगा। पूरे नाम से ही बुलाऊँगा। अब बताओ किस काम से यहाँ आई हो?"

पीछे की ओर सिर को टिकाते हुए आँखें अधमुँदी करके गद्गद् स्वर में कदम्बानिला ने कहा, "ओफ्, क्या जबर्दस्त कहानी आप लिख रहे हैं बाबा, वह कहानी जो 'प्रगामिनी' पत्रिका में क्रमशः निकल रही है। सभी धन्य-धन्य कह रहे हैं। कह रहे हैं कि ऐसी श्रेष्ठ रचना अब तक बंगला साहित्य में कभी नहीं लिखी गई है। मैं एक प्रस्ताव लेकर आई हूँ—बिजनेस प्रपोजल। आपकी कहानी से बड़ी सुन्दर फिल्म बन सकती है। लाला नीबू-चाँद नाजार दस लाख रुपये तक खर्च करने के लिए तैयार हैं। आपकी नायिका ललिता का पार्ट मैं ही अदा करूँगी। देवकी बोस या किसी अन्य योग्य व्यक्ति को डायरेक्शन का भार दिया जायगा। दस हजार रुपया या उससे भी ज्यादा लालाजी आपको देंगे और मुझे भी कुछ कम नहीं देंगे। अब आपके राजी होने से ही काम बन सकता है।"

खुश होकर बटेश्वर ने कहा, "मुझे कोई एतराज नहीं है, तुम नायिका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनो तो अच्छा ही रहेगा। लेकिन कहानी खत्म होने में अभी छः-सात महीने लगेंगे।"

"उसके लिए आप चिन्ता न कीजिए बाबा! मेरे पास भी अभी बहुत एंगेजमेंट हैं। सात महीने मैं बम्बई में व्यस्त रहूँगी, नीबूचाँद जी भी। वह इस समय सिर्फ आपकी राय जानना चाहते हैं, पक्की बातचीत सात महीने बाद ही होगी। लेकिन इस बीच किसी से वायदा न कर डालिएगा!"

"नहीं, नहीं ऐसा क्यों करूँगा।"

"आप भी देख लीजिएगा मेरा अभिनय कितना वंडरफुल होगा। आपकी वह अलका मुझे बहुत पसन्द आ गई है न इसीलिए। उफ, चित्र के अन्त में जब अलका काफी मोटी-तगड़ी होकर अपने तीन महीने के बच्चे को गोद में लेकर पर्दे पर दीख पड़ेगी तो तालियों की गड़गड़ाहट से हाउस एकदम भर जायगा और आप अगर वहाँ पर हाजिर रहे तो लोग आपको कन्धे पर उठाकर नाचने लगेंगे।"

बटेश्वर घबराकर बोल पड़े, "चौपट किया, सभी गीदड़ों के एक बोल। तुम लोग मुझे पागल बनाये बगैर नहीं छोड़ोगे। सुनो कदम्बानिला! मेरी कहानी दुःखान्त है, अलका मरेगी, दो साल के बाद उसके पति हेमन्त के साथ शर्वरी की शादी होगी।"

चौंककर आँखें कपार पर चढ़ाते हुए कदम्बानिला ने कहा, "ऐं, अलका को मारिएगा। तब तो मैं उसका पार्ट अदा नहीं कर सकूँगी, मुझसे न होगा।"

"ज़रूर होगा। ट्रैजेडी की नायिका बनकर भी तो बखूबी अभिनय किया जा सकता है।"

"ऐसा हो ही नहीं सकता, मरने के लिए मैं बिलकुल तैयार नहीं हूँ—अलका बनकर भी नहीं। आपने सब चौपट कर दिया बाबा, झूठ-मूठ आकर आपको तंग किया मैंने। तो चलूँ गल्प-सरस्वती दामोदर नश्कर से ही जाकर बातचीत करूँ। उनका 'मानस-मराली' नाम का उपन्यास भी अपूर्व बना है। उसकी नायिका मंजुला की भूमिका भी मुझे पसन्द है।"

बटेश्वर बेचैन होने लगे। कुछ दिन पहले एक महामूर्ख आलोचक ने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिखा था—"दामोदर नश्कर की कहानी युगचेतना, समाज-चेतना और यौन-चेतना से भरी हुई है। बटेश्वर सिकदार की रचना एकदम अचेतन है, बिलकुल घिसी-पिटी।" इस आलोचना को पढ़ने के बाद दामोदर का नाम सुनते ही बटेश्वर बिगड़ खड़े होते थे। जोश में आकर हाथ हिलाते हुए उन्होंने कहा, "खबरदार ! उसके पास मत जाना ! इतनी अधीर क्यों हो रही हो, मैं सोचकर देखूं, मुझे दो दिन की मोहलत दो कि अलका को जीवित रखकर कहानी को सुखान्त बनाया जा सकता है या नहीं।"

"सोचने के लिए वक्त ही नहीं है बाबा ! कल ही मैं बम्बई चली जा रही हूँ। आज ही कुछ फैसला करके नीबू चाँद जी को बताना होगा।"

गाल पर हाथ रखकर थोड़ी देर सोचने के बाद बटेश्वर ने कहा, "अच्छा, अच्छा, अलका को जीवित ही रखूंगा, शर्वरी ही मरेगी। और किसी के पास तुम्हें जाने की जरूरत नहीं। जानती हो कदम्बानिला, हम कहानीकार सर्वशक्तिमान होते हैं। कलम की एक नोंक में 'नहीं' को 'हाँ' बना सकते हैं।"

कदम्बानिला प्रफुल्लित होकर बोली, "थैंक्यू बाबा, अब तो सुशील बच्चे की तरह बात की आपने। दीजिए, चरण की धूल दीजिए। कहानी का बहुत सुन्दर तरीके से अन्त करना होगा। आखिरी दृश्य में बच्चा गोद में लेकर अलका को आना चाहिए। नीबू चाँद जी को यह शुभ-संदेश दे दूं जाकर।"

बटेश्वर सिकदार ने अपना वादा पूरा किया। उनकी कहानी 'कौन रहे कौन जाय' सुखान्त ही हुई। लेकिन आठ महीने होने को आये कदम्बानिला क्यों नहीं आई ? उसका पता भी उनको मालूम नहीं था कि उससे खत लिखकर ही पूछ-ताछ करें।

सवेरे अपने नीचे के कमरे में बैठकर बटेश्वर ध्यान पूर्वक एक नई कहानी लिख रहे थे—'मन के साथ छीना-झपटी'। अचानक एक पहचाने हुए गले की आवाज सुनाई पड़ी—"आ सकता हूँ सिकदार साहब ?"

डॉक्टर संजीव चटर्जी कमरे में दाखिल हुए। उनके पीछे-पीछे प्रियव्रत राय और एक अनदेखी लड़की। संजीव डॉक्टर ने कहा, "गुड मार्निंग सर ! ओफ, आपने उस कहानी को एक महान् रचना बना दिया है जनाब। इन्हें तो आप जरूर ही पहचान रहे होंगे—प्रियव्रत राय–जिन्हें आपने पागल कहकर भगा दिया था। और यह रही आपकी अलका, जिसकी जान आपने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बचाई है ।"

बटेश्वर को प्रणाम करके उनके पैर के पास अलका ने पतले कागज में लिपटा हुआ एक डब्बा रखा । संजीव डाक्टर ने कहा, "आपके लिए अलका ने अपने हाथों से छेने का मालपुआ बनाया है । जरूर खाइएगा इसे ।"

हतप्रभ होकर बटेश्वर ने कहा, "कुछ भी तो समझ नहीं पा रहा हूँ ।"

"यह है आपकी कहानी का स्वाभाविक अन्त । समझाये देता हूँ, सुनिए ! यह अलका है प्रियव्रत की पत्नी, मेरी साली यानी मेरी बीबी की मौसेरी बहन । अलका साल-भर से सेनेटोरियम में थी । काफी भली-चंगी भी हो गई थी, न मालूम कैसे बुरे क्षणों में इसके हाथों में 'प्रगामिनी' पत्रिका पड़ी । आपकी कहानी पढ़ते हुए उसके दिमाग में यह अजीब धारणा आई कि कहानी की अलका अगर जी जाय तो मैं भी जिन्दा हो जाऊँगी । अगर वह मरती है तो मैं भी मर जाऊँगी । हम लोगों ने बहुत समझाया कि यह रद्दी कहानी पढ़कर तुम अपना दिमाग मत खराब करो, तुम तो अच्छी हो ही गई हो । लेकिन अलका की यह सनक किसी तरह से भी दूर न हुई—रेगुलर आबसेशन । उसका पति प्रियव्रत आपके दरवाजे पर हाजिर हुआ—आपने उसे पागल कहकर भगा दिया । उसके बाद मैंने आकर आपसे कुछ सारपूर्ण बातचीत की, पर आप तो खफा ही हो गए । तब मेरी स्त्री ने कहा, 'तुम लोगों से कुछ नहीं होगा, सब-के-सब निकम्मे हो, मैं चलती हूँ, देखती हूँ कि बूढ़े को मना सकती हूँ कि नहीं ।' वह आपके साथ मुलाकात करके पाँच मिनट में काम बनाकर चली गई । आपने कहानी का प्लाट बदल दिया, अलका भी झटपट अच्छी हो गई । अब कैसी मोटी हो गई है, देखिए !"

बटेश्वर ने कहा, "लेकिन मेरे पास जो आई थी वह तो फिल्म-अभिनेत्री कदम्बानिला चटर्जी थी ।"

"उसकी चौदह पुश्त में किसी ने फिल्म में काम नहीं किया है । वह मेरी पत्नी अनिला है, नाम बदलकर कदम्बानिला बनकर आपको ठग गई । बड़ी चालबाज औरत है जनाब । बहरहाल, आप इस असली अलका को आशीर्वाद दीजिए !"

"हाँ, हाँ, जरूर आशीर्वाद दूंगा । माँ अलका, तुम चिरायुष्मती हो,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुख से रहो, चिर-सुहागिन रहो, सुसन्तान की जननी बनो, लक्ष्मी तुम्हारे घर में अचला बनी रहे। अच्छा डॉक्टर, सभी कुछ तो समझ में आया लेकिन आपकी पत्नी अनिला या कदम्बानिला आई क्यों नहीं ?"

"आये भी तो किस तरह जनाब ! वह अब मैटर्निटी होम (प्रसूति-सदन) में है। उसके एक बच्चा हुआ है, पूरा दस पौंड वजन है। अनिला चंगी हो जाय तो आपके पास आकर धोखेबाजी के लिए क्षमा माँग लेगी।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ४ :

निर्मोक नृत्य

देवराज इन्द्र बोले, "तुम्हारा मनसूबा क्या है, उर्वशी ? इस स्वर्ग लोक में तो तुम बड़े सुख से हो, उत्तम निवास-स्थान, सुन्दर प्रमोद उद्यान, कीमती वेश-भूषा और प्रचुर वेतन सभी का तुम उपभोग कर रही हो। फिर इन सबको त्यागकर तुम मृत्यु-लोक में क्यों जाना चाहती हो ? इस समय राजा पुरुरवा भी वहाँ नहीं हैं, कि तुम्हें सिर आँखों पर बिठायें। स्वर्ग में तुम चिर-यौवना हो। तुम्हारे सौन्दर्य में कोई खोट नहीं। मैं, देवराज इन्द्र तक तुम्हारी वन्दना करता हूँ। किन्तु मृत्यु-लोक में जाते ही दो दिन में ही तुम बुढ़िया हो जाओगी। उस समय चाहे कितने ही प्रसाधनों का लेप करो, कोई पलटकर तुम्हारी ओर देखेगा तक नहीं।"

उर्वशी सिर झुकाये हुए बोली—"देवराज, यहाँ से अब मेरा जी उचट गया है। सभी पुरुषों पर मैंने विजय पा ली है, उनकी एकरस खुशामदी बातें अब मुझे अच्छी नहीं लगती। पृथ्वी पर जाते ही मेरे असंख्य भक्त आ जुटेंगे और धन-सम्पदा भी मुझे वहाँ काफी मिलेगी। और बुढ़ापे के लक्षण प्रकट होते ही मैं यहाँ वापस चली आऊँगी।"

"मैं देखता हूँ कि तुम्हें बहुत अहंकार हो गया है। भला, यहाँ तुम्हें मान-सम्मान की कौन-सी कमी है ?

"मुझे मनुष्यों के पास इससे ज्यादा आदर प्राप्त होगा। मृत्यु-लोक के एक कवि ने लिखा है, 'तुम्हारी पद-चाप से मुनियों के ध्यान भंग हो जाते हैं और तपस्या खंडित हो जाती है, तुम्हारे कटाक्ष-पात से तीनों लोकों का यौवन चंचल हो उठता है।' बताइए, अमरावती का कौन-सा कवि ऐसा लिख सकता है ?"

"कवि तो बहुत-कुछ झूठ लिखते हैं। अगर तुम यह साबित कर सको कि यहाँ के सब पुरुषों पर तुमने विजय पा ली है तो मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ। देवर्षि और महर्षियों को काबू में कर सकती हो ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"वे तो कभी के काबू में आ गए हैं।"

"अच्छी बात, मैं तुम्हारी परीक्षा लूँगा। दिव्य मानवों को जानती हो न ? ये लोग अबाध गति से स्वर्ग और मृत्यु-लोक में आते-जाते रहते हैं। जैसे—सनत्कुमार, सनातन, सनक, सदानन्द। ये ब्रह्मा के मानस-पुत्र हैं। इन्हें मैं छेड़ना नहीं चाहता हूँ क्योंकि ये बड़े ही बदमिजाज हैं। लेकिन तीन व्यक्ति हाल में यहाँ घूमने आये हैं, कुतुक, पर्वत और कर्दम ऋषि। ये काफी शान्त स्वभाव के और बिलकुल विकारशून्य हैं। इनको काबू में कर सकोगी ?"

"क्यों नहीं, बशर्ते कि वे पुरुष हों।"

"सिर्फ मनुष्य ही नहीं, वे महापुरुष हैं।"

"तब तो उन पर मैं महाकाबू कर सकूँगी !"

"अच्छी बात। वे देवर्षि नारद के मित्र हैं। नारद से कह दूँगा कि वे उन्हें तुम्हारा नृत्य देखने के लिए निमंत्रित कर आयँ।"

नारद द्वारा निमंत्रित होकर तीनों ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। बोले, "हम लोगों ने मोर और खंजन के नृत्य देखे हैं, बन्दर और भालू के नृत्य भी देखे हैं, लेकिन नारी का नृत्य कभी नहीं देखा। देखने का काफी कुतूहल भी है। लेकिन सुना है कि उर्वशी अप्सरा है। वह नारी तो है न ?"

नारद बोले—"ऐसी नारी है जिसे देखते ही, 'सहसा पुरुष-वक्ष में चित्त है अकुलाता, रुधिर-प्रवाह में मच जाती हलचल।' उसका नृत्य देखकर तुम लोग भी मुग्ध हो जाओगे। अब इन्द्र-सभा में चलने के लिए तैयार हो जाइए !"

पर्वत ऋषि की दाढ़ी गले तक थी, कर्दम ऋषि की दाढ़ी छाती तक, और कुतुक ऋषि की दाढ़ी घुटनों तक थी। ये तीनों भरसक भव्य वेश धारण करके चलने के लिए तैयार हुए। पर्वत ने वल्कल पहने। कर्दम ऋषि के पास वल्कल नहीं था, सो उन्होंने एक कौपीन ही धारण किया। महामुनि कुतुक सर्वत्यागी थे। उनके पास न वल्कल था, न कौपीन। इसलिए वे दिगम्बर ही रहे। नारद बोले, "अजी कुतुक, तुम कम-से-कम तृण-पत्रों की एक मेखला ही बाँध लो !"

कुतुक बोले, "कोई आवश्यकता नहीं है, घुटनों तक लम्बी दाढ़ी ही मेरा वस्त्र है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीनों नवागत ऋषियों को पाद्य, अर्घ्य और आसन इत्यादि देकर, यथा-विधि उनका सत्कार करके, इन्द्र बोले—"हे महातेजस्वी, तपोसिद्ध जितेन्द्रिय तीनों महर्षिगण, मेरी मुख्य अप्सरा उर्वशी आप लोगों के मनोरंजन के लिए एक अभिनव नृत्य–निर्मोक नृत्य–पेश करेगी। मृत्यु-लोक के पश्चिमी भागों में म्लेच्छगण जिसे 'स्ट्रिप-टीज' कहते हैं। यहाँ पर अग्नि वायु, वरुण आदि देवगण, नारदादि देवर्षिगण, अगस्त्य आदि महर्षिगण सभी समवेत हुए हैं। मेनका आदि अप्सराएँ भी हैं। आप लोगों के आगमन से हम सभी कृतार्थ हुए हैं। अब आज्ञा दीजिए, उर्वशी नृत्य आरम्भ करे!"

आगन्तुक तीनों ऋषियों के मुखिया महामुनि कुतुक बोले, "हाँ, विलम्ब का क्या प्रयोजन है, हम लोग नृत्य देखने के लिए उत्सुक बैठे हैं।"

लास्य-नृत्य के उपयोगी वेश-भूषा पर एक ढीला अँगरखा या लबादा पहने उर्वशी इन्द्र-सभा में प्रविष्ट हुई। सबको प्रणाम करके, हाथ जोड़े हुए ही वह बोली, "हे महाभाग देवगण और अग्निकल्प ऋषिगण, आज मैं जो निर्मोक-नृत्य या केंचुल-नाच दिखाऊँगी, उसमें मेरी देह क्रमशः अनावृत होती जायगी। आप लोगों को इसमें कोई आपत्ति तो नहीं है?"

कुतुक ने अपना सिर और अपनी विशाल दाढ़ी हिलाते हुए कहा, "आपत्ति कैसी? आखिर तुम्हारी देह भी तो अन्य जीवों के शरीरों की तरह ही पंचभूतों से बनी होगी। उसके भीतर नारी सत्ता कहाँ है यही तो हम देखना चाहते हैं।"

उर्वशी ने फिर विनयपूर्वक कहा—"मेरे नृत्य में यदि आपको कहीं कुछ असभ्य या कुत्सित दिखाई पड़े तो कृपया टोक दीजिएगा, मैं तत्क्षण नृत्य बन्द कर दूंगी।"

ऊपर का लबादा उतारकर उर्वशी ने फेंक दिया। और उसकी मणि-मुक्ता और स्वर्ण से मंडित तथा आँखें चौंधियाने वाली उज्ज्वल वेश-भूषा दिखाई पड़ी। इसके उपरान्त कुछ देर तक नृत्य करने के बाद उसने अपनी ओढ़नी भी उतार दी।

पर्वत ऋषि ने हाथ उठाकर कहा, "उर्वशी, बस करो! तुम्हारे नृत्य में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शालीनता की अत्यधिक कमी है। चित्त को पीड़ित करने वाला ऐसा नृत्य हम नहीं देखना चाहते।"

महामुनि कुतुक डाटकर बोले, "तुम्हारे चित्त में पीड़ा हो रही है, तो इससे हमें क्या ? तुम आँखें मूंद लो ! नृत्य जारी रहे !"

उर्वशी ने फुसफुसाकर इन्द्र से कहा—"देवराज, पर्वत ऋषि पर मैंने काबू पा लिया।"

नृत्य चलता रहा।

पर्वत ऋषि ने दोनों हाथों से अपनी आँखें ढक लीं, लेकिन फिर भी अपने कुतूहल को न दबा पाने के कारण, वे उँगलियों के बीच की पोर से नृत्य देखते रहे।

क्रमशः उर्वशी ने अपनी देह का ऊपरी भाग निरावृत कर दिया।

तब कर्दम ऋषि भी अपनी आँखें मूंदकर बोले, "बन्द करो तुम अपना यह जुगुप्सित नृत्य। इसे देखने से हम लोगों की तपस्या नष्ट हो जायगी।"

कुतुक ऋषि भर्त्सना करते हुए बोले, "क्यों बन्द करे वह नृत्य ? तुम लोगों से अगर न सहा जाता हो तो यहाँ से उठकर चले जाओ !"

सहास्य दृष्टि के इशारे से उर्वशी ने इन्द्र को जतलाया कि कर्दम ऋषि भी घायल हो गए हैं।

इसके बाद उर्वशी ने क्रमशः अपने समस्त वस्त्र तथा आभूषण एक-एक करके उतार फेंके। फिर कुन्द-पुष्प-जैसी शुभ्र नग्न कान्ति प्रकट करती हुई पत्थर की प्रतिमा की नाईं वह निश्चल खड़ी हो गई।

सभा में उपस्थित सभी देव, देवर्षि तथा महर्षिगण वाह-वाह कर उठे।

कुतुक बोले, "उर्वशी तुम रुक क्यों गईं ? नाच जारी रखो। और भी केंचुल उतार फेंको।"

नारद बोले, "और केंचुल है कहाँ ? उर्वशी ने तो सब-कुछ उतार फेंका है।"

कुतुक ने कहा, "पर उसके सारे शरीर पर कमल की पंखड़ियों के रंग का रक्त-शुभ्र चिकना-सा आवरण तो अब भी है।"

"अरे वह तो उसकी त्वचा है।"

"तो उसे भी उतार फेंके वह।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"पागल हुए हो क्या, कुतुक ? त्वचा तो शरीर का ही अंश होती है, वह वस्त्र तो नहीं।"

"वस्त्र भले ही न हो, पर निर्मोक तो है ही। उस निर्मोक को भी वह उतार फेंके। उसके नीचे क्या है, मैं देखूंगा।"

"उसके नीचे क्या है, मैं बताये देता हूँ, सुनो ! त्वचा के नीचे चर्बी है। उसके नीचे मांस है। उसके नीचे कंकाल है।"

"और उसके नीचे क्या है ?"

"कुछ नहीं।"

"तो फिर उर्वशी का वह नारीत्व कहाँ है, जिसके प्रभाव से 'सहसा पुरुष वक्ष में चित्त है अकुलाता, रुधिर-प्रवाह में मच जाती हलचल' ?"

"उसका वह नारीत्व है उसके वस्त्रों में, आभूषणों में, अंग-प्रत्यंग में, भाव-भंगिमा में और अनुरागी पुरुषों के चित्त में। तुम तो वीतराग हो, चित्त को जलाकर राख कर चुके हो, तुम उसके नारीत्व को कैसे देख सकते हो ?"

महामुनि कुतुक क्रुद्ध होकर बोले—"वाह नारद जी। तो आप मुझे छलने के लिए यहाँ ले आए थ ? यह उर्वशी एक अन्तःसारशून्य जीव है। उसकी देह और एक बकरी की देह में अन्तर ही क्या है ? अजी पर्वत, अजी कर्दम, चलो हम चलें ! यहाँ देखने योग्य कुछ भी नहीं है।"

उर्वशी का यह अपमान देखकर, मेनका, घृताची और मिश्रकेशी आदि अप्सराओं ने प्रसन्न होकर तालियाँ बजाईं।

कुतुक. पर्वत और कर्दम के सभा से चले जाने के बाद उर्वशी सिर झुकाये आँसू गिराती रही।

इन्द्र ने कहा, "उर्वशी, शान्त होओ ! निरन्तर विजय प्राप्त करना किसी के भाग्य में नहीं लिखा होता, मुझे भी वृत्रासुर के हाथों पराजित होना पड़ा था।"

उर्वशी बोली, "देवराज, क्या इसे पराजय कहा जाय ? वह कुतुक ऋषि एक पुरुषत्वहीन, दग्धेन्द्रिय उन्मादी है। उससे मेरा अपमान कराकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भला आपको क्या मिला ? मैं अब न अमरावती में रहूँगी और न मृत्यु-लोक ही जाऊँगी । अब मैं तपस्या करूँगी ।"

इसके बाद उर्वशी ने सिर घुटाया, तुलसी की माला पहनी, तिलक-चन्दन लगाया और नित्यधाम गोलोक में जाकर श्रीहरि के चरण-कमलों का आश्रय ले लिया ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ५ :

डम्बरू पंडित

आचार्य रोहित ने अपने शिष्य डम्बरू से कहा, "बेटा तुम अखिल विद्या में पारदर्शी बन गए हो, स्नातक हो जाने के बाद दस साल स्नातकोत्तर शोध-कार्य करते रहे, तुम्हारा यौवन भी अब उत्तीर्णप्राय है। मेरे पास बेकार समय बिताने से क्या फायदा ? अब तुम ब्रह्मचर्याश्रम से निकलकर गार्हस्थ्य में प्रवेश करो !"

डम्बरू ने प्रणाम करके रोहित के चरणों पर एक छोटा-सा स्वर्णखंड रख दिया और कहा, "गुरुदेव, मैं बड़ा दरिद्र हूँ, यह किंचित् दक्षिणा ग्रहण करके मुझे कृतकृत्य कीजिए !"

शिष्य के सिर पर हाथ रखकर रोहित प्रसन्न मुद्रा में बोले, "अजी डम्बरू, तुमने पच्चीस वर्ष तक जो मेरी सेवा की है वही मेरे लिए पर्याप्त दक्षिणा है, मुझे धन का प्रयोजन नहीं है। मैं जानता हूँ तुम दरिद्र हो, यह स्वर्ण-खंड तुम्हारे पथ का सहारा बने।"

डम्बरू बोले, "गुरुदेव आपकी दया की सीमा नहीं। यात्रा करने से पूर्व आपसे किंचित् विद्या की भिक्षा और चाहता हूँ।"

रोहित ने हँसते हुए कहा, "बेटा डुबोए घड़े की भाँति तुम विद्या से लबालब भरे हो, तुम्हारे भीतर अब विन्दु-मात्र भी धारण करने का स्थान नहीं। अब किसी गुणवान नृपति को खुश करके उनके सभा-कवि या सभा-पंडित बन जाओ ! लेकिन मूर्ख आत्मगर्वी व्यक्ति के सम्पर्क में मत रहना और न उसका दान ग्रहण करना !"

डम्बरू ने सिर झुकाकर और हाथ जोड़कर कहा, "गुरुदेव, मुझे क्या आप एक उपाधि से अलंकृत न कीजिएगा ?"

"कौन-सी उपाधि तुम चाहते हो ?"

"अगर योग्य समझें तो कृपया मुझे विश्वविद्योदधि की उपाधि प्रदान कर दें !"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोहित ने हँसकर कहा, "तथास्तु ! हे पंडित डम्बरू विश्वविद्योदधि सर्वत्र तुम्हारी जय हो। देवी सरस्वती तुम्हारी रक्षा करें, देवगुरु वृहस्पति तुम्हें सुबुद्धि दें !"

पथ पर चलते-चलते डम्बरू ने एक प्रशस्ति की रचना की। कुछ दिन पर्यटन के बाद उन्होंने सुना कि काशिराज वितर्दन अत्यन्त गुण-सम्पन्न नरपति हैं। उनके आश्रय में रहने का निश्चय कर के डम्बरू उनकी राजसभा में उपस्थित हो कर यह प्रशस्ति पढ़ी—

चन्द्र-सूर्य सब मलिन हो गए तेरे यश की जोत से,
शत्रु पराभव-ग्रस्त भागते खर-वर्षा के स्रोत से।
देववृन्द हतमान हो गए, हुए दुखी अति,
ईर्ष्या की लपटों में लेटे पड़े हैं सुरपति।
स्वर्गधाम को छोड़ उर्वशी रम्भा परियाँ,
नाच रहीं चहुँओर तुम्हारे दे गलबहियाँ।
पद्मालया मचलती आती वरण हेतु तव,
स्वर्गलोक में विष्णु अकेले करते दुःखरव।
डम्बरू पंडित गाते फिरते यशःगान तव
महाराज ! क्या कृपा हो रही मुझ पर अभिनव ?"

काशिराज वितर्दन प्रसन्न होकर बोले, "वाह बड़ी सुन्दर प्रशस्ति है। कोशपाल, इस विप्र को एक सौ स्वर्ण मुद्रा दो।"

डम्बरू ने सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं महाराज, मूर्ख आत्मगर्वी व्यक्ति का दान मैं नहीं ले सकता हूँ।"

आश्चर्य करते हुए राजा ने पूछा, "तुम बुद्धिहीन आत्मगर्वी किसे कह रहे हो ?"

"आपको। मेरी प्रशस्ति में जो उत्कट अतिशयोक्ति है उसे आपने बेझिझक स्वीकार कर लिया है।"

अत्यन्त क्रुद्ध हो कर राजा बोले, "बुद्धिहीन आत्मगर्वी तुम स्वयं हो। यदि तुम ब्राह्मण न होते तो तुम्हारी धृष्टता के लिए मैं तुम्हें सूली पर चढ़वा देता। कोशपाल एक चाँदी का सिक्का देकर इस मूरखचन्द को विदा करो !"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिक्का लिये बिना ही डम्बरू ने काशिराज की सभा त्याग दी। उसके बाद बहुत दिन पर्यटन करके वत्स राजधानी कौशम्बी नगरी में उपस्थित हुए और वत्सराज पुरंजय की सभा में जाकर पहले की भाँति प्रशस्ति पढ़ी।

पुरंजय बोले, "अति उत्तम रचना है। कोशपाल इस पंडित प्रवर को एक सौ स्वर्णमुद्राएँ दो!"

डम्बरू ने पहले की तरह सिर हिलाते हुए कहा, "नहीं महाराज, बुद्धि-हीन आत्मगर्वी का दान मैं ले नहीं सकता हूँ, गुरुदेव का निषेध है। मेरी प्रशस्ति में जो उत्कट चाटुवाक्य हैं उन्हें आपने बिना द्विधा के स्वीकार कर लिया।"

क्रुद्ध होकर पुरंजय बोले, "रे द्विजगर्दभ, देवता, राजा और प्रणयिनी की स्तुति में अतिरंजना अवश्यमेव रहती है और वह अलंकार-शास्त्र-सम्मत भी है। मैंने तुम्हारे कवित्व का ही मूल्यांकन किया था, सत्यासत्य का नहीं। कोशपाल, इस सामान्य ज्ञान-शून्य मूर्ख ब्राह्मण को चाँदी का एक सिक्का देकर विदा करो!"

दक्षिणा लिये बिना ही डम्बरू वहाँ से चल दिए। बहुत दिनों के बाद वे दशार्ण देश पहुँचे और वहाँ के राजा उदायुध की सभा में जाकर पूर्ववत् प्रशस्ति-पाठ किया।

उदायुध क्रुद्ध होकर बोले, "अरे चाटुकार मिथ्याभाषी ब्राह्मण, व्याज स्तुति द्वारा तुमने मेरा अपमान किया है। तुम मेरे राज्य से निकल जाओ!"

उत्फुल्ल होकर डम्बरू बोले, "साधु साधु! महाराज आपकी जय हो, आप परीक्षा में उत्तीर्ण हो गए, मेरी प्रशस्ति में जो अतिशयोक्ति है उसे आपने स्वीकार नहीं किया। आप बुद्धिहीन भी नहीं और न आत्मगर्वी हैं; परन्तु उद्धत अवश्य हैं। मैं आप ही के आश्रय में रहूँगा। मेरी गिरस्ती चलाने के लिए यथोचित वृत्ति की व्यवस्था कर दीजिए और एक सुन्दरी सुलक्षणा सुपात्री भी जुटा दीजिए जिससे विवाह करके मैं गृही बन सकूं।"

उच्चहास्य करते हुए उदायुध बोले, "हे पंडितमूर्ख, तुम्हारी स्पर्धा कम नहीं, तुम मेरी परीक्षा लेने आए हो। तुम्हारे समान धृष्ट, कपटभाषी पुरुष को मैं आश्रय नहीं दे सकता। कोशपाल, चाँदी के दस सिक्के देकर इस पागल को विदा करो!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डम्बरू ने सिक्का न लिया।

क्षुब्ध डम्बरू फिर रास्ता नापने लगे। अपना सहारा, वह छोटा-सा स्वर्ण-खंड बेचकर उन्हें जो धन मिला था वह कब का समाप्त हो चुका था। अपराह्न में अत्यन्त क्लान्त और क्षुधार्त्त होकर वह मालव राज्य में पहुंचे। शिप्रा नदी के किनारे आकर डम्बरू सोचने लगे, 'हायरे दुर्भाग्य! राजाओं की परीक्षा के लिए मैंने जो रास्ता अपनाया था सो तो असफल हुआ, दो राजा बुद्धिहीन प्रमाणित हुए, तीसरा परीक्षा में उत्तीर्ण होकर भी अकारण मुझसे विमुख हो गया। अब क्या किया जाय ? हे देवी सरस्वती मेरी रक्षा करो !'

नदी-तट पर बैठे-बैठे डम्बरू व्याकुलमन वाग्देवी को पुकारने लगे। सहसा उन्हें सुनाई पड़ा कि कोई मधुर स्वर में बोल रहा है—'द्विजवर, क्या आप विपदग्रस्त हैं ?'

चौंककर डम्बरू ने देखा, एक सद्यःस्नाता सिक्तवसना सुन्दरी उनके सम्मुख खड़ी है। दंडवत् प्रणाम करके डम्बरू बोले, "भगवति भारति देवि नमस्ते ! मेरी रक्षा करो !"

वीणा झंकार-सा हास्य करके सुन्दरी बोली, "मैं देवी-एवी कुछ नहीं हूँ—मैं एक सामान्य शिल्पिनी-मात्र हूँ। मेरा नाम है शिलीन्ध्री, राजपुरी की ललनाओं के लिए पुष्पालंकार की रचना करके जीविका चलाती हूँ। नदी में स्नान करके उठते ही देखा कि आप कराह रहे हैं। कृपया बताइए क्या हुआ है ?"

डम्बरू बोले, "मैं बृहस्पतिकल्प आचार्य रोहित का प्रिय शिष्य पंडित डम्बरू विश्वविद्योदधि हूँ। अखिल शास्त्रों में पारंगत होकर सम्प्रति गुरु के आश्रम से बाहर आया हूँ। उन्होंने कहा है कि हे वत्स, तुम विद्या से परिप्लुत हो गए हो, अब किसी नरपति को तुष्ट करके उसके सभा-कवि या सभा-पंडित बन जाओ, किन्तु बुद्धिहीन तथा आत्मगर्वी व्यक्ति के सम्पर्क में मत रहना और न उसका दान लेना।' मैंने एक-एक करके काशिराज, वत्सराज और दशार्णराज के निकट उपस्थित होकर उनकी परीक्षा ली, किन्तु प्रथम दोनों राजा बुद्धिहीन और आत्मगर्वी निकले और तीसरा बुद्धिमान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होने पर भी बड़ा उद्दंड तथा क्रोधी है—मेरी प्रार्थना उसने ठुकरा दी। मैं अब निर्धन, क्लान्त तथा क्षुधातुर हूँ, क्या करना चाहिए यह निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ।"

शिलीन्ध्री बोली, "आप कृपया मेरी कुटिया में आकर विश्राम कीजिए तथा क्षुधा शान्त कीजिए ! संकोच न कीजिए, मैं अपनी बुढ़िया माँ के साथ रहती हूँ। कल आप अवन्तिराज की सभा में जाइए ! वे अत्यन्त बुद्धिमान नरपति हैं अवश्य ही आपकी प्रार्थना पूरी करेंगे।"

डम्बरू बोले, "भद्रे मैं आज ही अवन्तिराज के पास जाकर उनकी परीक्षा लेना चाहता हूँ। अगर सफल हुआ तो तुम्हारा आतिथ्य स्वीकार करूँगा, नहीं तो देवी सरस्वती की आराधना में अनशन करके प्राण दे दूँगा।"

शिलीन्ध्री ने प्रश्न किया, "द्विजश्रेष्ठ, आपने नृपतियों की परीक्षा किस प्रकार से ली थी ?"

डम्बरू ने आरम्भ से सारी घटनाएँ सुना दीं। शिलीन्ध्री ने मुस्कराकर कहा, "पंडितवर आपने झूठा प्रिय वाक्य सुनाया था इसलिए अभीष्ट फल न मिल सका। अवन्तिराज तीक्ष्णबुद्धि तथा गुणग्राही हैं। उनके पास जाकर आप सत्यभाषण कीजिए, उनके दोष गुण सभी का वर्णन कीजिए।"

डम्बरू बोले, "सुन्दरी, तुम्हारी मंत्रणा बुरी नहीं, झूठी स्तुति करके तीन बार व्यर्थकाम हुआ हूँ, अब सच्ची स्तुति करके देखा जा सकता है। किन्तु इसे देश के राजा का दोष-गुण मैं कुछ नहीं जानता हूँ, सत्यभाषण कैसे करूँ ?"

शिलीन्ध्री बोली, "सोच न कीजिए, मैं आपको सब सिखा-पढ़ा दूँगी। थोड़ी देर बाद ही महाराज सान्ध्य-सभा में बैठेंगे, आप वहाँ चलिए, आपको मैं रास्ता दिखाती हूँ।"

डम्बरू को उपदेश देती हुई कुछ दूर उसके साथ जाकर शिलान्ध्री बोली, "बाईं ओर उस कुंजवन में मेरा घर है। दक्षिण का वह पथ राज-भवन के सिंहद्वार पर रुकता है—आप सीधे चले जाइए !"

शिलीन्ध्री ने प्रणाम करके विदा ली।

मालवराज विक्रमादित्य अपनी राजधानी अवन्ती यानी उज्जैन की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सभा अलंकृत किये बैठे थे। प्रतिदिवस का राजकार्य वह प्रातःकालीन सभा में ही सम्पन्न करते थे, अब इस सान्ध्य-सभा में चित्तविनोद के लिए सभासदों के साथ आ मिले थे।

रूखे केश, मलिन वेश, धुलिधूसर देह डम्बरू ने राज-सभा में प्रवेश किया, ब्राह्मण देखकर किसी ने उन्हें रोका नहीं। राजा के सामने आकर आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाकर खड़े हो गए, उनके मुख से कोई वाक्य न निकला।

राजा बोले, "ब्राह्मण, आपको बहुत अवसादग्रस्त देख रहा हूँ। आप हाथ-पैर मुख आदि प्रक्षालन कीजिए, दूध पीकर कुछ देर विश्राम कीजिए तदुपरान्त स्वस्थ होने पर अपना वक्तव्य सुनाइएगा। प्रतिहारी, विप्रदेव को विश्राम-कक्ष में ले जाकर इनकी सेवा की व्यवस्था हो।"

डम्बरू बोले, "महाराज मैंने संकल्प किया है कि अपना वक्तव्य सुनाकर यदि आपको प्रसन्न कर सका तभी मैं जल-स्पर्श करूँगा। इसलिए जो कह रहा हूँ, सुनिए—

महाबली, मतिमान, विक्रमी हे जगतीपति,
तव महिमा से जन-धन पूरित प्रजा सुखी अति।
दधि, घृत, मत्स्य, मांस से तुष्ट सभी है सतजन,
प्राणदंड पा चुके नराधम सारे दुर्जन।
ज्ञानवान, गुणवान सभी के आश्रयदाता,
यद्यपि कुछ हैं चाटुकार, हे भाग्य-विधाता ?
यशोमान नवरत्न तुम्हारे अति प्रचंड हैं,
यद्यपि उनमें यत्र-तत्र कुछ काँच-खंड हैं।
भार्याएँ हैं तीन तुम्हारी, हे नरकेसरि !
सब-की-सब हैं एक-एक से बढ़कर प्रेयसि।
उपभार्याएँ नृत्य-गीत पारंगत घोषित,
फिर भी राजन्, शिलीन्ध्री में क्यों तुम मोहित।
विद्योदधि मैं विश्व-विजेता डम्बरू पंडित
निर्भय होकर कहूँ जिसे समझूँ मैं समुचित।
कहा, सुना जो इधर-उधर से लोक-सूत्र से,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महाराज, बोलो क्या देते हो सुहेतु से ?"

डम्बरू का भाषण सुनकर विक्रमादित्य का गोरा मुखमंडल लाल हो गया। नवरत्न सभा की ओर दृष्टिक्षेप करके उन्होंने प्रश्न किया, "आप लोग क्या कहते हैं ?"

वेतालभट्ट ने कहा, "महाराज इस विश्व-विद्योदधि का योग्य पुरस्कार है—मस्तक-मुंडन, दधिलेपन तथा गर्दभवाहन और फिर बहिकार।"

राजा ने पुनः प्रश्न किया, "कवि कालिदास क्या कहते हैं ?"

कालिदास बोले, "महाराज अगर आज्ञा दें तो मैं इस ब्राह्मण को आड़ में ले जाऊँ। फिर कुछ देर बाद आपके पास उपस्थित करूँ।"

राजा ने सम्मति दी। डम्बरू को हाथ से पकड़कर कालिदास बोले, "पंडित मेरे साथ चले आओ!"

सिर हिलाकर हाथ खींचकर डम्बरू बोले, "राजा का अभिप्राय बिना जाने मैं पादमेकं न गच्छामि।"

डम्बरू के कानों में कालिदास ने कहा, "राजा प्रसन्न हुए हैं। मेरे साथ चलो, मेरा परामर्श मानो!"

दो दंड के उपरान्त कालिदास राज-सभा में लौट आए, उनके पीछे दो राजभृत्य डम्बरू को ढोकर लाये और राजा के सम्मख अर्धशायित दशा में रख गए। डम्बरू का शरीर निर्मल था, सिर तैलाक्त था, उदर फूला हुआ और आँखें अर्धनिमीलित।

उद्वेग से विक्रमादित्य ने पूछा, "इस ब्राह्मण को क्या हो गया है ?"

कालिदास बोले, "कोई शंका नहीं है महाराज। यह डम्बरू पंडित पथ-क्लान्ति और क्षुधा से अवसन्न थे और उसी कारण उनकी बुद्धि थोड़ी-सी भ्रष्ट हो गई थी। मेरे अतिशय आग्रह तथा अनुरोध से इन्होंने स्नान करके नववस्त्र धारण किया है और भोजन ग्रहण किया है। दीर्घ उपवास के उपरान्त गुरुभोजन के कारण आपमें उठने-बैठने की शक्ति नहीं रह गई है। फिर भी आप भाषण के उपसंहार के रूप में कुछ और आपसे अभी निवेदन करना चाहते हैं।"

"बहुत अच्छा, क्या कहना चाहते हैं कहें।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"महाराज, गले तक दही, चिउड़ा, केला और लड्डू भोजन के कारण आपकी वाक्शक्ति भी लुप्त हो गई है, तथापि अपना वक्तव्य सुनाने के लिए आप व्यग्र हैं। यदि आज्ञा द तो इनका प्रतिनिधि बनकर मैं ही निवेदन कर दूं।"

विक्रमादित्य ने सम्मति दी। डम्बरू का पूर्व इतिहास सुनाने के बाद कालिदास बोले, "महाराज यह डम्बरू पंडित विश्वविद्योदधि होने पर भी अत्यन्त सरल मति तथा लोक-व्यवहार से अनभिज्ञ है। राज-सभा में आने से पूर्व दुर्भाग्य से शिलीन्ध्री से इनकी भेंट हो गई थी। उस व्यापिका प्रगल्भा दुर्विनीता रमणी ने इन्हें जो कुछ सिखा दिया था वही इन्होंने तोते की तरह रट दिया।"

राजा बोले, "डम्बरू को अपनी भूल स्वीकार हो गई?"

"महाराज डम्बरू कहना चाहते हैं कि आपके बारे में प्रत्यक्ष ज्ञान न रहने के कारण शिलीन्ध्री का कथन ही उन्हें स्वीकार्य हो गया। अब पेट भरने के उपरान्त आप समझ गए हैं कि परप्रत्यय से चालित होना मूढ़बुद्धि का लक्षण है। अतः अपके आश्रय में रहकर आपके सम्बन्ध से सम्यक् ज्ञान अर्जन करके आपकी यथार्थ प्रशस्ति की रचना करना चाहते हैं। आप कृपया डम्बरू की प्रार्थना स्वीकार करें और इन्हें सभासद् का पद दें।"

"आप कौन-से कार्य के योग्य हैं?"

"महाराज, आपकी सभा में विदूषक नहीं है, डम्बरू को विदूषक नियुक्त कीजिए!"

"क्या कहते हैं आप? यह तो शुष्ककाष्ठ की भांति नीरस है, इनमें कौतुक बोध किंचित्मात्र भी है ऐसा नहीं लगता।"

"महाराज कौतुक उत्पन्न करने की सहजात शक्ति इनमें है, अनजाने में ही यह आपका और राज-सभा का मनोरंजन कर सकेंगे जैसा कि आज इन्होंने किया है।"

राजा ने हँसते हुए कहा, "उत्तम प्रस्ताव ह। अजी डम्बरू पंडित, तुम्हें मैंने विदूषक का पद दिया। मंत्री, कवि कालिदास के साथ परामर्श करके तुम डम्बरू के लिए योग्य वृत्ति और वास-भवन की व्यवस्था कर दो!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इतनी देर में डम्बरू किंचित् स्वस्थ हुए। आँखें खोलकर हाथ पर शरीर का भार रख उठकर बोले, "मालवपति महामति विक्रमादित्य की जय हो ! महाराज मेरी एक और प्रार्थना है। गुरुदेव ने मुझे गृही बनने के लिए कहा ह, इसलिए मेरे लिए एक सुलक्षणा सद्कुलोद्भवा सुविनीता सुपात्री के सन्धान के लिए आज्ञा हो !"

विक्रमादित्य अपने दंडनायक को सम्बोधित करते हुए बोले, "अजी वीरभद्र इस ब्राह्मण के लिए एक सुपात्री की खोज करो ! और शिलीन्ध्री नाम्नी जो रमणी मेरी महिषियों के लिए पुष्पालंकार बनाती है उसे राज निन्दा के अपराध का दंड दो—मस्तक मुंडन, दधिलेपन तथा गर्दभारोहण से वहिष्कार।"

व्याकुल होकर डम्बरू बोले, "महाराज, बुद्धिहीना, अबला, सरला बाला के अपराध की क्षमा किया जाय।"

राजा बोले, "अजी वीरभद्र यह डम्बरू पंडित यदि उस दुर्विनीता नारी से पाणिग्रहण करते हैं तो उसे छोड़ देना।"

डम्बरू ने उसका पाणिग्रहण कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ६ :

दो सिंह

बेचाराम सरकार बड़े धनी व्यक्ति थे । लड़ाई के जमाने में ठेके से काफी पैसा कमा लिया था। हालाँकि अब उनका कारोबार कुछ खास चलता दिखाई नहीं पड़ रहा था, लेकिन इससे उन्हें कोई अफसोस भी न था। बेचाराम का लोभ सीमाहीन न था। वह रुकना जानते थे। जो कुछ जमा कर लिया था उसीसे वह सन्तुष्ट थे, बल्कि कारोबार के झंझट और मेहनत से छुट्टी पाकर अब वह आराम की साँस ले रहे थे।

बेचाराम सुशिक्षित न थे। उनकी पत्नी सुबाला पुराने ढर्रे की देहाती महिला थीं, थोड़ी बहुत कहानी की पुस्तक पढ़ा करती थीं; सो भी पूरी समझ में न आती। उनकी दो सन्तानें सुमन्त और सुमित्रा कालेज में पढ़ती थीं। रुचि उनकी आधुनिक थी और मां बाप की बातचीत और चालढाल से उन्हें शर्म लगती। वे साफ-साफ बता देतीं—पिता जी ने महज रुपया ही कमाया; पंजाबी, गुजराती मारवाड़ी, बड़े साहब, छोटे साहब इन्हीं लोगों से मेलजोल किया। कल्चर और संस्कृति किसे कहते हैं, उन्हें कतई मालूम नहीं। और अम्मा तो अपने जेवर, सुनार, ढोली ढीली पान, जर्दाकिमाम यही सब लिये पड़ी रहीं। पिता जी तुम होंठों पर लटकी हुई अपनी पुरानी मूँछें कटवा डालो और बालों को बैकब्रश करना सीख लो! अभी कोई उम्र नहीं खत्म हो गई, जरा स्मार्ट बनो! और अम्मा, तुम्हारे दाँतों की ओर तो देखा नहीं जाता, पान-तमाखू खा-खाकर वे शरीफे के बीज बन गए हैं। अच्छा हो सारे दाँत उखड़वाकर नये लगवा लो! अब तो पिता जी को काम की भी कोई फिक्र नहीं, अब तुम दोनों अपने चाल-ढाल बदलो न। ऐसी कोशिश करो, जिससे सभ्य समाज में घूम फिर सको!"

बेचाराम और सुबाला बड़े सीधे माता-पिता थे। बेटी-बेटा की बातें सुनकर हँसते हुए बोले, "अच्छी बात है, इतने दिनों तक तुम दोनों को पढ़ाता-लिखाता रहा, पाल-पोसकर बड़ा किया, अब तालीम देकर सभ्य बना लो!"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माँ-बाप को अभिजात सभ्य समाज के योग्य बनाने के लिए दोनों बेटी-बेटा ने बीड़ा उठा लिया। मशहूर क्लब 'सज्जन संगति' का नाम आप लोगों ने सुना होगा। उसके सेक्रेटरी कपोत गुहा बार-एट-लॉ और उनकी पत्नी शिंजनी देवी के साथ सुमन्त और सुमिता का परिचय था। दोनों ने गुहा-दम्पति से विनती की कि वे बेचाराम और सुबाला को पालिश करने की जिम्मेवारी ले लें। कपोत और शिंजनी सहर्ष राजी हो गए और बेचाराम के घर आये दिन दिखाई पड़ने लगे। मालिक की शिक्षा का भार मिस्टर गुहा ने सँभाल लिया तो मालकिन का मिसेस गुहा ने। बेचाराम कंजूस नहीं थे, अपनी शिक्षा के लिए उन्होंने योग्य मासिक पारिश्रमिक का प्रस्ताव भी पेश किया। कमरा सजाना, खाने का इन्तजाम, पोशाक, गहने, बातचीत का कायदा, सभी मामले में संस्कार का प्रयास होने लगा। बेचाराम की मूँछें सफाचट हो गईं, बाल बैकब्रुश होने लगे, घर पर धोती के बदले पायजामा पहनने लगे। पर सुबाला ने किसी तरह से भी पान-तमाखू नहीं छोड़े और नये दाँत चढ़वाने के लिए भी तैयार न हुई। शिंजनी के बार-बार चेतावनी के बाद भी सुबाला का देहाती लहजा न छूटा।

हाल में विम्बिसार रोड पर बेचाराम बाबू की बहुत बड़ी हवेली बनी, उसका प्लैन पूरा-का-पूरा कपोत गुहा ने देख दिया। गृह-प्रवेश के कुछ दिन बाद सुमन्त बोला, "पिताजी, अब घर पर एक पार्टी दो! तुम्हारे रिश्तेदार नातेदार, बड़े साहब, छोटे साहब, लोहे वाले, सिमेंट वाले—ये लोग तो उस रोज पेट भरकर दावत खा गए हैं, उन्हें बुलाने की अब जरूरत नहीं है। पार्टी में सिर्फ चुने हुए लोगों को ही न्योता दो!"

बेचाराम बोले, "भई, मेरी राजे-रजवाड़ों और खान्दानी घरों से तो कोई जान-पहचान नहीं, खुशामदी तौर पर उन्हें न्योता भी नहीं भेज सकता। दो-एक मंत्री उपमंत्रियों के साथ परिचय है, उन्हें बुला सकता हूँ। गुहा साहब आपकी क्या राय है?"

कपोत गुहा बोले, "ऐरिस्टोक्रेटों को अभी रहने दीजिए, चन्द रोज के बाद वे खुद ही आपसे परिचित होने के लिए उतावले हो जायँगे। मेरा कहना यह है कि घर पर नामी-गरामी साहित्यिकों का एक जलसा कीजिए,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काफी जोरदार टी-पार्टी। अगर दो-एक सिंह मँगा लाने का इन्तजाम कर दिया जाय तो सभी उत्सुकता वश आयँगे।"

"क्या कह रहे हैं मिस्टर गुहा, सिंह कहाँ मिलेगा ?"

"सिंह नहीं समझे ? जिसे लायन कहते हैं। यानी खूब नामी-गरामी ज्ञानी व्यक्ति, जिन्हें सभी देखना चाहते हों।"

सुमन्त बोला, "लायन से लायनेस और भी बेहतर है। अगर दो-एक अव्वल नम्बर की सिनेमा-स्टार मँगवा सकें, मसलन ह्लादिनी मंडल और मराली बनर्जी—"

कपोत गुहा ने सिर हिलाते हुए कहा, पारिवारिक पार्टी में ऐसी सिंहनी लाना ठीक नहीं—अभी हमारा समाज इतना उदार नहीं बन पाया है। इसके अलावा साहित्यिकों में बहुत-से बूढ़े होंगे। वे संकोची होते हैं और उन्हें शायद कुछ परेशानी का अनुभव हो। साहित्यिक सिंहनी मिलतीं तो बेहतर था, लेकिन वे अब दुर्लभ हैं। अच्छा हाँ, पार्टी कब देना चाहते हैं आप ?"

सुमन्त और सुमित्रा ने कहा, "सरस्वती-पूजा के दिन पार्टी दीजिए—खूब रहेगा।"

कपोत गुहा बोले, "अंऽहंऽ, उस रोज नहीं हो सकता, साहित्यिक सुधी-जनों को विभिन्न स्थानों पर वाणी-वन्दना के हेतु जाना पड़ेगा। दो-तीन दिन बाद भी तो किया जा सकता है।"

बेचाराम ने कहा, "बहुत अच्छा, पच्चीस जनवरी को इतवार है; उसी दिन पार्टी दी जाय। किसे-किसे बुलाइएगा ?"

"शिंजनी से सलाह-मशविरा करके तालिका बनाऊँगा। ज्यादा नहीं—यही पच्चीस-तीस जनों से ही अच्छी खासी पार्टी जम जायगी। इस समय जिनके नाम मुझे याद पड़ रहे हैं—बताता हूँ। सुनिए ! बटेश्वर सिकदार और दामोदर नश्कर गल्प-सरस्वती—ये ही इस समय के लिटरेरी लायन है, इन दिनों सिंहों को बुलावाना ही पड़ेगा।"

सुमित्रा बोली, "सुनती हूँ कि उन दोनों में अनबन है।"

"उससे कोई नुकसान नहीं, यहाँ पार्टी में आकर वे कोई झगड़ तो सकेंगे नहीं। उसके बाद राजलक्ष्मी देवी साहित्य-भाष्वती को आमंत्रित करना पड़ेगा, वे सिंहनी न होने पर भी व्याघ्रिनी तो हैं ही। पुराने और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नये ढंग के दो-चार कवियों से काम बन जायगा—कवियों का आकर्षण कहानीकारों से काफी कम है। 'प्रगामिनी' पत्रिका के सम्पादक अनुकूल चौधरी जी को सभापति बनाया जाय। और हाँ, कालाचाँद चोंगदार को कैसे भुलाया जा सकता है?"

सुमन्त ने पूछा, "भला, वे कौन हैं?"

"अरे नहीं जानते? 'दुन्दुभी' पत्रिका के सम्पादक श्री चोंगदार जी!"

सुमित्रा बोली, "वह तो सुना है कि बड़ी रद्दी पत्रिका है।"

"कतई रद्दी नहीं, असंख्य पाठक हैं उसके। हर अंक में चुने-चुने नामी लेखकों को गालियाँ दी जाती हैं और लोग काफी आग्रह के साथ उन्हें पढ़ते हैं।"

"पाठक नाराज नहीं होते?"

"नाराज क्यों होने लगे। नामी व्यक्ति की निन्दा सुनना सभी को पसन्द है। उस जमाने में जो पत्रिकाएँ रवीन्द्रनाथ पर हमला करती थीं, उनके पाठकों की संख्या बढ़ जाती थी। कवि के भक्त पढ़कर कहते, हें हें हें देखो कैसी मजेदार बातें लिखी हैं। लेकिन कालाचाँद चोंगदार का एक प्रिन्सिपल है, छोटे-मोटे लेखकों की वह परवाह नहीं करते और उन बड़े-बड़े लेखकों पर भी कृपा नहीं करते, जो उन्हें नियमित रूप से सालाना वजीफा देते हैं।"

"सालाना वजीफा कैसा? ब्लैकमेल करता है क्या?"

"यही समझ लो! सुना है कि दामोदर नश्कर हर साल दुर्गा-पूजा के समय कालाचाँद को ढाई सौ रुपए देते हैं। उन्हें जो 'गल्प-सरस्वती' की उपाधि मिली है वह कालाचाँद के ही प्रयासों का फल है। बटेश्वर सिकदार जिद्दी और कंजूस आदमी हैं, एक पैसा भी गाँठ से नहीं जाने देते, इसलिए 'दुन्दुभी' के हर अंक में उन्हें गाली-गलौज मिलती है। लेकिन कालाचाँद भलाई भी तो करते हैं। तीन-चार छोकरों ने कुछ अश्लील किताबें लिखी थीं, लेकिन उनकी कोई खास बिक्री न हो सकी थी। इन लोगों ने कालाचाँद से अनुरोध किया, कृपया अपनी पत्रिका में डटकर हमारे खिलाफ गाली-गलौज छापिए। हमारी रचनाओं से चुन-चुनकर उद्धरण भी दीजिए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और देखिए अधिक की हैसियत नहीं—सिर्फ पचास रुपये सेवा में भेंट कर रहे हैं, स्वीकार कीजिए ! कालाचाँद राजी हो गए। नतीजा यह हुआ कि उनकी किताबों की बिक्री बढ़ गई। फिर 'दामामा' पत्रिका के सम्पादक गोराचाँद साँपुई को भी बुलाना पड़ेगा। वह छोकरा ब्लैकमेल नहीं करता, पर धनी लेखकों का रुपया खाकर उनकी वाहियात रचनाओं की प्रशंसा छापता है। इसके अलावा हर अंक में कालाचाँद को डटकर गालियाँ देता है। अच्छा मैं इन बातों का जिक्र खत्म करता हूँ और कल ही तालिका बना डालूँगा—किन्हें बुलाना होगा, क्या खिलाना होगा, बैठने का कैसा बन्दोबस्त होगा—सब तय कर डालूँगा।

निश्चित दिवस पर प्रीति-सम्मिलन या टी-पार्टी का आयोजन किया गया। कोठी के सामने के मैदान में शामियाना लगाया गया, छोटी-छोटी मेजों के चारों ओर कुर्सियाँ सजाकर मेहमानों की चाय का इन्तजाम किया गया। शामियाने की वेदी पर सभापति अनुकुल चौधरी, दो सिंह यानी प्रधान अतिथिद्वय बटेश्वर और दामोदर, राजलक्ष्मी देवी तथा दूसरे अनेक विशेष व्यक्ति बैठेंगे। सभा में विशेष कोई भाषण नहीं होगा, सिर्फ बेचाराम अतिथियों का स्वागत करेंगे। उसके बाद अनुकुल चौधरी गृह-स्वामी का कुछ गुण-कीर्तन करते हुए सबसे उनका परिचय करा देंगे। उम्मीद की जाती है कि बटेश्वर और दामोदर भी बेचाराम के कृतित्व और दानशीलता पर कुछ कहेंगे।

सभापति एवं दो सिंहों के लिए तीन अच्छी कुर्सियाँ मँगाई गई, एक मैसूर के चन्दन की बनी हुई और दो काश्मीरी अखरोट की यानी वालनट लकड़ी की। पहली कुर्सी पीछे की ओर काफी ऊँची और नक्काशीदार थी—इसलिए काफी भड़कीली लगती थी। कपोत गुहा ने एक ही किस्म की तीन कुर्सियाँ लाने की कोशिश की थी, पर कहीं से जुटा नहीं पाये। शामियाने के पीछे चड़कडांगा स्ट्रिंग बैंड के तीन बेलावादक तैयार थे। वे बड़े हल्के गत पर ही छेड़ेंगे ताकि मेहमानों की बातचीत में कोई खलल न पड़े।

मेहमान धीरे-धीरे आ पहुँचे। बेचाराम, उनका लड़का और लड़की,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कपोत और शिंजिनी ने मेहमानों को आदर पूर्वक बिठाया। बेचाराम की गृहिणी सुबाला किसी हालत में भी इस दल के साथ टिकने को तैयार न हुईं। वे कुछ देर तक राजलक्ष्मी देवी से फुसफुसाती रहीं, लेकिन उसके बाद वहाँ से खिसक गईं और बीच-बीच में झाँककर देखने लगीं। करीब-करीब सब लोगों के आ जाने के बाद बटेश्वर सिकदार और दामोदर नश्कर पहुँचे। संयोग से इनका आगमन एक साथ हुआ—हर एक के साथ कुछ कम आयु के विशेष भक्त भी आये। बेचाराम और कपोत ने सम्मान सहित उनकी आवभगत की और दोनों महामान्य सिंहों को शामियाने के अन्दर ले गए।

सभापति अनुकुल चौधरी पहले से आये थे। वे एक काश्मीरी कुर्सी पर बैठ गए थे। बटेश्वर उम्र में बड़े हैं इस कारण कपोत गुहा ने उन्हें चन्दन की कुर्सी पर बिठा दिया। सुमित्रा ने उनके गले में रजनीगन्धा का एक मोटा-सा हार पहना दिया। बगल की काश्मीरी कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कपोत गुहा ने दामोदर से कहा, "जी तशरीफ रक्खें।" दामोदर बैठे नहीं, मुँह ऊँचा किये खड़े रहे। कपोत गुहा ने फिर निवेदन किया, "कृपया आसन ले लें, श्रीमान्!" दामोदर ने भौंहें सिकोड़कर जवाब दिया, "उस कुर्सी पर मैं नहीं बैठ सकता।"

सभा में एक खुस-पुस शुरू हो गई। चन्द मेहमान दोनों सिंहों की ओर बढ़ आए। 'दुन्दुभी' सम्पादक कालाचाँद चोंगदार बोले, "इस दो नम्बर कुर्सी पर दामोदरबाबू कतई नहीं बैठ सकते, उससे उनकी मर्यादा की हानि होगी—आप ही इस समय के साहित्य-सम्राट् हैं। बटेश्वर बाबू की ओर मैं कटाक्ष नहीं कर रहा हूँ पर हम यही चाहते हैं कि वे अच्छी कुर्सी दामोदरबाबू के लिए छोड़ दें।"

'दामामा'-सम्पादक गौरचाँद साँपुइ चिल्लाकर बोल पड़े, "खबरदार बटेश्वरबाबू, उठिएगा मत, डटकर बैठे रहिए! इस समय के प्रतिपक्षशून्य सम्राट् आप ही हैं।"

कालाचाँद बोले, "नानसेन्स! दामोदर के पास 'गल्प सरस्वती' उपाधि है, बटेश्वर के पास क्या है, ठेंगा?"

गौरचाँद बोले, "यह बात है? अजी भूपेश, राजेन, अवनी, नूरुद्दीन,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नवकेष्ट, कहाँ गये जरा आगे तो आना ! हम छः कहानीकार, उपन्यासकार, लघु-निबन्धकार, कवि, सम्पादक और आलोचक—हम अखिल बंगाल के साहित्यिक वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में इस सभा में इसी क्षण श्रीयुत बटेश्वर सिकदार जी को उपाधि दे रहे हैं—अप्रतिद्वन्द्वी गल्प-शिल्प-सम्राट् । जिसे हिम्मत हो विरोध करे । मेरे पास दस्ताना नहीं, बाएँ पैर का एक मौजा खोलकर मैं चुनौती दे रहा हूँ कि मेरे साथ जो लड़ना चाहता है वह मेरा मौजा उठा ले। मैं हर तरह से तैयार हूँ—घूंसाबाजी, लाठी, ईंट; जैसी जिसकी मर्जी हो ।"

मौजा उठाने के लिए कोई आगे न बढ़ा। गौरचाँद ने कहा, "नूरू भाई जोर से शंख बजाओ । नूरुद्दीन के मुँह से विजय-सूचक नकली शंख-ध्वनि निकली—'ओं ओं ओं ।'

कालाचाँद ने चिल्लाकर कहा, "बटेश्वरबाबू अगर आप अपनी खैरियत चाहते हैं तो कुर्सी छोड़ दीजिए ! क्या, नहीं उठिएगा ? और दामोदरबाबू, खड़े क्यों हैं, अपने हक के आसन पर कब्जा कीजिए, उसी कुर्सी पर बैठिए !"

दामोदर बोले, "उसमें बैठने की जगह कहाँ ?"

कालाचाँद और उनके दो दोस्त दामोदर को पकड़कर बटेश्वर की गोद में बिठा गए और बोले, "खबरदार उठिएगा नहीं, हम लोग आपको बैक करेंगे । यह बूढ़ा बटेश्वर कितनी देर तक आपकी ढाई मन की लाश को ढो सकेगा, देखना है ।"

शोर-गुल शुरू हो गया । राजलक्ष्मी साहित्य-भास्वती बोलीं, "छी छी, आप लोगों को शर्म नहीं आती, बच्चों की तरह झगड़ रहे हैं ! दोनों ही कुर्सी से उतर जाइए, आइए हम लोग सभी चाय की मेज पर जा बैठें ।"

कालाचाँद ने कहा, "किसी की बात मत सुनिए दामोदरबाबू, बटेश्वर की गोद में डटकर बैठे रहिए !"

गौरचाँद बोला, "बटेश्वर बाबू आप ढकेलकर दामोदर को गिरा दीजिए, चिकोटी काटिए, गुदगुदी लगाइए !"

समागत अतिथियों में से एक दल बटेश्वर की ओर से और दूसरा दामोदर के पक्ष में हो-हल्ला मचाने लगा । अन्त में मार-पीट की नौबत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आने लगी। अनुकुल चौधरी ने हाथ जोड़कर दोनों दलों को शान्त करने की कोशिश की, पर कोई नतीजा न निकला।

कपोत गुहा ने चुपके से बेचाराम से कहा, "हाल-चाल कुछ ठीक नहीं लग रहा है, पुलिस में इत्तला कर दी जाय। आपका क्या विचार है?"

सुमन्त बोले, "अंऽहंऽ, बल्कि फायर ब्रिगेड में टेलीफोन करता हूँ, होज पाइप से पानी की धार पड़ेगी तो ये दोनों सिंह और सभी सियार ठंडे पड़ जायँगे।"

सुमित्रा बोली, "इन सब बातों की जरूरत नहीं, बड़ा भद्दा-सा स्कैंडल हो जायगा। लड़ाई रोकने का इन्तजाम मैं कर रही हूँ।" यह कहती हुई वह सभा छोड़कर झटपट मकान के फाटक के बाहर चली गई।

बेचाराम सरकार की कोठी की बगल में एक खाली जमीन पड़ी थी, जिस पर पंडाल खड़ा करके मुहल्ले के जय-हिन्द क्लब के लड़के बड़ी ही धूम-धड़ाके के साथ वाणी-वन्दना कर रहे थे। तीन दिन पहले पूजा खत्म हो चुकी थी, लेकिन उत्सव का आनन्द दीर्घस्थायी करने के लिए अभी तक विसर्जन नहीं किया गया था। आज शाम को उसका प्रबन्ध हो रहा था। पंडाल से देवी मूर्ति बाहर निकाली गई थी। लाउड-स्पीकर जमीन पर उतार लिया गया था, लेकिन बिजली का तार उससे अभी हटा नहीं था, अब भी लगातार रेकार्ड-संगीत का वह उद्गार कर रहा था। सामने एक लारी खड़ी थी। चन्द लड़के और लड़कियाँ चेहरा चढ़ाये तैयार खड़े थे, वे चलती लारी पर देवी-प्रतिमा के सामने नाचेंगे।

इस जय-हिन्द क्लब की पूजा में बेचाराम बाबू ने चन्दे में मोटी रकम दी थी और अन्य बहुत-सी सहायताएँ की थीं, इस कारण क्लब के लड़के इस घर के सारे लोगों की बड़ी इज्जत करते थे। सेक्रेटरी प्राणधन नाग के पास आकर सुमित्रा बोली, "देखिए, घर पर बड़ी मुसीबत है, आप लोग हमारी सहायता चाहिए—"

प्राणधन बेचैनी से बोल पड़ा, "क्या करना है हुक्म दीजिए, हम हर काम के लिए तैयार हैं—हम लोग भरसक प्रयत्न करेंगे यानी जान लड़ा-कर।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुमित्रा ने संक्षेप में बताया कि उनकी कोठी में पार्टी है। उसमें कुछ गुंडे मार-पीट करने पर तुले हुए हैं। दोनों सिंह यानी प्रधान अतिथिद्वय एक ही कुर्सी पर जमकर बैठे हैं, दोनों पर जिद्द सवार हो गई है कि उनमें से कोई भी कुर्सी का कब्जा नहीं छोड़ेगा। उन्हें वहाँ से खिसका देना बेहद जरूरी है, वर्ना कुछ छीछालेदर होकर रहेगी।"

प्राणधन बोला, "अच्छी बात, आप फिक्र न कीजिए! पहले आपके दोनों सिंहों को ठिकाने लगाऊँगा, उसके बाद हम लोगों का विसर्जन होगा। माँ सरस्वती घंटा भर इन्तजार कर लेंगी। अरे भूतो, बेनी, मटरा, हेबो, झटपट मेरे साथ चलो! निरंजन सिंह लारी स्टार्ट करो हम अभी आ रहे हैं।"

चार अनुचरों के साथ फुर्ती से शामियाने के अन्दर दाखिल होकर प्राणधन बोला, "क्यों जी सिंह महाशयगण, आप लोग सुनते हैं? काइंड्ली कुर्सी से उतरिए, क्यों जगहँसाई करते हैं?"

कालाचाँद और गौरचाँद एक साथ बोल पड़े, "खबरदार कुर्सी न छोड़िएगा!"

प्राणधन बोला, "यह बात है? अबे भूतो, बेनी, मटरा और हेबो फौरन आगे तो बढ़ आओ। सिंह महाशयो! अगर आप किसी भी हालत में उतरना पसन्द न करते हों तो दोनों ही कुर्सी के हाथ कसकर पकड़े रहिएगा और टाइट होकर बैठे रहिए।"

लमहे-भर में प्राणधन के जत्थे ने दोनों सिंहों के साथ कुर्सी बाहर लाकर लारी पर लाद दी। साथ-ही-साथ वे खुद भी सवार हो गए और बोले, "चलाओ निरंजन सिंह सीधा अलीपुर के चिड़ियाघर की तरफ।" लाउड स्पीकर उस समय भी जमीन पर पड़ा गरज रहा था—'अतो काछा-काछि बंधु थाका कि भालो-ओ-ओ।'

चिड़ियाघर के सामने पहुँचकर लारी रुक गई। बटेश्वर और दामोदर दोनों को मुक्ति देकर प्राणधन ने हाथ जोड़े और कहा, "कुछ बुरा न मानें जनाब! सुना कि आप लोग विश्व-विख्यात व्यक्ति हैं, सिर्फ दो गुंडों के चक्कर में आकर आप लोग कुछ बौरा गए थे। सब-कुछ तकदीर का खेल है दादा, आप भला क्या करें? घबराइए मत, आप दोनों के ड्राइवरों

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को बता दिया गया है, वे आधे घंटे में मोटर लेकर यहाँ पहुँच जायँगे। उतनी देर आप दोनों जरा गप-शप लड़ाइए, दो-चार दुःख-सुख की बातें कीजिए। अच्छी बात, आज्ञा दीजिए, नमस्कार! "

सिंह-समागम का अकस्मात् अन्त देखकर प्रीति-सम्मेलन के सभी लोग भौंचक रह गए। कालाचाँद और गौरचाँद मामला बिगड़ते देखकर अपने दल के साथ नौ दो ग्यारह हो गए। अतिथियों में से भी बहुत लोग ऊबकर चले जा चुके थे।

पर आयोजन बिलकुल चौपट हो गया—ऐसा नहीं कहा जा सकता। अतिथियों में अनुकुल चौधरी, राजलक्ष्मी देवी आदि चौदह-पन्द्रह ठंडे-दिमाग वाले स्थितप्रज्ञ व्यक्ति भी थे। वे टिके रहे। सभी ने बेचाराम बाबू से आन्तरिक हमदर्दी जताई, बटेश्वर-दामोदर की छीछालेदरी और कालाचाँद-गौरचाँद की गुंडई की काफी निन्दा की। बंगला साहित्य के भविष्य के बारे में नाउम्मीदी जाहिर की। मछली की कचौड़ी, मांस के चाप, भुना चिउड़ा, केक, सन्देश आदि पर्याप्त मात्रा में खाया और चाय पी। इसके उपरान्त गृह-स्वामी को धन्यवाद और फिर आने का वचन देकर विदा ले ली।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ७ :

कामरूपिणी

जाड़े का मौसम, तिपहर का समय। गंगा के पास शिवपुर बोटनिकल गार्डन के एक मैदान में एक दल दरी बिछाये बैठा था। दल में थे—

प्रवीण अध्यापक निकुंज घोष, उनकी पत्नी उर्मिला, उनकी बेटी इला, जिसकी उम्र पन्द्रह के लगभग।

निकुंज के साले नवीन, अध्यापक वीरेन दत्त की पत्नी सुरुचि और बेटा नुटू, जिसकी उम्र छः साल।

वयोवृद्ध शीतल चौधरी। वीरेन दत्त के साथ इनका कोई दूर का रिश्ता है। छोटे-बड़े सभी इन्हें शीतू मामा कहकर पुकारते हैं।

वीरेन दत्त के आने में जरा देर थी। उनके नवविवाहित मित्र मेजर सुकोमल गुप्त हाल में अपनी पत्नी और सास के साथ आसाम से कलकत्ता आये थे। वीरेन उन्हें लेकर आने वाला था।

शीतल चौधरी बोले, "यह तुम लोगों की कैसी पिकनिक है ? खाने का तो कुछ भी सामान साथ नहीं लाये, क्या सिर्फ हवा पीकर घर लौटना पड़ेगा ?"

सुरुचि बोली, "घबराइए मत शीतूमामा ! उनके साथ सभी कुछ आ जायगा, पत्नी व सास सहित मेजर सुकोमल गुप्त और काफी खाने का सामान। गुप्त की बीबी और सास अपने हाथों से सब खाना बनाकर लायेंगी। शादी की दावत जो बाकी है हम लोगों की—वह यहीं पूरी होगी।"

नुटू बोला, "ओ शीतूमामा, कल जो कहानी कह रहे थे सो अभी खत्म नहीं हुई। खाने में तो अभी देरी है, उतनी देर में वह कहानी ही सुना दो !"

शीतूमामा बोले, "चलो सुनाता हूँ, सुनो ! उसके बाद राजा काफी धूम-धड़ाके के साथ शहनाई, भोंपू, तुरही, ढोल, नगाड़ा बजा-बजाकर जलूस के साथ गया। छोटी रानी से शादी की, और उसे राजमहल ले आया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पचासों शंख बज उठे, राजा की मौसी, बुआ, चाची, मामी सभी ने जीभ हिलाकर उलूक-ध्वनि की। बेचारी बड़ी रानी मारे अफसोस के अपने मुन्ने को लेकर नैहर चली गईं। वह छोटी रानी थी दरअसल राक्षसी। सात दिन भी न गुज़र सके थे कि राजा के पास खबर आई—'फीलखाने में हाथी मर रहा है, घुड़साल में घोड़ा, महज उनकी हड्डियाँ और दुम पड़ी हुई हैं।'

नुटू ने पूछा, "छोटी रानी शायद यह सब चबा नहीं पाती थी ?"

नुटू की माँ ने घड़की लगाई, "चुप रहो मुन्ना, ऐसी रद्दी कहानी सुनने की जरूरत नहीं। शीतू मामा आप ऐसे वाहियात किस्से क्यों सुनाते हैं ? इससे छोटे बच्चे के दिमाग पर बुरा असर पड़ता है।"

निकुंज घोष ने हँसकर कहा, "अरे नहीं नहीं। सभी देश की रूपक-कथाओं में ऐसे ही रोमांचक किस्से मिलते हैं। उससे छोटे बच्चों का कोई नुकसान नहीं होता। वे खूब समझते हैं कि सब कुछ मनगढ़न्त है। है न नुटू यही बात ?"

नुटू बोला, "जी ! मैं भी किस्सा गढ़ सकता हूँ।"

सुरुचि बोली, "बहरहाल, शीतूमामा आप ऐसे वाहियात और झूठे किस्से न सुनाया करें !"

शीतूमामा ने कहा, "अच्छी बात, जब माँ-जननी को एतराज है तो न सुनाऊँगा। नुटू, बेहतर है कि तू अपनी माँ से रामायण का किस्सा सुना कर, शूर्पणखा राक्षसी के बारे में ! काफी अच्छा और सच्चा किस्सा है। लेकिन एक बात तुम लोगों को जाननी जरूरी है। रूपक-कथा में सभी बातें झूठी होती हों—ऐसा नहीं। अफवाहों में भी सच्ची बातें कुछ होती ही हैं।"

निकुंज की पत्नी उर्मिला ने कहा, "क्यों शीतूमामा, भला आप राक्षसी छोटी रानी, पातालपुरी की राज-कन्या, सोने-चाँदी का काँटा, कामरूप-कामाक्षा की मायाविनी; जो भेड़ बना देती हैं—इन सबमें विश्वास करते हैं ?"

"कुछ-कुछ तो विश्वास करता ही हूँ, खास तौर से वह जो भड़ बनाने वाली बात तुमने कही।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकुंज-कन्या इला बोली, "भेड़ वाली बात जरा खोलकर ही सुनाइये न शीतूमामा !"

"नहीं, रहने दो। नुटू की माँ को जब एतराज है तो !"

निकुंज घोष बोले, "लोगों के कुतूहल को भड़काकर खामोश रहना ठीक नहीं—खलासा कह डालना ही बेहतर है।"

सुरुचि बोली, "अच्छी बात, शीतूमामा, भेड़ वाला किस्सा समझाकर सुनाइए; पर ज्यादा वाहियात बातें जो हों, उन्हें छोड़ दीजिएगा !"

शीतूमामा बोले, नहीं रहने दो। बल्कि जरा भगवद्-प्रसंग हो जाय। इला भाई, तुम एक रवीन्द्र-संगीत गाओ, वही 'माथा नत करे दाओ हे आमार चरण धुलार तले' (मेरा सिर नवा दो अपने चरण-धूलि के नीचे)।"

सुरुचि बोली, "इतना रूठना भी कुछ अच्छा नहीं शीतूमामा ! मुझे क्षमा कर दीजिए और अपना भेड़ वाला किस्सा सुनाइए।"

नुटू बोला, "पहले वह राक्षसी छोटी रानी वाला किस्सा होगा।"

सुरुचि बोली, "तू ठहर मुन्ना ! राक्षसी से भेड़ वाली अच्छी है। सुनाइए शीतूमामा !"

शीतल चौधरी सुनान लगे—

पच्चीस साल पहले की बात है। बलभद्र मर्दराज को तुम लोग नहीं पहचान सकोगे, उनके बाप रामभद्र मर्दराज बालेश्वर जिले के एक बड़े जमींदार थे, उन्हें राजा ही कहा जा सकता है। उस समय मैं उसकी रियासत में काम करता था। बलभद्र की उम्र तीस से नीचे थी। वह देखने-भालने में खूबसूरत थे, मिजाज के भी अच्छे थे और उन्हें शिकार का बड़ा शौक था। एक दिन उन्होंने मुझसे कहा, 'अजी शीतल बाबू सिर्फ सरिश्ते के काम में जुटे रहने से तुम्हारा दिमाग बिगड़ जायगा। पिता जी से कहकर तुम्हें बीस दिन की छुट्टी दिलाए देता हूँ, मेरे साथ किमापुर चलो, उत्तर-पूर्व आसाम में, बेहतरीन जगह है, शिकार की इफरात। वहाँ पर अट्ठारह-सिंघा हिरन मिलता है, डील-डौल में वे बहुत बड़े नहीं होते, पर दोनों सींग बड़े अजीब ढंग के होते हैं—हर एक में नौ-नौ शाखें।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

खर्च-वर्च सब बलभद्र का था, मेरा काम था सिर्फ मुसाहिबी का। चुनाँचे मैं राजी हो गया। किमापुर जगह कुछ दुर्गम थी। ब्रह्मपुत्र के उस पार भूटान राज्य से लगी हुई। वैसे कामरूप जिले में ही पड़ती है। रास्ता कुछ अच्छा नहीं—कठिनाई से मोटर चलती है। शिकारी के रूप में बलभद्र की बड़ी शोहरत थी, आसानी से ही आसाम गवर्नमेंट से हर किस्म के जरूरी परमिट उसे मिल गए। एक बड़ी-सी हडसन गाड़ी, खाने का काफी सामान, ड्राइवर और एक नौकर लेकर हम लोग किमापुर डाक-बंगले पर जा पहुँचे। रोज शिकार के लिए कोशिश की जाती, किस्म-किस्म के जानवर भी मिलते, पर अट्ठारहसिंघा हिरन एकदम दिखाई न पड़ा। वहाँ के लोगों ने कहा, 'इससे भी उत्तर की ओर जंगल में मिलेगा। कुछ दूर तक तो किसी तरह मोटर चलेगी फिर पैदल ही जाना पड़ेगा।'

सुबह आठ बजे हम लोग रवाना हुए। गाड़ी में बलभद्र, मैं, ड्राइवर कृपानसिंह और उसके बगल में एक भुटिया, जो हमारा गाइड था। रास्ता बेहद खराब था, दो बार टायर पंचर हुए, तीन मील जाने में ग्यारह बज गए। गर्मी भी काफी थी और भूख भी खब लगी थी।

हम लोग आराम के लिए जगह ढूँढ़ ही रहे थे कि पेड़ों की आड़ में एक छोटा-सा खूबसूरत बंगला दिखाई पड़ गया। हम लोगों के जरा आगे बढ़ते ही उस बंगले से एक अनोखी सुन्दरी निकली, डील-डौल में कोई खोट नहीं, काफी गोरी, नाक जरा चपटी और आँखें परवल की फाँकें तो नहीं मिर्चे की फाँकें जरूर थीं। हम लोगों ने नमस्कार करके अपना-अपना परिचय उन्हें दिया। सुन्दरी ने बताया कि उनका नाम मायावती कुरुंजी है, अभी अकेली ही हैं, उनकी साथिन मौसी नौकर को लेकर किमापुर हाट को गई हैं। मायावती ने ठेठ बंगला में ही बातें कीं, हालाँकि लहजे में कुछ असमिया रंग जरूर था। उनके सादर आह्वान से कृतकृत्य होकर उनका आतिथ्य स्वीकार कर लिया।

बलभद्र मर्दराज का हाव-भाव देखकर समझा जा सकता है कि वह इश्क में गोता लगा रहे हैं—उनका स्वर भर आया है। हमारे भुटिया गाइड लादेन गाम्पा ने चुपके-चुपके मुझसे कहा, "यह मेम-साहब अच्छी नहीं, यहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

से भाग चलिए ! लेकिन उसकी बातों की परवाह कौन करता ! बलभद्र प्रेम में सराबोर था और मैं भी मुग्ध हो गया था।"

मायावती ने हम लोगों का काफी सत्कार किया। बोलीं, "अट्ठारह-सिंघा हिरनों का सीजन यह नहीं, वे जाड़े में पहाड़ से उतरते हैं। मिस्टर मर्दराज और मिस्टर चौधरी, अगर दो महीने के बाद आवें तो अवश्य ही काफी शिकार मिलेंगे।" हम लोगों ने बार-बार धन्यवाद किया और दुबारा आने का वचन देकर विदा ली।

रास्ते में कुछ चिड़िया मारकर हम किमापुर डाक-बंगले में लौट आए। अगले रोज बलभद्र फिर मायावती से मिलने गया और अपनी तबीयत ठीक न होने की वजह से मैं बंगले में ही पड़ा रहा। दिन काफी ढल चुका था। बलभद्र ने लौटकर कहा, "सुनो शीतलबाबू, मैं उस मिस मायावती से शादी करूँगा, पन्द्रह दिन के बाद उसे कलकत्ता ले जाऊँगा। तुम कल ही चले जाओ और बालीगंज में एक अच्छा-सा मकान तय करके हम लोगों के लिए इन्तजार करो !"

मैंने बहुत समझाया, "अज्ञातकुलशीला से अचानक शादी कर लेना कुछ ठीक नहीं, उनके पिता भी ऐसा पसन्द नहीं करेंगे।" लेकिन बलभद्र ने कोई बात न सुनी, इसलिए मैं अगले ही रोज कलकत्ता के लिए रवाना हो गया।

पन्द्रह दिन बाद बलभद्र के ड्राइवर कृपान सिंह ने मुझे आकर खबर दी—बलभद्र अचानक गायब हो गया है, कोई नहीं जानता कि वह कहाँ गया है, मेमसाहब मायावती भी कुछ न बता सकीं। जिरह करने के बाद मालूम हुआ कि चार दिन पहले गाड़ी बिगड़ जाने से बलभद्र सुबह पैदल मायावती के पास गया था। शाम तक मालिक लौटे नहीं, यह पाकर अगले रोज कृपानसिंह पता लगाने निकला। वहाँ जाकर देखा कि सिर्फ मायावती और उसकी बूढ़ी मौसी है। वे लोग बोलीं, 'बलभद्र कल सवेरे बेशक आये थे पर यहाँ से वह कहाँ गये उन्हें नहीं मालूम।' कृपानसिंह ने और भी देखा कि बादामी रंग की एक मोटी-ताजी भेड़ बरामदे की खंबिया से बँधी खड़ी है और एक बेंत की टोकरी से भिगोया हुआ चना खा रही है।

सुरुचि बोली, "शीतूमामा, आप क्या यह कहना चाहते हैं कि वह भेड़ ही बलभद्र मर्दराज है ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मैं कुछ भी नहीं कहना चाहता। जो सुना था वही लफ़्ज-ब-लफ़्ज बता रहा हूँ, यकीन करना न करना तुम लोगों की मर्जी पर है।"

नुटू ने पूछा, "क्यों शीतूमामा, यह भेड़ चने क्यों चबा रही थी? वहाँ क्या घास नहीं मिलती?"

इला बोली, "समझे नहीं मुन्ना, ग्राम-फेडमटन बन रहा था। ओफ आप बाल-बाल बच गए . . . . शीतूमामा।"

ऐसे ही समय सुरुचि के पतिदेव वीरेन दत्त और उनके साथ दो महिलाएँ आ पहुँची। खाने की पिटारियाँ लिये दो नौकर भी आये। महिलाओं में एक की उम्र पचास के लगभग थी और दूसरी की यही कोई बाइस-तेइस। दोनों ही असामान्य सुन्दरियाँ थीं हालाँकि उनकी नाक और आँखें कुछ मंगोल नस्ल में पड़ती थी।

वीरेन दत्त ने परिचय कराया—"आप हैं सुकोमल गुप्त की श्वश्रुमाता मिसेज मायावती मर्दराज और आप सुकोमल की पत्नी मिसेज मोहिनी गुप्त। हम लोगों के आने में जरा देरी हो गई, क्योंकि ये लोग कई तरह के खाने बनाती रहीं।"

इला ने फुसफुसाकर कहा, "शीतूमामा यही मायावती आपके किस्से की मायावती हैं क्या?"

शीतूमामा ने कहा, "चुप, चुप!"

निकुंज घोष ने पूछा, "यहाँ मेजर गुप्त तो नहीं आये?"

मधुर स्वर में मोहिनी गुप्त बोलीं, "सुकोमल? उनकी बातें न कीजिए, पुअर फेलो। कहाँ गायब हो गया है कुछ मालूम नहीं।"

आतंक से इला बुदबुदा पड़ीं, "सत्यानाश!"

मायावती बोली, "मिलिटरी की नौकरी-जैसी वाहियात नौकरी और कोई नहीं, अचानक एक तार पाकर कुछ बगैर बताये ही वह चला गया है। आप लोग खाने बैठ जाइए, वर्ना सब कुछ ठंडा हो जायगा। मोहिनी और मैं परोस रही हूँ।"

वीरेन दत्त बोले, "शीतूमामा आप सारी चीजें बेहिचक खा सकते हैं। आपने मंत्र लिया है, निषिद्ध मांस नहीं खाते हैं इसलिए इन लोगों ने चिकैन छोड़ दिया है। कटलेट, फ्राइ, पाई, चौप, सींक कबाब सभी कुछ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पवित्र भेड़ के मांस का बना हुआ है—इन लोगों की स्पेशलिटी भेड़ ही है। हें हें हें, ये लोग तो कामरूप कामाक्षा की महिलाएँ हैं न ?"

इला बोल पड़ी, "हाय अम्मा !"

निकुंज घोष बोले, "क्यों आप लोग तो कुछ भी नहीं ले रही हैं।"

भायावती ने मुस्कराकर कहा, "हम लोग थोड़ी देर पहले ही खा चुके हैं।"

सिहरकर इला बोल पड़ी, "ईं हीं हीं, अरे दादा रे।"

अचानक सुरुचि खड़ी हो गई और बोली, "मुझे उबकाई-सी आ रही है, मैं जरा गंगा किनारे जा बैठती हूँ।"

उर्मिला बोली, "मेरा भी जी मचल रहा है, मैं भी जाती हूँ।"

इला अपनी माँ के साथ चली गई।

वीरेन घबराकर उनके पीछे-पीछे गया और बोला, "ये लोग छः बोतल सोडा भी साथ लाये हैं, जरा पीलो, नशा बन्द हो जायगा।"

"सुरुचि बोली, आक् थूः ! उन राक्षसियों का पानी तक न पिऊँ।"

घर लौटकर सब बातें सुनकर वीरेन बोला, "छी, छी, कैसी छीछालेदर की तुम लोगों ने। इसीलिए शास्त्र में कहा गया है 'स्त्रीबुद्धि प्रलयंकरी'। शीतूमामा की चंडूखाने वाली गप्प तुम लोगों ने सच मान ली। उसने खुद तो खूब डटकर खाया न।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ८ :

काशीनाथ का पुनर्जन्म

करीब डेढ़ सौ साल पहले की बात है। उस समय कलकत्ता के बंगाली हिन्दू समाज में विभिन्न परिवर्त्तन होने लगे थे, लेकिन उसके कोई लक्षण राघवपुर गाँव में नहीं दिखाई पड़ते थे। काशीनाथ सार्वभौम उसी गाँव के समाजपति थे। वह दिग्गज पंडित भी थे। उनकी सन्तान कलकत्ता, हुगली, वर्धमान, कृष्णनगर, मुर्शिदाबाद इत्यादि में बिखरी हुई थी। लेकिन वह खुद गाँव में ही रहते, जमींदारी देखते, तिजारत और देवसेवा भी करते और एक चतुष्पाठी का खर्च भी खुद ही चलाते।

एक रोज ढलती रात में उन्होंने स्वप्न देखा कि उनकी इष्टदेवी काली आविर्भूत होकर कह रही है: 'बेटा काशीनाथ ! तुम्हारी उम्र सौ साल पार कर गई है, तुम बहुत दिनों तक इहकाल का सुख-दुःख भोग चुके हो। अब और क्यों ? अब अपनी देह का त्याग करो !'

काशीनाथ बोले, 'हे माँ कैवल्यदायिनी, इस समय तो मैं मर नहीं सकता हूँ। मेरी चमचमाती गृहस्थी है, चौथी पत्नी अभी जीवित है। अट्ठारह पुत्र-कन्याएँ, एक सौ पच्चीस पौत्र-पौत्रियाँ, दौहित्र-दौहित्रियाँ हैं। प्रपौत्र-प्रदौहित्र इत्यादि शायद हजार तक पहुँच गए। उनमें से बहुत से मर-खप चुके हैं फिर भी अनेक जीवित हैं। इसके अलावा अनेक शिष्य मेरी चतुष्पाठी में पढ़ते हैं। मैं उन्हें पढ़ाता हूँ और उनका पालन भी करता हूँ। इन सब स्नेह-भाजनों का त्याग करना अत्यन्त कष्टकर है। तुम्हारे लिए मैंने बड़ा-सा मन्दिर बनाने का संकल्प किया है, उसका भी उद्यापन करना है। कलकत्ता का ईसाई-अनाचार अगर इस गाँव में प्रवेश करे तो उसे भी मुझे रोकना ही होगा। मेरे लड़कों से कुछ न होगा, वे खुदगर्ज हैं, अपने-अपने धन्धों में ही मशगूल हैं। उम्र ज्यादा होने के बावजूद मेरा शरीर अब भी मजबूत है। इसलिए कृपा करके मुझे दस साल और जीने दो !'

काली माँ भौं सिकोड़कर अन्तर्धान हो गई।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अगले रोज सबेरे काशीनाथ सार्वभौम की चौथी पत्नी रासेश्वरी ने कहा, "तुम्हें कुछ होश भी है कि आज तुम्हारे तीन प्रपौत्र पुत्रों और पाँच प्रदौहित्र पुत्रों का अन्नप्राशन है ? तुम झट नहा-धोकर सन्ध्या-जप कर लो ! तुम्ही को तो होम-यज्ञ करना होगा।"

गंगा-स्नान से लौटे तो कातरकंठ से काशीनाथ ने कहा, "गृहिणी, काले साँप ने मुझे डस लिया है, मेरी मौत सिर पर सवार है। माँ करालवदनी, यह क्या किया ! हाय ! हाय ! संकल्पित कार्य खत्म हुए बिना ही मुझे परलोक भेज रही हो !"

शास्त्र में कहा जाता है कि जिसकी जैसी भावना होती है, उसे वैसी ही सिद्धि भी मिलती है। काशीनाथ अगर श्रीरामपुर के पादरियों के चंगुल में फँसकर ईसाई बनते तो मौत के बाद उन्हें अन्तिम न्याय की प्रतीक्षा में दीर्घ समय तक जड़ीभूत पड़ा रहना पड़ता, जैसे रेंगने वाले जीव जाड़े भर पड़े रहते हैं। लेकिन सौभाग्य से वे अति निष्ठावान हिन्दू थे, इसलिए उनका पारलौकिक परिणाम झट संभव हुआ।

मृत्यु के बाद ही काशीनाथ जी ने अनुभव किया कि वे सूक्ष्म शरीर धारण करके शून्य में अवस्थान कर रहे हैं और उनकी प्राणहीन देह आँगन में तुलसी-मंच के सामने पड़ी है। उनकी पत्नी और रिश्तेदार चारों ओर विलाप कर रहे हैं और पड़ोसी कह रहे हैं, ओह एक वज्रपात हो गया। क्षण-भर में प्रचंड गति से व्योममार्ग में बहकर यमलोक पहुँच गए।

यम ने कहा, "आओ जी काशीनाथ। तुम्हारी सुकृति-दुष्कृति का न्याय और उसीके उपयुक्त व्यवस्था भी मैंने कर रखी है। संक्षेप में कहता हूँ; सुनो। पुण्यकर्म की तुलना में तुम्हारे पापकर्म कम हैं। रामगति, भट्टाचार्य की जमीन के थोड़े हिस्से पर तुमने अन्याय से दखल किया था, तीन बार अदालत में झूठी कसमें खाईं, पहली और बीच की उम्र में मित्र-पत्नी और कुछ वधूवत् नारियों पर बुरी नज़र डाली थी, चूहे की नाईं बहुत-सी सन्तानें पैदा की थीं। और अन्तिम दिनों तक धन-सम्पदा की चिन्ता में मग्न थे। इसके अलावा और जो कुछ भी किया, सभी सत्कार्य हैं। नियमित रूप से दुर्गोत्सव आदि किया था, गंगा-स्नान, तीर्थ-भ्रमण, व्रत उपचार इत्यादि और ब्राह्मण के सभी कर्तव्य तुमने पालन किये थे—अखाद्यों का कदापि सेवन नहीं किया। दुष्कृतियों के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिए तुम पचास साल नरकवास करोगे और उसके बाद पुण्य कार्यों के फल-स्वरूप एक सौ साल स्वर्गवास करोगे। अच्छा, अब जाओ, जाकर अपना कर्मफल भुगतो !"

निश्चित समय तक नरकवास और स्वर्गवास के अन्त में काशीनाथ फिर यम के पास बुलाये गए। यम ने कहा—"अजी काशीनाथ, अपने प्राक्तन कर्मों के फल तुम भुगत चुके हो। अब तुम्हें धरती पर लौट जाना है। विधाता तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं। तुम अपने अभीष्ट वंश में जन्म ले सकते हो ! बोलो, किस प्रकार का जन्म चाहते हो ? धनी बनिए का वंशधर बनना चाहते हो या दरिद्र ज्ञानी धर्मात्मा के रूप में 'शुचिनां श्रीमतां गेहे' ?"

काशीनाथ ने जवाब दिया—"धर्मराज मरते समय मेरी बहुत-सी कामनाएँ अतृप्त रह गई थीं। कृपया ऐसा बन्दोबस्त कीजिए, जिससे अपने मौजूदा वंशधर के ही घर लौट सकूँ। मेरे प्रपौत्र का पुत्र चिरंजीव भवानी-चरण मेरा अतिशय स्नेहभाजन था। उसकी सन्तान बनाकर मुझे धराधाम भेज दीजिए !"

यम ने कहा, "क्या कह रहे हो जी काशीनाथ। जीवित समय में ही तुमने अपनी पाँचवी पीढ़ी तक देखी थी। तुम्हारी मृत्यु के बाद डेढ़ सौ साल गुज़र चुके हैं। यानी पूरी-की-पूरी छह पीढ़ियाँ ! अब तुम्हारा जो वंशधर है वह तुम्हारा सपिंड भी नहीं। उसके साथ तुम्हारा रिश्ता ही क्या ? उसका पुत्र बनकर जन्म पाने से तुम्हारा क्या फायदा होगा ? और भी तो अच्छे-अच्छे वंश हैं।"

काशीनाथ ने कहा,—"हे प्रभो, कृपया मुझे उस ग्यारहवीं अधस्तन पीढ़ी के वंशधर के रूप में ही भेज दीजिए ! व्यवधान कितना ही रहे, वह मेरी तथा भवानीचरण की सन्तान ही तो है। वह मेरे अत्यन्त स्नेह का पात्र है। उसे देखने के लिए मैं अधीर हूँ।"

"तुम उसे पहचानोगे भी तो किस तरह ? तुम्हारी मौजूदा स्मृति तो तब नहीं रहेगी। ज्ञानहीन क्षुद्र शिशु के रूप में पैदा होकर तुम धीरे-धीरे बड़े होगे। ज्ञानार्जन भी करोगे, लेकिन विगत काल के साथ तुम्हारे नव जीवन का कोई योग-सूत्र नहीं रहेगा।"

"प्रभो, मेरी प्रार्थना की ओर ध्यान दीजिए ! नारी गर्भ में नौ महीने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दस दिन रहने के बाद शिशु की तरह मैं भूमिष्ठ नहीं होना चाहता। ज्ञानवान जातिस्मर बनाकर ही मुझे भेज दीजिए !"

"मरते समय तो तुम्हारी उम्र सौ साल से जरा ज्यादा हो गई थी। वही उम्र लेकर क्या फिर जन्म लेना चाहते हो ?"

"जी नहीं। जरा जीर्ण स्थविर बनकर ही अगर धरा पर जाऊँ, तो नव जन्म के आनन्द का रस कितने रोज के लिए पाऊँगा ? मुझे पच्चीस-तीस साल का नौजवान बनाकर भेज दीजिए !"

"तुम्हारी अभिलाषा बड़ी अजीब है। गर्भवास नहीं करोगे, युवा के रूप में नवजन्म प्राप्त करोगे, पूर्वस्मृति विद्यमान रहेगी, वर्त्तमान वंशधर के गृह में अचानक आविर्भूत होओगे ! यही तुम चाहते हो न ?"

"जी हाँ !"

"अच्छा, ऐसा ही होगा। मैं भी देखूँगा इसका फल क्या होता है। तुम्हारा गोत्र क्या है ?"

"भरद्वाज।"

यमराज क्षण-भर के लिए ध्यानमग्न हो रहे। उसके बाद बोले—"धरा-धाम पर बहुत-से सामाजिक परिवर्त्तन हो गए हैं। तुम अगर स्वाभाविक नियम से शिशु के रूप में भूमिष्ठ होते, तो धीरे-धीरे वर्तमान हालत के आदी हो जाते। लेकिन अदृष्टपूर्व समाज में अचानक टपक पड़ने से किसी विपदा में फँस सकते हो। तुम्हारी असुविधाएँ बहुत-ज्यादा न हो जायँ, इसलिए मैं भरसक इन्तजाम कर रहा हूँ।"

यम ने अपने एक दास से कहा—"आज आधी रात को यह जीवात्मा तीस साल के नौजवान के रूप में धराधाम लौट जायगी। इसे पश्चिमी बंगाल की आधुनिक भाषा सिखा दो और कुछ अपभ्रष्ट अंग्रेजी और हिन्दी भी। वर्त्तमान युग की उपयोगी पोशाक, बिल्कुल जरूरी दूसरे सामान और काफी धन भी उसे दे दो। एक निष्क्रान्ति टिकिया भी दे देना ! उसके बाद कलकत्ता नगरी में ले जाकर श्री मधुसूदन रोड पर तीन नम्बर मकान के फाटक के सामने इसे सोती हालत में छोड़ आओ ! अजी काशीनाथ, तुम्हारे वंशधर चक्रधर मुकर्जी के पास तुम्हें भेज रहा हूँ। तुम्हारा पुराना नाम ही तुम्हारे साथ रहेगा। मगर यह देखो कि वर्त्तमान समाज-व्यवस्था तुम्हारे लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तकलीफदेह हो और किसी कदर तुम बरदाश्त न कर सकते हो तो निष्क्रान्ति टिकिया ले लेना ! बस, तुम यमलोक में वापस आ जाओगे और फिर तुरन्त सनातन रीति से जन्म पा सकोगे ।"

चक्रधर मुकर्जी धनी व्यक्ति थे । वास्तुविवर्धन कारपोरेशन के मैनेजिंग डिरेक्टर थे और तीन नम्बर मधुसूदन रोड पर उनकी बड़ी-सी कोठी थी । सुबह आठ बजे से पहले वह बिस्तर छोड़कर उठते नहीं थे, लेकिन आज सवेरे ही उनकी बीबी ने धक्का-वक्का देकर उन्हें जगा दिया । चक्रधर ने पूछा—"क्या हुआ है ?"

"नीचे शोर-गुल हो रहा है । सुन नहीं रहे हो ? बरामदे में खड़े होकर पता लगाओ कि हुआ क्या है ? मुझे तो डर लगा रहा है ।"

चक्रधर ने बरामदे से देखा कि फाटक के सामने बहुत-से लोग इकट्ठे होकर बातचीत कर रहे हैं ।

उन्होंने पूछा—"क्या हुआ है लालबहादुर ?"

दरबान लालबहादुर बोला—"कोई एक बाबू फाटक के सामने पड़ा है । जिन्दा है या मर गया पता नहीं चलता ।"

चक्रधर ने नीचे उतरकर देखा कि ऐन उनके मकान के फाटक के सामने एक अजनबी सिरहाने एक चमड़े का बैग रखे बेहोश लेटा हुआ है । कई दफा जोर से धकेलने पर उस आदमी ने आँखें झिपझिपाकर देखा । उसके बाद धीरे-धीरे उठकर बैठा । जमुहाई लेकर उँगली चटकाते हुए वह बोला—"तारा ब्रह्ममयी करालवदनी ! कहाँ ला पटका माँ ?

चक्रधर ने कहा—"कौन हो जी तुम ? अब नशा छूटा ? क्या लिया था, शराब या चंडू ?"

"मैं श्री काशीनाथ मुखोपाध्याय सार्वभौम हूँ । फिर आ पहुँचा हूँ । तुम ही चक्रधर हो न ? चिरंजीव भवानीचरण के वंशधर ? अहा, कितने बड़े हो गए हो ! कमरे में चलो बेटा, सारी बातें बताता हूँ ।"

काशीनाथ की आत्म-कथा सुनकर चक्रधर ने निश्चय किया कि यह आदमी नशेबाज नहीं, झूठा या फरेबी भी नहीं, पर इसका दिमाग जरूर खराब है । पूछा—"तुम्हारे उस बैग में क्या है ?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"मुझे तो नहीं मालूम, तुम्हीं खोलकर देखो ! यह रही मेरे जनेऊ में बँधी चाभी, खोल लो !"

चक्रधर ने बैग खोला। चन्द धोतियाँ, कुर्त्ते, बनियाइनें, एक अरंडी का चदरा, एक जोड़ा चप्पल, एक अंगोछा, शीशा-कंघी इत्यादि। और सबसे नीचे एक पोर्ट फोलिओ रखखा था। उसे खोलकर चक्रधर ने आश्चर्य करते हुए देखा कि उसमें करीब पाँच लाख रुपए के सरकारी कागज और अच्छे-अच्छे शेयर, नकद दो हजार रुपए के नोट और दस रुपए की रेजगारी रखी थी।

"सभी तुम्हारे नाम से हैं। कैसे मिले ?"

"कुछ भी नहीं मालूम बेटा, सभी कुछ जगदम्बा की लीला है और यमराज का इन्तजाम।"

चक्रधर ने बहुत देर तक सोचा। यह आदमी पागल होने पर भी बातें सोच-समझकर करता है। इसे हाथ से गँवाना नहीं चाहिए। घर ही पर रखना होगा, इलाज भी कराना होगा। उम्र भी कुछ ज्यादा नहीं ? ज्यादा-से-ज्यादा तीस होगी। उसकी इकलौती बेटी की शादी हो गई थी। लेकिन चन्दना तो है। काशीनाथ के साथ उसकी शादी कर देने से उस अनाथ लड़की की जिन्दगी अच्छे ढर्रे से लग जायगी। पाँच लाख रुपयों का इनवेस्टमेंट क्या कोई मामूली बात है ? यह आदमी अगर तीन साल पहले आता तो चक्रधर अपनी बेटी के साथ इसकी शादी कर देता।

चक्रधर ने कहा, "सुनो जी काशीनाथ ! तुम मेरे पूर्व पुरुष होने पर भी फिलहाल मुझसे बहुत छोटे हो। तुम्हारी उम्र शायद तीस होगी और मेरी साठ। तुम्हारा इतिहास मैंने सुना, पर किसी और से न बताना ! वर्ना लोग तुम्हें पागल ठहरायँगे। तुम्हारा परिचय यों होगा—तुम मेरे रिश्तेदार हो, बचपन में देहात से एक संन्यासी के साथ भाग गए थे. अब संन्यास से जी ऊब जाने से मेरे आश्रय में आये हो। तुम मुझे चाचा जी कहकर पुकारोगे और मैं तुम्हें काशी बेटा कहकर पुकारूँगा। अपनी जायदाद के बारे में खबरदार कभी किसी से कुछ न कहना ! समझे ?"

काशीनाथ ने कहा—"हाँ समझा। लेकिन तुम्हारे घर पर मैं कैसे रहूँ ? देखता हूँ कि तुम म्लेच्छ बन गए हो। प्याज की बू आ रही है। बगल की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जमीन पर मुर्गे चर रहे हैं। एक प्रौढ़ा को देखा चप्पल पहने चटर-पटर जीने से उतर आई, सिर पर घूँघट नहीं। मेरी ओर घूरकर देख रही थी।"

"वे तुम्हारी चाची जी हैं।"

"ओह, अच्छा ठीक है। लेकिन औरत होकर जूता क्यों पहनती है ? घोर कलजुग है।"

"ठीक कहा बेटा, घोर कलजुग है। इसी कलजुग के साथ तुम्हें कदम मिलाकर चलना पड़ेगा !"

"तुम शायद मुसलमान बावर्ची का पकाया खाना खाते हो ? मैं मर भी जाऊँ, पर वह नहीं खा सकता।"

"नहीं, नहीं बावर्ची तो है, पर मुसलमान नहीं। हरिजन है, जात से चमार है।"

"राधामाधव कहो ! मैं अपने हाथ से पकाकर खाऊँगा। आज सिर्फ फलाहार करूँगा। मेरे रहने का अलग बन्दोबस्त कर दो !"

"अच्छी बात, मेरे मकान के नीचे की मंजिल के पूरब वाले हिस्से में तुम रहोगे। एकदम अलग और एकान्त।"

चक्रधर ने पुकारा—"चन्दना, ओ चन्दना !"

एक लड़की कमरे में आई। चक्रधर ने कहा—"यह मेरी भतीजी है। प्रणाम कर, यह तेरा काशी भैया है, मेरे दूर के रिश्ते का भतीजा।"

चन्दना पैर छूकर चली गई। काशीनाथ बोले, "तुम लोगों का हाल-चाल कुछ समझ में नहीं आ रहा है। लड़की की माँग में सेंदुर क्यों नहीं है ? क्या इसका भाग्य फूट चुका है ?"

चक्रधर ने कहा—"नहीं, नहीं उसकी तो अभी शादी ही नहीं हुई, बड़ी अच्छी लड़की है। इसी साल बी. ए. पास किया है।"

"दुर्गा ! दुर्गा ! इतनी बड़ी सयानी लड़की ! और अभी तक शादी नहीं हुई। इसे क्या मेम बना रहे हो ?"

"क्यों काशीनाथ, शादी-वादी करने का भी कुछ इरादा है तुम्हारा ?"

"है क्यों नहीं। एक अच्छा-सा नाई लगा दो इस काम के लिए।"

"मेरी भतीजी इस चन्दना से शादी कर लो न ?"

"तुम्हें क्या उन्माद हो गया है चक्रधर ? एक गोत्र में कैसे ब्याह होगा ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसके अलावा ऐसी वाहियात पत्नी से मेरी नहीं पटेगी। अच्छे वंश की लज्जा-शीला, निष्ठावती लड़की चाहिए। पढ़ी-लिखी होने की जरूरत नहीं। सिर्फ खाना-पकाना जानेगी, घर गृहस्थी के काम में पटु होगी, व्रतों का पालन करेगी। तुम्हारी पत्नी और भतीजी की तरह बे-आबरू नहीं होगी।"

"तुमने भी मुसीबत खड़ी कर दी काशीनाथ ! जैसी दुल्हन तुम चाहते हो, वैसी लड़की आजकल शरीफ घरानों में मिलनी मुश्किल है। बहरहाल तुम्हारी पसन्द की दुल्हन ढूंढ़ने की मैं भरसक कोशिश करूँगा। अब तुम नहा-धो, सन्ध्या-जप करके भोजन आदि करो !"

चक्रधर मुकर्जी सोचने लगे, 'आदमी पागल है, लेकिन बातचीत कुछ बेतरतीब भी नहीं है। उस जमाने का दिल-दिमाग होने पर भी बुद्धिमान कहा जा सकता है। अजीब मामला है ! काशीनाथ को इतने रुपये कहाँ से मिले ? जो कुछ भी हो, इसे रोके रखना है। इसकी जायदाद अपने कब्जे में ही रहे इसका भी इन्तजाम करना है। क्या ही अच्छा होता, अगर इसकी शादी चन्दना के साथ की जा सकती। तब यह भी बिल्कुल मेरी मुट्ठी में आ जाता। उसकी पसन्द की दुल्हन कहाँ से लाऊँ ? पुराने खयालात की भक्तिमती लड़की होगी, पागल पति को भी सँभालेगी और मेरे बस में भी रहेगी।' अचानक चक्रधर के दिमाग में एक बात दौड़ गई। 'गयेश्वरी के साथ भी तो शादी की जा सकती है। वह भी तो बड़ी भक्तिन है, बड़ी बुद्धिमती भी है, मेरी भी इज्जत करती है और सभी मामलों में मुझसे सलाह-मशविरा लेती है। रुपए के लालच में शायद वह काशीनाथ से शादी करने को तैयार हो जाय। लेकिन दोनों में उम्र का फर्क बहुत ज्यादा है।'

गयेश्वरी रिश्ते में चक्रधर की भानजी है। चचेरी बहन की बेटी है। उम्र पचास होने पर भी वह अभी तक कुमारी ही है। माँ-बाप बचपन में ही गुज़र गए जिसके कारण चक्रधर ही उसका अभिभावक बना था। लेकिन उन्हें भानजी की देख-रेख ज्यादा दिन तक न करनी पड़ी। गयेश्वरी असामान्य महिला थी। थोड़ी पढ़ाई-लिखाई और विभिन्न तरह के कला-कार्य सीख-कर ही वह स्वावलम्बिनी बन गई। उनकी नारी वस्त्रशाला काफी मुनाफे का कारोबार है। पाँच शरणार्थी औरतें और दो दर्जी गयेश्वरी की दुकान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पर काम करते हैं। सिलाई की तीन मशीनें चलती हैं और दुकान पर खरीदारों की खासी भीड़ रहती है। चक्रधर ने कई बार भानजी की शादी करने की कोशिश की थी, पर गयेश्वरी ने बताया कि यह सब न होगा। उसने कहा कि मैंने बड़ी मुश्किल से इस कारोबार को अपने पैरों पर खड़ा किया है, अब एक बाहर का मर्द आकर मुझ पर हुकूमत चलायगा, यह मुझसे बरदाश्त न होगा। चक्रधर ने तय किया कि बड़ी सावधानी से यह बात पात्र और पात्री से छेड़नी होगी।

दैव संयोग से चार दिन बाद ही काशीनाथ और गयेश्वरी में एक संघर्ष हो गया।

चक्रधर के मकान के इकमंजिले के पूर्वी हिस्से में काशीनाथ स्वतंत्र रूप से रहने लगे। वह अपने हाथ से पकाकर खाते और चक्रधर का एक पुराना नौकर उनका थोड़ा-बहुत काम-काज कर देता। एक रोज सवेरे प्रातः कृत्य से निपटकर काशीनाथ बेहद नाराज होकर सोच रहे थे कि यह तो घोर कलजुग है—बारह आना सेर बैंगन! सभी चीजों की कीमत आसमान से बातें करती दीखती है। क्या देश में दुर्भिक्ष आ गया है? दो कच्चे केले खरीदने के इरादे से काशीनाथ भीड़ में सावधानी से आगे बढ़ रहे थे कि अचानक धप्प से वह गयेश्वरी से जा टकराए।

काशीनाथ का कसूर नहीं था। वे दुबले नाटे व्यक्ति थे और पीछे की भीड़ का धक्का सँभालने में नाकाम होकर सामने गिर पड़ रहे थे। ठीक उसी समय गयेश्वरी उल्टी ओर से आ रही थी। वह स्थूलकाया थी, इसलिए गिरते हुए काशीनाथ उसीकी देह से जा टकराए। गयेश्वरी गिरी नहीं, पर बेहद खफा होकर बोली, "मर रे छोकरे! नशा-भाँग छानता है क्या? शरीफ घराने की औरतों पर लड़खड़ाकर गिरता है! तेरी इतनी हिम्मत?"

काशीनाथ ने कहा, "क्षमा कीजिए पुरखिन जी! भीड़ के दबाव से ऐसा हो गया। मैंने जान-बूझकर कोई अपराध नहीं किया।"

गयेश्वरी ने कहा—"एक सौ बार तूने अपराध किया! अभागा! बेहया! बदजात!"

लोगों के एक दल ने गयेश्वरी का पक्ष लिया और दूसरे ने काशीनाथ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का। दोनों दलों में भयानक झगड़ा शुरू हो गया। बहुत-से लोग गयेश्वरी को पहचानते थे। एक शिखाधारी पुरोहित बाबा ने कहा, "ओ, गया दीदी, यह मामला कोई मामूली नहीं। तुम्हें प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।"

चार-पाँच जने चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे—"जरूर ! जरूर ! तुम कौन हो जी ? देहात से आये हो क्या ? धक्का लगाने को कोई और असामी न मिला तुम्हें ? गयेश्वरी देवी पर तुम किस अक्किल से ढुलक पड़े ? अभी पचास रुपया निकालो प्रायश्चित्त का खर्च; वर्ना तुम्हारा छुटकारा नहीं।"

ऐसे ही समय चक्रधर का एक नौकर वहाँ आ गया, जिससे काशीनाथ बच गए। पुरोहित जी ने कहा—"तो ठीक ही है, जब गया दीदी और यह काशीनाथ छोकरा दोनों ही चक्रधर बाबू के अपने लोग हैं, तो वही इसका निर्णय करेंगे।"

चक्रधर मुकर्जी भली-भाँति यह समझते हैं कि गर्म हालत में चोट करने से लोहा जुड़ जाता है। उन्होंने समय नष्ट न करके पहले ही अपनी भानजी के सामने यह प्रस्ताव रखा। गयेश्वरी ने आश्चर्य करते हुए कहा—"तुम्हारा दिमाग कुछ पलट गया है क्या मामा ? चक्रधर ने ब्योरे से बताया कि आदमी झक्की होने पर भी भलामानस है, जल्द पालतू हो जायगा। उसके पास काफी रुपये भी हैं। उम्र कम है तो क्या ? आजकल ऐसी बातों की कोई परवाह नहीं करता।"

गयेश्वरी बड़ी बुद्धिमती औरत थी, मामा का प्रस्ताव आसानी से ही उसकी समझ में आ गया। अन्त में उसने कहा—"वह छोकरा अगर राजी हो जाय तो मुझे कोई एतराज नहीं। लोग क्या कहेंगे इसकी मैं परवाह नहीं करती।"

काशीनाथ इतनी आसानी से काबू में नहीं आए। बोले—"क्या पागल की तरह अंट-शंट बक रहे हो चक्रधर चाचा ! गयेश्वरी की उम्र तो मेरी उम्र से करीब दुगुनी है। उस जमाने में कुलीन कन्याओं की शादी इसी ढंग से होती थी, लेकिन मैं कोई पेशेवर पाणिग्राही नहीं हूँ।"

चक्रधर ने कहा—"अच्छी तरह से सब ओर सोचकर देखो काशी बेटा ! लड़की बड़ी भक्तिमती है। सभी किस्म का व्रत रखती है। यहाँ तक कि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आमड़ाषष्ठी का व्रत भी रखती है। दर्जी की दुकान अवश्य चलाती है, पर उसकी चाल-ढाल तो तुम्हारी ही तरह प्राचीन है। दुकान तुम्हारे हाथों में ही आयगी। तुम्हारी आमदनी भी बढ़ जायगी।"

"लेकिन उम्र में तो जमीन-आसमान का फर्क है।"

"बहुत ठीक बात है। तुमने अपना जो इतिहास बताया, उसके हिसाब से तुम्हारी उम्र इस वक्त दो सौ पचास से भी ज्यादा है और गयेश्वरी की उम्र तो सिर्फ उनचास ही है। तुम्हारी तुलना में तो वह कल की छोकरी ठहरी। और भी समझकर देखो! तुम्हारा शरीर ही जवान है, पर मन तो दो शताब्दी पीछे का है। गयेश्वरी के साथ तुम्हारे मन का मेल आसानी से होगा। एक और बात है। आधुनिक पंडित कहते हैं कि औरतों का पूर्ण यौवन पचास के बाद ही होता है। मर्तबानी केला खाया है न? पकने पर ही वह मीठा नहीं होता। जिसका छिलका काला पड़कर सिकुड़ गया है, गूदा नर्म हो गया है, वही परिपक्व मर्तबानी केला अमृत के समान है। औरतें भी ऐसी ही होती हैं।"

चक्रधर की युक्ति सुनकर काशीनाथ धीरे-धीरे बस में आ गए। फिर भी जरा चिन्तित होकर बोले—"मैं जब मरा था तो मेरी चौथी स्त्री रासेश्वरी की उम्र तुम्हारी भानजी गयेश्वरी की ही तरह थी। अब लग रहा है कि रासेश्वरी ही गयेश्वरी बनकर लौट आई है। अच्छी बात। तुम नाई लगा सकते हो।"

"मैं खुद ही नाई का काम कर रहा हूँ। गयेश्वरी के साथ मेरी बात हुई है। वह राजी है। अब सगुन हो जाय तो शादी हो सकती है। आज शाम को तुम उसके घर पर जाकर उससे बातचीत करो!"

"तुम्हें भी उस मौके पर हाजिर रहना चाहिए चक्र चाचा!"

"नहीं, नहीं। यह दस्तूर नहीं है। सिर्फ दोनों मिलकर बातें करो!"

काशीनाथ गयेश्वरी के घर गये तो उसने मुस्कराकर कहा—"क्योंजी छोकरे मैं पसन्द आई तुम्हें?"

काशीनाथ ने ऊपर-नीचे सिर हिलाकर मौन सहमति प्रकट की।

"सुनते हैं तुम्हारे पास पाँच लाख रुपये हैं? सुनो जी मालिक, शादी होते ही सब रुपए मेरे हाथों में दे देना! तुम जैसे ढीले-ढाले आदमी हो,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हारे हाथों में रुपया रहेगा तो बस हो चुका। लोग सब ठग-ठुग लेंगे। अपने मामाजी तक का मैं विश्वास नहीं करती हूँ।"

काशीनाथ ने कहा,"कोई डर नहीं गयेश्वरी महारानी! जो मुझे ठग ले ऐसा आदमी सारे हिन्दुस्तान में तो है नहीं। जो इरादा किया है सो बताता हूँ, सुनो! औरत जाति के द्वारा दुकानदारी करना कोई ठीक बात नहीं। शादी के बाद मैं तुम्हारी दुकान बेच दूँगा। उसका रुपया और मेरे पास जो रुपये हैं, उससे महाजनी कारोबार शुरू करूँगा। चक्र चाचा ने बताया है कि आजकल के कानूनों से जमींदारी नहीं खरीदी जा सकती। फिर भी तुम्हें कोई अभाव नहीं रहेगा। तुम्हारा समूचा बदन गहनों से ढक दूँगा। यह कलकत्ता असुरों का शहर है। बड़ी भयंकर जगह है। हम लोग राघवपुर गाँव में जाकर रहेंगे। घर बगीचा, तालाब, गोशाला सब बनेगा। एक देव-मंदिर और एक पाठशाला भी बनेगी।"

गयेश्वरी हाथ हिलाकर तुनक पड़ी, "हाय! हाय! मर जाऊँ! क्या मनसूबे ही बाँध रहे हो। भला, पागल क्या पड़े मिलते हैं? तुम एक घोर पागल हो। सुनो जी छोकरे, तुम्हारी बीबी होने पर भी मैं तुमसे उम्र में बड़ी हूँ। तुम्हारी बुजुर्ग के समान। तुम मेरी निगरानी में रहोगे और मेरी मर्जी के मुताबिक तुम्हें चलना पड़ेगा। अभी से कहे देती हूँ।"

काशीनाथ कुछ देर भौंचक बने रहे। उसके बाद 'तारा ब्रह्ममयी माँ' कहते हुए चले गए।

सन्ध्या-जप के बाद काशीनाथ ने अपनी इष्टदेवी से अपनी हालत का बयान किया—"यह कैसी मुसीबत में फँसा दिया माँ? तुम्हारा भी क्या दोष है? मैं अपनी दुर्बुद्धि का फल भोग रहा हूँ। दुनिया में कलिकाल इतना प्रबल हो चुका है, यह मैं सोच भी नहीं पाया था। ब्राह्मण के घर पर बावर्ची खाना पका रहा है, मुर्गियाँ चर रहीं हैं, बूढ़ी औरतें जूता पहनकर खटर-पटर इधर-उधर दौड़ रही हैं, सयानी लड़कियाँ स्कूल जा रही हैं। छोटी जाति के लोगों की हिम्मत बढ़ गई है, ब्राह्मण की परवाह कोई नहीं करता, उसके सामने खड़े होकर लोग बीड़ी पीते हैं। वह गयेश्वरी बड़ी भयंकर जबर्दस्त औरत है। उससे शादी करने पर मेरे नरकवास में कुछ भी अन्तर न रहेगा। चक्रधर एक पापी कुलांगार है। मेरा वंशधर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वह हो ही नहीं सकता। यमराज ने जरूर गलती से मुझे उसके पास भेज दिया है। काली कैवल्यदायिनी ! मुझे यहाँ से छुटकारा पाने का रास्ता बताओ माँ ?"

रात के अन्तिम प्रहर में काशीनाथ ने सपना देखा कि उनकी इष्टदेवी आविर्भूत होकर कह रही है—"खिसक पड़ो काशीनाथ।"

तभी काशीनाथ की नींद टूट गई। वे समझ गये कि इस पापमय संसार में लौट आने में उनसे एक बहुत बड़ी बेवकूफी हो गई है। मन स्थिर करके काशीनाथ ने तभी यम की दी हुई 'निष्क्रान्त-वटिका' निगल डाली और फौरन यमलोक को प्रयाण कर गये।

सवेरे काशीनाथ की परीक्षा करके डॉक्टर ने कहा, "थ्रोम्बोसिस ! इतनी कम उम्र में प्रायः यह नहीं होता। लेकिन पागलों को ऐसा हो भी जाता है।"

चक्रधर तभी काशीनाथ के जनेऊ से चाभी लेने दौड़े, पर वह मिली नहीं। झटपट बेग पर कब्जा करने दौड़े, पर वह भी ढूँढे से न मिला। अवश्य ही गयेश्वरी ने धोखा देकर उसे हथिया लिया होगा, यह सोचकर वह भानजी के घर दौड़े। दोनों में जोरदार झगड़ा हुआ पर बेग न मिला। काशीनाथ की मृत्यु के साथ-साथ उसकी यमप्रदत्त धन-सम्पदा भी यम-सरकार में जब्त हो गई थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ९ :

गगन चप्पल

हाथी बागान के दर्जी मियाँ अबूबकर और उनकी बीबी रमजानी बेगम शाम को ईद का चाँद देख रहे थे। अचानक एक अजीब चीज रमजानी की निगाह से जा टकराई। रमजानी ने अपने शौहर से पूछा—"क्यों मियाँ, आसमान के बीचों-बीच वह छोटी कटारी-सी चमक रही है, वह क्या है ?"

अबूबकर ने काफी देर तक उसे घूरने के बाद कहा—"कटारी नहीं है री, वह तो पैजार है—देखती नहीं कि तालतल्ले की चप्पल-सी बनावट है। शायद मल्लिक घराने के बाबुओं ने गुब्बारा उड़ाया हो।"

अबूबकर का अन्दाज ठीक नहीं था, क्योंकि अगले रोज और उसके बाद हर रोज ही वह शाम को आसमान में दीख पड़ने लगी। यह अजीब चीज न तो आतिशबाजी के गुब्बारे की तरह इधर-उधर बहती और न आसमान में स्थिर ही रहती। चाँद और ग्रह-नक्षत्रों की नाईं इसका उदय और अस्त होता रहता। उदीयमान ज्योतिष-शास्त्र-सम्राट् तारक सान्याल से पूछन पर उन्होंने कहा, "यह तो राहु-सा ही लग रहा है, महा विपत्ति का पूर्व लक्षण है।"

यह बात सुनकर पुराने ज्योतिष-शास्त्र-सम्राट् शशधर आचार्य ने कहा, "तारक तो काठ का उल्लू, लंठ है, राहु होने पर क्या उसका आकार सूँड की तरह होता ? वह तो केतु है—दुम जो दिखाई पड़ रही है। भयानक विपत्ति का सूचक है। तुम लोगों को ग्रह-शान्ति के लिए यज्ञ करना चाहिए और अखंड कीर्तन।"

बस क्या था, चारों तरफ एक आतंक-सा छा गया। अखबारों में तरह-तरह की टीका-टिप्पणियाँ निकलने लगीं। एक ने लिखा, 'शायद यह उड़न-चक्का है—धक्का लगाकर पिचकने के बाद चप्पल-सा दीख रहा है।' एक और ने लिखा, 'यह जरूर ही दुम-कटा धूमकेतु है; सूर्य के और जरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नजदीक पहुँच जाय तो दुम निकल आयगी और उसकी चपेट में दुनिया चूर-चूर हो जायगी ।'

पुराने हैड-पंडित कुंजबिहारी तलापात्र ने अखबार में लिखा—'यह आकाशचारी भयंकर पादुका किस महापुरुष की है ? देखकर लगता है कि बंगाल के महापंडित विद्यासागर महाशय की है । माध्यमिक शिक्षा परिषद् वालों की धाँधली देखकर उस दिवंगत तेजस्वी महात्मा का धीरज जाता रहा और इसलिए उन्होंने एक चप्पल आसमान में फेंक मारी है । यह उड़ती हुई चप्पल जल्द ही शिक्षा-परिषद् वालों के सिर पर तड़ाक से बैठने वाली है ।'

विरोधी दल के एक प्रधान प्रवक्ता विरूपाक्ष मंडल ने लिखा—'नहीं, यह विद्यासागर जी की चप्पल नहीं है, उसकी नोक इतनी नुकीली नहीं थी । यह आसमानी पैजार स्वर्गीय मनीषी डॉक्टर महेन्द्रपाल सरकार की है । मैडिकल कालेज और दूसरे अस्पतालों की छीछालेदर देखकर वह खफा हो गए हैं । नजदीक कोई दूसरा हथियार न पाकर उन्होंने अपनी चप्पल ही फेंक दी । अधिकारी होश में आयँ वर्ना आटे-दाल का भाव मालूम हो जायगा ।'

भक्त कवि अनन्त चट्टराज ने लिखा, 'यह गगन-चप्पल मनुष्य की नहीं—यह मूर्त्त ऐश्वरीय रोष है । चोरी, भ्रष्टाचार, मिथ्याचार, व्यभिचार, कपट इत्यादि पापों म बढ़ती, राज्य-सरकार की अकर्मण्यता, धनियों की विलासिता, बच्चों का फिल्म देखने का चस्का यह सब देखकर नटराज चंचल हो उठे हैं । ताण्डव-नृत्य की मुद्रा में उन्होंने अपना दाहिना पैर बढ़ाया है उसीसे यह रुद्र चप्पल गगन पर आ पड़ी है । अब तांडव शुरू होने में देर नहीं है । पृथ्वी का ध्वंस होने ही वाला है । देश के धनी दरिद्र ऊँच-नीच, बाल-वृद्ध, स्त्री-पुरुष अगर तुरन्त धर्मपथ पर लौट न आए तो रुद्र रोष सभी पर छा जायगा ।'

पर अनाड़ियों की यह अनाप-शनाप बातें शिक्षितों पर कोई असर न डाल सकीं । विशेषज्ञ क्या कहते हैं ? विश्वम्भर काटन मिल, विश्वम्भर बैंक, विश्वम्भरी पत्रिका इत्यादि के मालिक श्री विश्वम्भर चक्रवर्ती सर्वविद्याविशारद थे । किसी भी प्रश्न के उत्तर में वह 'नहीं जानता हूँ'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐसा कभी नहीं कहते थे। पर गगन-चप्पल के बारे में प्रश्न करने पर वह केवल गम्भीर मुद्रा में ऊपर-नीचे और दाहिने-बाएँ सिर हिलाते रहे। कुछ अध्यापकों से पूछने पर उन लोगों ने कहा—'अभी कुछ नहीं कहा जा सकता है, पर यह बात निश्चित है कि यह नक्षत्र नहीं है, क्योंकि इसका गतिपथ विषुवत् रेखा के ठीक समानान्तर नहीं है। यह मेहमान ज्योतिष्क ग्रहों की तरह विपथगामी है। दुमकटा पुच्छल तारा भी हो सकता है, हम खतरे का डर बेशक है। नंगी आँखों से कितनी भी छोटी दिखे, पर है यह चीज बहुत बड़ी। देखा जाय कि हमारे कोदाइकैनल निरीक्षण केन्द्र और ग्रीनवीच प्यालोमार इत्यादि से क्या रिपोर्ट आती है ?

रिपोर्ट जल्द ही आई। देश-विदेश के सभी नामी-गरामी निरीक्षण-केन्द्रों से एक ही खबर प्रसारित हुई। दुर्बोध्य वैज्ञानिक तत्त्व छोड़न के बाद जो कुछ समझ में आता वह यह है :

सूर्य का निकटतम ग्रह है बुध (मर्करी)। उसके बाद है शुक्र (वीनस)। उसके बाद हम लोगों की पृथ्वी। उसके बाद मंगल (मार्स)। उसके बाद बहुत दूर में बृहस्पति (जुपीटर) है। मंगल और बृहस्पति के कक्ष के बीचों-बीच राह पर ऐस्ट्रोएड या छोटे-छोटे खंडग्रहों का एक बहुत बड़ा झुंड है, जो सूर्य की प्रदक्षिणा करता रहता है। उसीमें एक अचानक कक्ष भ्रष्ट होकर पृथ्वी के नजदीक आ पड़ा है। यह खंडग्रह वर्तुलाकार नहीं है। भारतीय ज्योतिषियों ने इसका नाम रखा है, गगन-चप्पल यानी हेवन्ली स्लीपर। फिलहाल हम लोग भी इसी नाम को स्वीकार कर लेते हैं। इस गगन-चप्पल की अपनी भी ज्योति है और उस पर सूर्य की किरणें पड़ने की वजह से वह और ज्योतिर्मयी हो गई है। पृथ्वी से इसकी वर्त्तमान दूरी करीब पौने दो करोड़ मील है—करीब दो साल में सूर्य की एक प्रदक्षिणा यह कर पाती है। इसका आयतन और वजन करीब चाँद का दूना है। इतने बड़े ऐस्ट्रोएड के अस्तित्व के बारे में किसी को ज्ञान नहीं था। अनुमान यह किया जाता है कि कई खंडग्रहों के आपसी संघर्ष और सम्मिलन के कारण उत्पन्न होकर यह गगन चप्पल छिटककर बाहर निकल आई है। इसका ताप और इसकी ज्योति भी उसी संघर्ष के फल है। इतने बड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ऐस्ट्रोएड के पास आ जाने से मंगल ग्रह और चन्द्र का कक्ष जरा टढ़ा पड़ गया है, धरती के ज्वार-भाटे के समय में भी कुछ तबदीली आ गई है। अभी धरती से इसकी जो दूरी है उससे घबराने की कोई खास बात नहीं, पर यह सन्देह किया जा रहा है कि गगन-चप्पल धीरे-धीरे नजदीक ही आती जा रही है। अगर ज्यादा नजदीक आ गई तो दुनिया का क्या होगा यह सोचते ही दिल धड़कने लगता है ।

इस बयान के कारण बहुत-से लोग डर से सिहर उठे। कई मोटे सेठ हार्ट फेल से मर गए। बहुत-से लोग पेट की बीमारी, सिर चकरान, दिल धड़कने और साँस की बीमारी में मुब्तिला हो गए। हिन्दूधर्म के नेता स्वामी, महन्त, मुसलमान मुल्ले-मौलवी और ईसाई पादरियों न अपने-अपने शास्त्र के अनुसार हितोपदेश सुनाना शुरू किया। साहित्यकार उपन्यास, कविता, लघु निबन्ध इत्यादि की रचना छोड़कर परलोक की बातें लिखने लगे। लेकिन ज्यादातर लोगों में कोई खास चिन्ता नहीं पाई गई, बल्कि मुहल्ले टोलों में गगन-चप्पल के बारे में जमघट लगने लगा। शेयर बाजारों में भी कोई खास उतार-चढ़ाव नहीं दिखाई पड़ा। सिनेमा की भीड़ भी कुछ खास नहीं घटी ।

कुछ रोज के बाद किश्तों म ज्योतिष-सम्बन्धी जो खबरें आने लगीं उससे लोगों के होश उड़ गए, खून सूखने लगा। गगन-चप्पल नामक यह दुष्ट ग्रह क्रमशः दुनिया के नजदीक आता जा रहा है और मध्याकर्षण के नियम के अनुसार आपस में खींचातानी शुरू हो गई है। चाँद के साथ पृथ्वी और गगन-चप्पल मानों आपस में टकराकर मिल-मिलाकर एक लोदे के रूप में आने की कोशिश कर रहे हैं। हिसाब लगाकर देखा गया है कि पाँच महीने के अन्दर ही चाँद और गगन-चप्पल में संघर्ष छिड़ जायगा और उसके बाद दोनों ही धरती पर आ धमकेंगे। उसका नतीजा जो कुछ होगा, उसकी तुलना में लाखों हाइड्रोजन बम तुच्छ हैं। संघर्ष से कुछ पहले ही वायुमंडल लुप्त हो जायगा, समुद्र उफन उठेगा, सारे प्राणियों का दम घुट जायगा। चरम ध्वंस के लिए इन्तजार करने के अलावा हम लोगों के पास और कोई चारा नहीं रह गया है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विभिन्न ईसाई-सम्प्रदाय के प्रमुख व्यक्तियों ने एक संयुक्त वक्तव्य प्रसारित किया—"हम लोगों को कुछ-न-कुछ करना है। पुराने जमाने में वृद्ध लोग एक कविता दोहराते थे—If cold air reach you through a hole, Go make your will and mend your soul. (यदि शीतल वायु किसी छिद्र में से तुम तक पहुँचे तो जाकर अपना वसीयत-नामा बनवाओ और अपनी आत्मा को शुद्ध करो!) पर यह आने वाली गगन-चप्पल शीतल वायु नहीं है, मानव-जाति के पाप के लिए ईश्वर-प्रेरित मृत्युदंड है—हम सभी को ध्वंस करेगी। वसीयत करना बेकार है, लेकिन मृत्यु से पूर्व हम लोगों को आत्मा के कल्मष अवश्य धोने होंगे। इसलिए सरल मन से सारे पाप स्वीकार कर लो, लगातार प्रार्थना करो, ईश्वर की करुणा की याचना करो, सभी दुश्मनों को क्षमा कर दो और जो चन्द रोज जिन्दगी मिले, उसे भरसक दूसरों की तकलीफ दूर करने में गुजारो!"

यहूदी, मुसलमान और बौद्ध धर्म नेता भी ऐसे उपदेश देने लगे। आदिशंकराचार्य के एक-मात्र भानजे के वंशधर १००८ श्री व्योमशंकर जी महाराज ने हिन्दी में एक पुस्तिका छपवाकर पचास लाख कापियाँ बटवाईं। उसका सार मर्म यह था—

"ऐ मेरे बच्चो, मृत्यु-भय को त्याग दो! मेरी उम्र नब्बे की हो चुकी है—और तुम लोगों में करीब-करीब सभी मुझसे छोटे हो, लेकिन उससे कुछ होने-जाने का नहीं, क्योंकि भव-यातना बालक-वृद्ध सभी के लिए समान है। हमारी आत्मा इस देहरूपी पिंजरे से निकलकर परमात्मा में लीन हो जायगी—यह तो अत्यन्त आनन्द की बात है, इसमें डरने की बात क्या? लेकिन ऐसी अशुचि अवस्था में देह-त्याग करने से नरक की ओर गति होगी। तुम लोग शायद जानते हो कि किसी भी बड़े आपरेशन से पूर्व रोगी को भूखा रखा जाता ह और जुलाब या एनिमा के जरिए उसका मेदा साफ किया जाता है। जब रोगी का आमाशय शून्य हो, मलभांड शून्य हो, मूत्राशय भी शून्य हो, सारा शरीर पाक-साफ हो तभी डॉक्टर छुरी-काँटे चलाते हैं। शुचिता के लिए इतनी सतर्कता का कारण है कि सेप्टिक न हो जाय। अब जरा सोच कर देखो, एपेनडिक्स या हार्निया या प्रस्टेट छेदन की तुलना में प्राण-विसर्जन कितना गम्भीर मामला है। मृत्यु के समय अगर मन में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जरा-सा भी कलुष, कल्मष या किल्विष हो तो आत्मा का सेप्टिक हो जाना अनिवार्य है। पाप-क्षालन बगैर किये ही अगर तुम लोग प्राण-त्याग करोगे तो सीधे नरक में जाओगे। इसलिए अब देर-अबेर न करो, सरल मन से लज्जा-भय का परित्याग करके सभी पापों को स्वीकार करो! तभी तुम पवित्र बन सकोगे। चुपके-चुपके पाप स्वीकार करने से नहीं होगा, जनता के सामने ऊँची आवाज में ऐलान करना होगा या छपवाकर प्रचार करना होगा, जैसा मैंने किया है। इस पुस्तिका के अन्त में परिशिष्ट नम्बर (क) और (ख) में मैंने अपने सभी दुष्कर्मों की तालिका दी है—कितने खटमल मैंने मारे हैं, कितनी बार छिपकर मैंने मुर्गी खाई है, कितनी बार झूठ बोला है, कितनी भक्तिमती शिष्याओं पर बुरी नज़र डाली है—सभी स्पष्ट स्वीकार किया है। तुम लोग भी अब व्यर्थ समय न गँवाकर अपने-अपने पाप धोने में लग जाओ!"

"विलायत में आक्सफोर्ड ग्रुप की अगवाई में झुंड-के-झुंड नर-नारी अपनी दुष्कृति स्वीकार करने लगे। दूसरे पाश्चात्य देशों में भी अनुरूप शुद्धि का प्रबन्ध किया गया। भारतवासियों में सबसे ज्यादा शर्मदार लोग हैं, इसलिए व्योमशंकर जी के उपदेश का कोई खास असर न पड़ा। लेकिन हाल में पैलोमार निरीक्षण केन्द्र से जो रिपोर्ट आई है उसके बाद कोई भी खामोश नहीं रह पा रहा है। गगन-चप्पल और नजदीक आ गई है और इसके कारण पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति या ग्रेविटी घट गई है, हम सभी लोग कुछ-कुछ हल्के हो गए हैं। अब कोई देरी नहीं। उस प्रलय के भयंकर दिन के लिए सभी तैयार हो जाओ!"

मनुमेंट के नीचे और शहर के दूसरे पार्कों में नर-नारियों के झुंड-के-झुंड आकर अपने पापों को स्वीकार करने लगे। बड़ा बाजार से एक बड़ा-सा जलूस गाजे-बाजे के साथ निकला और नेताजी सुभाष रोड होता हुआ पूरे शहर का चक्कर लगाने लगा। काफी जाने-माने लोग उसमें शरीक होकर सीना पीटते हुए करुण स्वर में अपने-अपने बुरे कर्मों का इकरार करने लगे, पर बैंड बाजे की आवाज से उनकी बात ठीक-ठीक समझ में न आ पाईं।

विलायती रेडियो में निरन्तर बजने लगा—'नीयरर माई गाड टू दी।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिल्ली के रेडियो से 'रघुपति राघव राजा राम' और लखनऊ तथा पटना से 'राम नाम सत्य है' दिन-रात गूँजने लगा। कलकत्ता में ध्वनित हुआ, 'सम्मुखे शान्ति पारावार'। मास्को रेडियो खामोश रहा; क्योंकि भगवान् के साथ कम्युनिस्टों के कोई अच्छे सम्बन्ध नहीं। अन्त में सोवियत राजदूत के सविनय अनुरोध के कारण हमारे राष्ट्रपति ने कम्युनिस्ट प्रजाओं की सद्गति के लिए गयाधाम में पेशगी पिंड-दान का बन्दोबस्त कर दिया।

चारों बड़ी शक्तियाँ, यानी संयुक्तराष्ट्र अमेरिका, सोवियत संघ, ब्रिटेन और फ्रांस के शासकवर्गों ने पिछले पचास साल से जितने कुकर्म किये थे उनका ब्योरा दे-देकर एक 'व्हाईट बुक' प्रकाशित की गई और एक साथ घोषणा हुई—"सभी इन्सान भाई-भाई, उनमें कोई झगड़ा न लड़ाई।" पाकिस्तान के मालिकों ने कहा, "यह बात तो सही है, हिन्दी-पाकिस्तानी भाई-भाई, लेकिन पहले कश्मीर चाहिए।"

इस विश्व-व्यापी विक्षोभ में सिर्फ एक व्यक्ति में कोई चंचलता न दीख पड़ी। वे हैं हाटखोला की भुवनेश्वरी देवी। अस्सी की उम्र पार कर जाने पर भी वह काफी स्वस्थ हैं; हाल में दोबारा केदार-बदरी धाम घूम आई हैं। काफी जायदाद है, पति-पुत्र-कन्या का कोई झंझट नहीं, सिर्फ उनके आश्रम में कुछ लोग पलते हैं, जिन्हें वह काफी कड़ी देख-रेख में रखती हैं। भुवनेश्वरी काफी भक्तिमती महिला हैं; 'गीत गोविन्द', 'गीता' और 'गीतांजलि' उनकी जबान पर है। लेकिन मुहल्ले वाले उन्हें घोर नास्तिक समझते हैं; क्योंकि वह कभी किसी हल्ले में हिस्सा नहीं लेतीं। उनके डरे हुए पोष्यवर्ग ने व्याकुल होकर उनकी विनती की—"बड़ी अम्मा, गगन-चप्पल उदित हुई है, प्रलय में अब कोई देर नहीं है। जगन्नाथ घाट पर सभा हो रही है—सभी लोग अपने-अपने पाप स्वीकार कर रहे हैं। आप भी कबूल कर डालिए! मन साफ हो जाने से शान्तिपूर्वक मर पायेंगी।"

भुवनेश्वरी ने घुड़की बताते हुए कहा—"पाप जो किया है सो किया है, अब नगाड़ा पीटकर सबको क्यों बतलाने जाऊँ रे निगोड़े? गगन-चप्पल नहीं तेरा सिर है। आसमान में लाख-लाख तारे हैं—एक और आ गया तो क्या हुआ? तुम लोगों के कहने से ही प्रलय हो जायगी? मरने में अभी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

काफी देर है, अभी से हाय-हाय क्यों कर रहे हो ? भगवान् किस काम के लिए हैं ? 'मैं न रहता तो त्रिभुवनेश्वर तुम्हारा प्रेम ही होता झूठा'—रवि ठाकुर का यह गाना भी नहीं सुना तुम लोगों ने ? इन्सान ही को अगर जड़-मूल से उखाड़ फेंकें तो भगवान् को जीने में क्या सुख मिलेगा ? किनके साथ उनकी लीला का खेल चलेगा ? जाओ, जाओ सब बेफिक्र होकर सो जाओ !"

कैसे क्या हो जाता है, कुछ कहा नहीं जा सकता। शायद भुवनेश्वरी की बात पर त्रिभुवनेश्वर लिहाज कर गये। शायद कार्य-कारण-परम्परा के प्राकृतिक नियम से ही जो कुछ होने को था हो गया। अचानक एक रोज अखबार में तीन इंच मोटे अक्षरों की सुर्खी में छापा गया—'कोई डर नहीं। दुष्ट ग्रह दूर जा रहा है।' बड़े-बड़े ज्योतिषियों ने एक साथ ऐलान किया कि बृहस्पति, शनि, यूरेनस और नेपचून, इन चार बड़े ग्रहों के साथ एक रेखा में आने के कारण गगन-चप्पल पर पीछे की ओर से खिंचाव आया है। वह तीव्रगति से अपने पुराने कक्ष में अपने साथियों के बीच लौट रही है। बस जरा-सी बात के लिए हमारी धरती बाल-बाल बच गई।

खतरा पार हो जाने के कारण जनता ने खुलकर साँस ली, लेकिन जो लोग असामान्य हैं, वे निश्चित नहीं हो पाए। देश के जाने-माने इज्जत-दार लोगों के प्रतिनिधि के बतौर एक दल ने दिल्ली जाकर प्रधान मंत्री से निवेदन किया—'श्रीमान्, हम लोगों ने तो काफी गुनाह कबूल कर डाले हैं, अब किस तरह उसे सँभालें ?'

प्रधान मंत्री ने चीफ जस्टिस की राय माँगी। उन्होंने राय दी कि पुलिस के दबाव से अगर कोई अपने जुर्म का इकबाल करता है तो वह अदालत में नहीं माना जाता। गगन-चप्पल के आतंक से लोगों ने जो कुछ कह डाला है, कानून की नज़रों में उसकी कोई अहमियत नहीं खासकर जब उन लोगों ने इन बातों को स्टैम्प कागज पर ऐफीडेविट के रूप में पेश नहीं किया है।

चारों बड़ी शक्तियाँ और यू. एन. ओ. में सम्मिलित सभी छोटे-बड़े राष्ट्रों ने एक प्रोटोकल पर दस्तखत करके यह घोषणा की कि गगन-चप्पल के आविर्भाव से विकारग्रस्त होकर हम लोगों ने जो प्रलापोक्ति की थी इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संयुक्त बयान के द्वारा उसका खंडन किया जाता है। अब फिर से हम पुरानी हालत में पहुँच गए हैं।

गगन-चप्पल दूर गगन में विलीन हो गई है। पर जाने से पहले सभी को थोड़ी-बहुत घायल कर गई। हम लोगों की इज्जत-आबरू धूल में मिल गई। सिर ऊँचा करके और सीना तानकर चलने की अब किसी के पास हिम्मत नहीं रही।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १० :

अदला-बदली

कालिदास के 'मेघदूत' की घटना शायद आप लोगों को मालूम हो। यदि भूल गए हों तो संक्षेप में सुन ही लीजिए! कुबेर का अनचर एक यक्ष था जिसे अपने काम में गाफिल पाकर प्रभु ने शाप दिया और उसे साल-भर के लिए निर्वासन में रहना पड़ा। वह रामगिरि में आश्रम बनाकर रहने लगा। आषाढ़ के प्रथम दिवस पर यक्ष ने देखा कि पहाड़ पर बादलों का जमघट लगा है जो ऐसे लग रहे थे मानों हाथी वप्रक्रीड़ा कर रहे हों। खिले हुए कुर्ची फूलों को अंजलि में भरकर उसने मेघों को अर्घ्य दिया और मन्दाक्रान्ता छन्द में एक लम्बा-सा भाषण भी दे डाला। उसका सारमर्म यों है—"भाई मेघ, तुम्हें एक बार अलकापुरी जाना पड़ेगा। धीरे-धीरे आराम से जाना, राह में जी चाहे जरा मौज कर लेना और उससे अगर विलम्ब हो जाय तो कोई बात नहीं। अलका में तुम्हारी भाभी मेरी विरहिनी प्रेयसी है, उसे मेरा सन्देश देकर ढाढ़स बँधाना! कहना, मेरी तबियत ठीक ही है लेकिन उसके लिए जी बड़ा बेचैन है। नारायण के अनन्तशय्या से उठते ही यानी कार्तिक तक मेरे शाप का अन्त हो जायगा और उसके बाद ही हम लोगों का पुनर्मिलन होगा।"

कालिदास ने अपने यक्ष का नाम नहीं बताया और न उन्होंने यह लिखा कि शाप का एक साल बीत जाने के बाद वह सही सलामत लौट भी सका था या नहीं।

'महाभारत' के उद्योग पर्व में एक वनवासी यक्ष का जिक्र है। उसका नाम स्थूणाकर्ण है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह यक्ष और 'मेघदूत' का यक्ष एक ही व्यक्ति है। कालिदास ने अपने काव्य का उपसंहार नहीं लिखा, 'महाभारत' में भी यक्ष का प्रकृत इतिहास नहीं है। कालिदास और व्यासदेव ने जिसे अनकहा छोड़ दिया है उसीका उद्घाटन मैं यहाँ कर रहा हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यक्ष-पत्नी को यक्षिणी कहूँगा। क्योंकि उसका भी नाम मालूम नहीं है। पति के विरह में अत्यन्त कातर होकर यक्षिणी दिन बिता रही थी। वेदी के ऊपर रोज वह एक फूल रख देती थी और बीच-बीच में गिनकर देख लेती थी कि ३६५ दिन पूरे होने में कितनी देर है। आखिर एक साल पूरा हुआ, कार्तिक का महीना भी खत्म हुआ, लेकिन यक्ष न आया। यक्षिणी उत्कंठा से कुछ दिन और प्रतीक्षा करती रही। उसके बाद उससे रहा न गया और जाकर कुबेर के परों पर गिर पड़ी।

कुबेर ने कहा, 'कौन हो जी तुम ? देखने में तो बड़ी सुन्दर हो; लेकिन बाल ऐसे रूखे क्यों ? कपड़े ऐसे गन्दे क्यों ? और चोटी भी एक ही क्यों ?'

यक्षिणी ने रोकर कहा, 'महाराज, आपने अपने जिस किंकर को साल-भर के लिए निर्वासन की सजा दी थी, मैं उसीकी दुखिनी भार्या हूँ। आज दस दिन हो गए एक साल पूरा हो चुका है, लेकिन अब भी मेरे पति लौटकर क्यों नहीं आए ?'

कुबेर ने कहा, 'घबराती क्यों हो, धीरज धरो, वह जरूर लौट आयगा। शायद कहीं फँस गया हो। वह युवा है, यहाँ सिर्फ चिपटी नाक वाली यक्षिणी और किन्नरी ही उसने देखी है, परदेश में शायद किसी रूपवती मानवी को देखकर उससे प्रेम करने लगा हो। चिन्ता मत करो, मानवी से जी ऊबते ही वह लौट आयगा।'

यक्षिणी ने तेजी के साथ सिर हिलाते हुए कहा, 'नहीं, नहीं, मेरे पति एसे नहीं हैं, पराई स्त्री की ओर वह पलटकर भी नहीं देखेंगे। अभी उस रोज मेघ आकर उसका व्याकुल प्रेम सन्देश पहुँचा गया है। प्रभो, आप कृपया उसकी खोज कीजिए, अवश्य ही उस पर कोई विपदा आ पड़ी है—कहीं शेर-बाघ ने ही उसे न खा डाला हो।'

कुबेर बोले, 'तुम इतनी उतावली क्यों हो रही हो ? तुम्हारा पति अगर न भी लौटा तो भी तुम अनाथ न बनोगी। मेरे अन्तःपुर में तुम मजे में रह सकती हो, मैं तुम्हें हर तरह की सुख-सुविधा से रखूँगा।'

यक्षिणी ने कहा, 'ऐसी बात न कहिए प्रभो, आप मेरे पिता के समान हैं। आप ही के आदेश से मेरे पति निर्वासित हुए। अब उनके दंड की अवधि पूरी हो गई है। उन्हें लौटा लाना आप ही का कर्त्तव्य है। अगर वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विपदा में फँस गए हों तो उससे उन्हें उबारिए, अगर मृत हों तो मुझे सही खबर ला दीजिए—मैं आग में जल मरूँ और स्वर्ग में जाकर उनसे मिलूँ।'

कुबेर घबराकर बोले, 'ओफ, तुमने भी मुझे खूब सताना शुरू कर दिया। अच्छी बात, मैं अभी तुम्हारे पति की तलाश में जा रहा हूँ—रामगिरि भी मुझे देखने की बड़ी इच्छा है। तुम भी मेरे साथ ही चलो। अरे, झटपट पुष्पक रथ तैयार करने को कह दो! और तू तैयार हो जा—मेरे साथ चलना है।'

रामगिरि प्रान्त में एक छोटे-से पहाड़ पर यक्ष ने अपना आश्रम बनाया था। वहाँ पहुँचकर कुबेर ने देखा कि मकान काफी सुन्दर है, दरवाज़े-खिड़कियाँ भी हैं, लेकिन सभी बन्द हैं। कुबेर के आदेश से उनका एक अनुचर दरवाजे पर दस्तक देते हुए चिल्लाकर बोला, 'अजी स्थूणाकर्ण अभी निकल आओ, महामहिम राजाधिराज कुबेर स्वयं पधारे हैं—तुम्हारी दुल्हन भी आई है।'

कोई आहट न मिली। कुबेर ने कहा, 'यों लग रहा है कि घर में कोई नहीं है। आग लगा दी जाय।'

यक्षिणी ने कहा, 'ऐसा काम न कीजिए महाराज! मेरा पति इसी घर में है, मैं मछली भूनने की गंध पा रही हूँ, वह खाना बनाने में लगे हुए हैं, हाय उन्हें कोई मदद करने वाला भी तो नहीं है। मैं ही उन्हें बुला रही हूँ। अजी, सुन रहे हो? मैं आई हूँ, महाराज भी आये हैं। राँधना छोड़कर तुरन्त तुम बाहर निकल आओ।'

एक खिड़की जरा-सी खुली। भीतर से नारी-कंठ में उत्तर मिला, 'अंय, प्रिये तुम आई हो और प्रभु भी आये हैं? सत्यानाश! अब मैं उनके सामने निकलूँ तो किस तरह निकलूँ?'

कुबेर ने अचरज से कहा, 'कौन हो जी तुम? अभी निकल आओ, वर्ना मकान में आग लगा दूँगा।'

तब दरवाजा खोलकर घूँघट में लिपटी एक नारीमूर्ति बाहर निकल आई। कुबेर ने घुड़की लगाते हुए कहा, 'रहने दो अब नखरा, अपना घूँघट खोलो!'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिर नीचा किये हुए घूँघट वाली ने जवाब दिया, 'प्रभु, यह मुँह दिखाऊँ भी तो किस तरह ?'

कुबेर बोले, 'क्यों ? जला लिया है क्या ? चिन्ता मत करो, महादेव जिस साँड पर सवारी करते हैं उसका गोबर लगाने से ही ठीक हो जाओगे ।'

यकायक यक्षिणी ने आगे बढ़कर एक झटके से उसका घूँघट खोल दिया। सिर पीटती हुई नारी-मूर्ति बिलख पड़ी, 'हाय हाय, इससे तो मेरी मौत ही अच्छी थी ।'

कुबेर ने पूछा, 'तुम कौन हो ? वह स्थूणाकर्ण नामं का यक्ष कहाँ गया ? तुम क्या उसकी रखैल हो ?'

'महाराज, मैं आप ही का हतभाग्य किंकर स्थूणाकर्ण हूँ । दैव के फेर से मेरी यह दशा है, हालाँकि इसमें मेरा कोई कसूर नहीं है । हे प्रिये, हम लोग सचमुच बड़े अभागे हैं, शाप की शान्ति हो जाने पर भी हम लोगों के मिलन का कोई उपाय नहीं ।'

यक्षिणी ने कहा, 'महाराज यही हमारे पति हैं, वह देखिए जुड़ी भवें, और नाक का तिल भी बदस्तूर है। हाय नाथ, तुम्हारी ऐसी दशा क्यों हुई ? क्या किसी देवता से छेड़खानी की थी ?'

यक्ष ने कहा, 'दूसरे की भलाई करने में मेरी यह फजीहत हुई । इस दुनिया में भलाई नाम की कोई चीज नहीं और न सत्य का पालन ही कुछ है ।'

यक्षणी ने कहा, 'तुम औरत कैसे बन गए ?'

कुबेर ने कहा, 'ऐसा हो जाता है । बुधपत्नी इला पहले पुरुष थी, हर-पार्वती के एकान्त स्थान में प्रवेश करने के कारण स्त्री बन गई । बालि-सुग्रीव के पिता ऋक्ष राज एक सरोवर में स्नान करने से बंदरिया बन गए थे । बहरहाल, स्थूणाकर्ण, तुम सारी घटना ब्योरेवार बताओ !'

यक्ष कहने लगा—'महाराज करीब तीन महीने हो गए कुछ सूखी लकड़ी बटोरने के लिए मैं निकट के उस जंगल में गया था । देखा पेड़ के नीचे एक ललना बैठी आँसू गिरा रही है ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यक्षिणी ने कहा, वह 'स्त्री शक्ल-सूरत में कैसी थी ?'

'उसे सुन्दरी कहा जा सकता है, लेकिन तुम्हारे मुकाबले में कुछ नहीं। डील-डौल ऊबड़-खावड़ और चेहरे पर लुनाई की भी कमी थी। हाँ महाराज, उसके बाद सुनिए ! मैंने उस नारी से पूछा, भद्रे तुम्हें क्या हो गया है ? अगर मुसीबत में पड़ी हो तो मैं भरसक उसे दूर करने की कोशिश करूँगा।'

उसने यह अद्भुत विवरण दिया।—'महाशय, मैं पांचालराज द्रुपद की कन्या शिखंडिनी हूँ; लेकिन लोग मुझे राजपुत्र शिखंडी कहकर ही जानते हैं। पूर्व जन्म में मैं काशिराज की ज्येष्ठ कन्या अम्बा थी। स्वयंवर सभा से भीष्म ने हम तीनों बहनों का हरण किया था अपने सौतेले भाई विचित्र वीर्य के साथ विवाह कराने के लिए। मुझे शाल्वराज से अनुराग है यह जानकर भीष्म न मुझे उनके पास भेज दिया। शाल्व ने कहा, राजकन्या, मैं तुम्हें ग्रहण नहीं कर सकता। क्योंकि भीष्म ने तुम्हारा हरण किया था औ— उनके स्पर्श ने तुम्हें अवश्य ही पुलकित किया होगा। तब मैंने भगवान् परशुराम की शरण ली। उन्होंने भीष्म से कहा, तुम्हीं को अम्बा से विवाह करना चाहिए। भीष्म राजी न हुए। परशुराम ने उनके साथ युद्ध किया, पर उससे कुछ नतीजा न निकला। भीष्म के कारण ही मेरा नारी-जन्म बेकार गया, इस कारण भीष्म की मृत्यु-कामना करके मैं कठोर तपस्या करने लगी। उससे महादेव ने प्रसन्न होकर वरदान किया—तुम अगले जन्म में द्रुपद-कन्या बनकर जन्म लोगी; लेकिन बाद में पुरुष बनकर भीष्म का वध करोगी। महादेव के वरदान से मेरा जन्म द्रुपद-गृह में हुआ। कन्या होने पर भी राजपुत्र शिखंडी के रूप में ही पाली-पोसी गई और अस्त्र-विद्या भी सीख ली। जवानी में मेरा विवाह दशर्णराज हिरण्यवर्मा की कन्या से हुआ, लेकिन कुछ देर बाद ही मैं पकड़ी गई। मेरी पत्नी ने अपनी नौकरानी के जरिए अपनी माँ को कहला भेजा—अम्मा री, तुम लोग ठगे गए हो, मेरा ब्याह जिसके साथ हुआ है वह मर्द नहीं, औरत है।'

'यह दुस्संवाद सुनकर मेरे श्वसुर हिरण्यवर्मा गुस्से से पागल हो गए। दूत भेजकर मेरे पिता द्रुपद से उन्होंने कहा, दुर्मति तुमने मुझे धोखा दिया है। मैं सैन्यों के साथ तुम्हारे राज्य में आ रहा हूँ—मेरे साथ चार चतुर जवान औरतें भी जा रही हैं वे मेरे जवांई शिखंडी की परीक्षा करेंगी। अगर यह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देखा गया कि वह पुरुष नहीं है तो मैं तुम्हें तुम्हारे अमात्य परिजनों सहित विनष्ट कर दूंगा ।'

'पिता जी की यह भीषण विपदा देखकर मैं घर छोड़कर इस जंगल में भाग आई हूँ । मेरे लिए ही मेरे स्वजनों पर यह विपदा आ पड़ी है तो मुझे इस जीवन से क्या प्रयोजन ? मैं यहीं पर अनाहार से प्राण दे दूंगी ।'

'यक्षराज, शिखंडिनी का यह इतिहास सुनकर मुझे बड़ी हमदर्दी हुई । मैंने कहा, कहो, तुम क्या चाहती हो ? मैं धनपति कुबेर का अनुचर हूँ— अदेय वस्तु भी दे सकता हूँ ।'

शिखंडिनी ने कहा, 'यक्ष मुझे पुरुष बना दो !'

मैंने कहा, 'राजकन्या, अपना पुरुषत्व तुम्हें चन्द रोज के लिए उधार दे सकता हूँ, उससे तुम अपने पिता और अपने स्वजनवर्ग को दशर्णराज के क्रोध से बचा सकती हो । लेकिन परीक्षा में सफल होते ही तुम यहाँ पर आकर मेरा पुरुषत्व लौटा जाओगी । मेरे शाप की शान्ति होने में ज्यादा देर नहीं, प्रिया से मिलने के लिए मैं भी अधीर बैठा हूँ, इसलिए तुम जल्द ही लौट आना ।'

'महाराज, उसके बाद शिखंडिनी जो गई सो गई, लौटकर न आई । वह मिथ्यावादिनी द्रुपदनन्दिनी धोखेबाजी से मेरा पुरुषत्व लेकर भाग गई और उसके बदले अपना तुच्छ नारीत्व दे गई ।'

यक्ष की बात सुनकर यक्षिणी बोल पड़ी, 'एक अजनबी औरत के रोने से बहककर अपनी अमूल्य सम्पदा तुमने उसे दे दी । नाथ तुम कितने बुद्धू हो, निरे बुद्धू !'

कुबेर ने कहा, 'तुम एक गजमूर्ख, गधे गोबरगणेश हो । बहरहाल, मैं तुम्हें अभी तुम्हारा पुरुषत्व वापस दिला दूंगा । चलो मेरे साथ ।'

सभी पांचाल राज्य में पहुँचे । राजधानी से कुछ दूर एक सुनसान जंगल में पुष्पक रथ रोककर कुबेर ने अपने एक अनुचर से कहा, 'द्रुपदपुत्र शिखंडी को सन्देश भेजो कि धनेश्वर कुबेर ने तुम्हें बुलाया है, अगर नहीं आओगे तो पंचाल राज्य का सर्वनाश होगा ।'

शिखंडी व्यग्र-सा होकर तत्काल आया और प्रणाम करके बोला— 'यक्षराज मेरे लिए क्या आज्ञा है ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुबेर ने कहा, 'शिखंडी, तुमने मेरे किंकर इस स्थूणाकर्ण को धोखा दिया है, इसकी प्रिया से इसे मिलने नहीं दिया—जो वचन दिया था उसकी रक्षा नहीं की। अगर अपना कल्याण चाहते हो तो अभी इसका पुरुषत्व वापस करो !'

शिखंडी बोला, 'धनेश्वर मैं अवश्य ही अपना वचन रखूँगा, मुझे विलम्ब हो गया है इसलिए क्षमा माँग रहा हूँ। इस यक्ष ने मेरा महोपकार किया है कृपया कुछ रोज और मुहलत दीजिए ;'

कुबेर ने पूछा, 'क्यों ? तुम्हारी इच्छा क्या पूरी नहीं हुई।'

'यक्षराज जो विपदा आने वाली थी वह तो टल गई । दशर्णराज हिरण्यवर्मा के साथ जो युवतियाँ आईं उन्होंने मेरी बार-बार परीक्षा की और उनसे कहा कि आपका जवांई सम्पूर्ण रूप से पुरुष है—बल्कि सोलह आने के बजाय अट्ठारह आने पुरुष है। यह बात सुनकर मेरे श्वसुर जी ने काफी लज्जित होकर मेरे पिताजी से क्षमा-याचना की और पर्याप्त भेंट देकर अपने लाव-लश्कर के साथ प्रस्थान कर गए। जाते वक्त अपनी लड़की को भी घुड़की सुना गए कि तुम बड़ी बेवकूफ हो। मैं इस यक्ष महाशय से महीना भर की और मुहलत माँग रहा हूँ, उसी बीच कुरुक्षेत्र का युद्ध भी समाप्त हो जायगा। भीष्म का वध करने के उपरान्त मैं स्थूणाकर्ण का ऋण चुका दूँगा।'

महारथी भीष्म का वध तुम कर पाओगे, यह बिल्कुल अविश्वास्य बात है। वही तुम्हारा वध करेंगे और उसीके साथ-साथ तुम्हारा पुरुषत्व भी जाता रहेगा। यह सब नहीं चलेगा, तुम इसी क्षण, स्थूणाकर्ण का पुरुषत्व लौटा दो और नारीत्व वापस ले लो ! वर्ना मैं गवाह-सबूत वगैरा लेकर अभी तुम्हारे श्वसुर के पास जाऊँगा। तुम्हारी धोखेबाजी की बात सुनते ही अपने लाव-लश्कर के साथ हमला करके पंचाल राज्य का ध्वंस करेंगे।'

शिखंडी ने व्याकुल होकर कहा, 'हाय मेरी क्या गति होगी ?'

कुबेर बोले, 'सोच किस बात का है ? तुम्हारे भाई धृष्टद्युम्न हैं, पंच पांडव बहनोई हैं, पांडवसखा कृष्ण हैं। वे ही भीष्म-वध का आयोजन करेंगे ।'

शिखंडी बोला, 'ऐसा हो नहीं सकता। भीष्म पांडवों के पितामह हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

और द्रोण उनके आचार्य हैं। इन दोनों गुरुस्थानियों का वे वध नहीं करेंगे। इसी कारण भीष्म-वध का भार मेरे ऊपर और द्रोण-वध का भार धृष्टद्युम्न पर पड़ा है।

कुबेर ने कोई बहाना न सुना। आखिर लाचार होकर शिखंडी ने यक्ष को उसका पुरुषत्व लौटाकर अपना नारीत्व वापस ले लिया। तब कुबेर के साथ यक्ष और यक्षिणी बड़े आनन्द के साथ अलकापुरी लौट गए।

विषाद से भरा शिखंडी बहुत देर चिन्ता करने के बाद कृष्ण के पास गया। संयोग से देवर्षि नारद भी उस समय वहाँ मौजूद थे। कृष्ण बोले, 'यह क्या है शिखंडी, तुम ऐसे अवसन्न क्यों दीख रहे हो ? दो रोज पहले ही तुम्हारी वीरोचित तेजस्वी मूर्त्ति देखी थी—अब फिर कोमल नारी-सुलभ भाव क्यों देख रहा हूँ ?'

शिखंडी बोला, 'वासुदेव मेरी विपदाओं का अन्त नहीं।'

नारद बोले, 'अब तुम लोग आराम से बातें करो मैं चलूँ !'

शिखंडी ने कहा, 'नहीं, नहीं देवर्षि आप जाइए नहीं। आप तो मेरा सब इतिहास जानते ही हैं, आपसे तो कुछ भी छिपा नहीं है।'

सारी घटना बताकर शिखंडी ने कहा, 'कृष्ण, तुम पांडव और पांचालों के सुहृद हो। मेरी बहन कृष्णा तुम्हारी सखी है। मुझे इस संकट से उबारो पूर्व जन्म से ही मेरा संकल्प है कि मैं भीष्म का वध करूँगी—महादेव का वरदान भी मुझे मिला ह। लेकिन पुरुषत्व न मिलने पर मैं कैसे युद्ध करूँगी?'

कृष्ण बोले, 'तुम्हारा संकल्प धर्मसंगत नहीं है। नारी होकर जन्म लिया है—[illegible] किक ढंग से पुरुष क्यों बनना चाहती हो ? भीष्म का वध करने का भार किसी दूसरे पर छोड़ दो। देवर्षि क्या कहते हैं ?'

नारद न कहा, 'अजी शिखंडी, कृष्ण ने अच्छा ही कहा है। शाल्वराज और भीष्म ने तुम्हारा प्रत्याख्यान किया है तो क्या हुआ ? दुनिया में और भी पुरुष हैं। तुम अगर राजी हो तो मैं तुम्हारे पिता से बताऊँगा, वह किसी अच्छे वर के हाथ तुम्हें सौंप दें। उसीसे तुम्हारा नारी-जन्म सार्थक होगा। तुम्हारी पत्नी का भी सहारा लग जायगा, वह तुम्हारी सौत बनकर मजे में रहेगी।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिखंडी ने कहा, 'ऐसा न कहिए देवर्षि ! महादेव ने मुझे जो वर दिया है वह सफल होकर ही रहेगा। कृष्ण तुम्हारे लिए कुछ भी असाध्य नहीं है; तुम मुझे पुरुष बना दो !'

कृष्ण बोले, 'मैं विधाता नहीं कि अनहोनी संभव कर दूँ। उसी यक्ष की नाईं कोई अगर स्वेच्छा से तुम्हारे साथ अंग-विनिमय कर ले तभी तुम पुरुष बन सकते हो। लेकिन लगता है कि ऐसा कोई मूर्ख और है नहीं। क्यों देवर्षि, आप तो विश्व-ब्रह्मांड का चक्कर लगाते रहते हैं आपकी जान-पहचान का कोई है ?'

नारद ने कहा, है, 'उन्हें तुम भी जानते हो। सुनो शिखंडी, वृन्दावनधाम में कृष्ण के दूर रिश्ते के एक मामा हैं। वे गोपवंशी हैं—नाम है आयान घोष। वे अत्यन्त सदाशय, परोपकारी व्यक्ति हैं, लेकिन बड़े ही मनःक्लेश में हैं, धर्म-कर्म में ही पड़े रहते हैं—संसार से उन्हें कोई आसक्ति नहीं। तुम उनकी शरण में जाओ !'

शिखंडी ने कहा, 'वासुदेव, तुम मेरे लिए विशेष अनुरोध करके श्री आयान को एक पत्र लिख दो, वही लेकर मैं उनके पास जाऊँ।'

कृष्ण बोले, 'पागल हो गए हो ? मेरा नाम अगर भूल से भी ले लिया तो तुम्हें फौरन वह खदेड़ देंगे। सुनो शिखंडी, मेरा भाग्य बड़ा खराब है, अकारण ही मैं चन्द लोगों का विरागभाजन बन गया हूँ—कंस, शिशुपाल और मेरे पूजनीय मामा आयान घोष। यहाँ तक कि, मेरे पुत्र शाल्व के श्वसुर दुर्योधन भी मेरे दुश्मन बन गए हैं।'

शिखंडी बोले, 'तो उपाय क्या है ?'

नारद बोले, 'उपाय तुम्हारे हाथों में ही है। औरत के नाज़-नखरे और पुरुष की कूटबुद्धि दोनों ही तुम्हारे स्वभाव-सिद्ध हैं—उन्हीं से काम निकालना पड़ेगा। चलो मेरे साथ—श्री आयान के साथ तुम्हारा परिचय करा दूँगा।'

वृन्दावन के एक छोर पर, लोकालय से दूर यमुना के किनारे कुटिया बनाकर आयान घोष रहते हैं। तिपहर को यमुना-तट पर बैठ वह रावण-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रचित 'शिवतांडव स्तोत्र' का पाठ कर रहे थे, ऐसे ही समय शिखंडी के साथ नारद वहाँ जा पहुँचे ।

साष्टांग प्रणाम करके आयान ने कहा, 'देवर्षि मैं धन्य हूँ कि मुझे आपका दर्शन मिला । इस सुन्दरी को तो मैं पहचान नहीं पा रहा हूँ ।'

नारद ने कहा, 'ये पंचालराज द्रुपद की कन्या शिखंडिनी हैं । भगवान् शूलपाणि ने इन्हें एक कठोर व्रत पालन करने का भार दिया है । वह व्रत जब तक पूरा न हो जाय तब तक इन्हें अनब्याही रहना पड़ेगा । लेकिन किसी सदाशय, धर्मप्राण पुरुष की सहायता के बिना इनका संकल्प पूरा न होगा । महामति आयान, मैं दिव्यचक्षु से देख रहा हूँ कि तुम्हीं वह भाग्यवान पुरुष हो । इनकी प्रार्थना मान लो, व्रत समाप्त होते ही यह अशेष गुणवती ललना तुम्हें पतित्व में वरण करेंगी और तुम्हारा जीवन धन्य होगा ।'

एक लम्बी उसाँस छोड़कर आयान बोले, 'हाय देवर्षि मेरा जीवन कैसे धन्य होगा । मेरी गृहस्थी रहते हुए भी नहीं है, घर सूना है । लोग मुझे तुछ-लाते हैं, नाकाम कादर कहते हैं और पीठ पीछे धिक्कारते हैं । इसीलिए लोगों का सम्पर्क त्यागकर इस एकान्त में रहता हूँ । यह वरवर्णिनी राजकन्या मेरे ऐसे अभागे के पास क्यों आई है ?'

शिखंडी ने मधुर स्वर में कहा, 'गोपश्रेष्ठ महात्मा आयान, आपकी गुणराशि सुनकर मैं दूर से ही मुग्ध हो गई थी; अब आपको देखकर मैं विह्वल हो गई हूँ, आप ही के चरणों में मन-प्राण सभी सौंप रही हूँ ।'

आयान ने कहा, 'मेरे इस वंचित, तुच्छ जीवन में ऐसे सौभाग्य का उदय होगा मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था । मनोहारिणी शिखंडिनी, मेरे पास कुछ भी ऐसा नहीं है जो तुम्हें अदेय हो । मुझसे तुम क्या चाहती हो बताओ !'

शिखंडी बोली, 'देवर्षि आप ही इन्हें समझा दीजिए !'

व्रत के बारे में संक्षेप में बताकर नारद ने कहा, 'गोपेश्वर आयान, महादेव के वर से शिखंडिनी अवश्य ही सिद्धि-लाभ करेंगी, तुम्हें सिर्फ एक महीने के लिए अपना पुरुषत्व इन्हें दे देना पड़ेगा । कुरुक्षेत्र का युद्ध उसी बीच समाप्त हो जायगा, भीष्म का भी स्वर्ग-लाभ होगा; उसके बाद ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजा द्रुपद तुम्हारे हाथों कन्या-दान करेंगे। पंचाल राज्य का आधा हिस्सा और बछड़ों के साथ बहुत-सी गायें भी दहेज में देंगे। वृन्दावन की अप्रिय स्मृति पीछे छोड़कर तुम नई पत्नी के साथ नये देश में बड़े सुख से राज्य करोगे।'

थोड़ी देर चिन्ता करने के बाद आयान की दुविधा दूर हुई। उन्होंने अपनी भावी वधू की प्रार्थना पूरी की। फिर से पुरुषत्व पाकर शिखंडी नारद के साथ हर्ष से डगमग चली गई। उसके बाद स्त्रीरूपी आयान कुटिया का दरवाजा बन्द करके असूर्यम्पश्या हो शिखंडिनी की आशा में दिन बिताने लगा।

कुरुक्षेत्र के युद्ध के दसवें दिन शिखंडी के वाणों से जर्जर होकर भीष्म शरशय्या पर लेट गए। उसके आठ रोज बाद युद्ध समाप्त हुआ, लेकिन शिखंडी आयान के पास लौटकर न आई, क्योंकि वह आ नहीं सकती थी। गहरी रात में पांडव-शिविर में प्रवेश करके अश्वत्थामा ने जिनकी हत्या की थी उनमें शिखंडी भी थी।

आयान के भाग्य में राज-कन्या और आधा राज्य न मिला और उसका पुरुषत्व भी शिखंडी के साथ ध्वंस हो गया। लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि उसका जीवन विफल हो गया। समय के परिवर्त्तन के साथ आयान में एक अनोखा आध्यात्मिक परिवर्त्तन भी आया। वह अपना तन-मन श्री कृष्ण को सौंपकर आयानी नाम से प्रसिद्ध हुए, श्री खोल (मृदंग) बजाना सीख गए और ब्रजमंडल में जो सोलह हजार गोपियाँ रहती थीं उनकी नेत्री बनकर निरन्तर कृष्ण कीर्त्तन करने लगे।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: ११ :

राजमहिषी

हंसेश्वर राय बड़े धनी व्यक्ति हैं। राधानाथपुर में उनकी जो जमींदारी थी, वह अब सरकार के कब्जे में चली गई, लेकिन उससे हंसेश्वर के बदन पर एक भी खरोंच नहीं आ पाई। कलकत्ता के उन इलाकों में जहाँ दफ़्तर वगैरह हैं और जो मुहल्ले के शौकीन माने जाते हैं, उनमें उनके बड़े-बड़े सोलह मकान हैं। उनसे हंसेश्वर राय को हर माह पच्चीस हजार रुपये की आमदनी होती है। इसके अलावा गिरवी का कारोबार है। काफी शेयर भी हैं। हंसेश्वर की उम्र पचास के करीब है। उनकी पत्नी हेमांगिनी गृहस्थी में अनासक्त, भारी-भरकम शरीर लेकर बिस्तर पर पड़ी-पड़ी दवा और पुष्टिकर पथ्य खाती हुई किस्से-कहानी की किताबें पढ़कर दिन काटती है और बीच-बीच में घर के लोगों को घुड़की देती रहती है—'कितने आलसी अपाहिज आ जुटे हैं, यहाँ पर!' इन दोनों की अकेली सन्तान चकोरी ने हाल ही में एम. ए. पास किया है।

हंसेश्वर को कलकत्ता भाता नहीं। उनके चाव-चस्कों के लिए राधानाथपुर ही उचित जगह है, इसीलिए वह वहीं रहते हैं। उनका एक बहुत बड़ा बगीचा है, गाएँ, बत्तखें और मुर्गियाँ हैं। खेती और पशु-पक्षियों की जितनी भी प्रदर्शनियाँ होती हैं, उनमें उनके आम, कटहल, लौकी, कुम्हड़ा, बत्तख, मुर्गी ही सर्वोच्च पुरस्कार पाते हैं। हाल में उन्होंने पश्चिमी पंजाब के गुजराँवाला से एक अच्छी नस्ल की भैंस मँगवाई है, जिसके लिए उन्हें अपने एक पाकिस्तानी दोस्त को मोटी रिश्वत भी देनी पड़ी। भैंस का नाम रखा है, राजमहिषी। चन्द रोज पहले ही उसकी पहली पड़िया हुई है। आगामी पश्चिमी बंगाल पशु-प्रदर्शनी में वे इस भैंस को भेजेंगे। उनके सबसे बड़े प्रतिद्वंद्वी तालदीघी के राय साहब महिम बनर्जी हैं, जिनके पास एक मलतानी भैंस है। हंसेश्वर को उम्मीद है कि उनकी राजमहिषी ही राज्यपाल का स्वर्णपदक पायगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हंसेश्वर की बेटी चकोरी कलकत्ता में अपने मामा की देख-रेख में शिक्षा पाती थी। अब पढ़ाई खत्म कर के राधानाथपुर में अपने माँ-बाप के साथ रह रही है। बीच-बीच में दो-चार रोज के लिए कलकत्ता जाती है। चकोरी लम्बी, दुबली-पतली, बड़े-बड़े दाँत वाली, ऊँचे जबड़े वाली है और उसका कुदरती रंग कुछ मटमैला है। भरपूर चौकस मेक-आप के बावजूद उसे कोई सुन्दरी कहने की गलती नहीं करेगा। चकोरी से डाह करने वाली सहेलियाँ ताने मारती हैं कि वह अपना रूप उर्वशी से कम नहीं समझती। और मिजाज क्या है साक्षात् नागदेवी। महज उसके बाप की जायदाद के लालच से वे खुशामदी उसे छेंके रहते हैं।

लड़की की शादी के लिए हेमांगिनी को तनिक भी चिन्ता नहीं; और न हंसेश्वर को ही कोई जल्दी है। वह कहते हैं, चकोरी होशियार और हिसाबी लड़की है। बुद्धू लड़कियों की तरह आँखें मूँदकर प्रेम क्यों करने लगी? तड़क-भड़क या दो मीठे बोल से गुमराह नहीं होगी। और जल्दबाजी भी काहे की। आजकल तो तीस-पैंतीस के बाद लड़कियों की शादी का रिवाज हो गया है। अच्छी तरह देख-भालकर अपनी पसन्द का दूल्हा चकोरी खुद ही ढूँढ़ लेगी।

चकोरी के प्रेम के जितने उम्मीदवार हैं, उनमें सबसे ढीठ है बंशीधर। हाल में पी-एच. डी. मिलने के बाद उसे टाली गंजकालेज में प्रोफेसरी मिली है। बौटनी और जुओलौजी पढ़ाता है। उसके पिता शशधर चौधरी का, दो साल हुए, स्वर्गवास हो गया। वे वकील थे, और हंसेश्वर की कलकतिया जायदाद की देख-भाल भी किया करते थे। बंशीधर की ननिहाल राधानाथपुर में है। वहाँ वह बीच-बीच में जाता रहता है। चकोरी के साथ उसका बचपन से परिचय है। हंसेश्वर को वह 'चाचा जी' कहकर पुकारता है।

पूजा की छुट्टी में बंशीधर राधानाथपुर आया था। एक रोज उसने चकोरी से कहा—"अब और क्या देरी है? तुम्हारी पढ़ाई भी खत्म हो चुकी है और मुझे भी जैसी-तैसी एक नौकरी मिल गई है। अब तुम्हें क्या एतराज है? तुम ज्यों ही राजी हो जाओगी, मैं फौरन ही तुम्हारे पिताजी से बातचीत शुरू कर दूँगा।"

चकोरी ने कहा, "मामला जितना आसान समझ रहे हो उतना आसान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है नहीं । अपनी ओर से मैं इतना ही कह सकती हूँ कि तुम मुझे पसन्द हो। तुम काफी सीधे व ठंडे मिजाज के हो। हालाँकि तुम्हारे नाम में कुछ पुरानापन है। बंशीधर सुनते ही लगता है कि कोई सपेरा है। लेकिन प्रेम में गद्‌गद् हो जाने वाली लड़की मैं नहीं हूँ। पिताजी को अगर मना लो, तो शादी करने में मुझे कोई एतराज नहीं है। पिताजी भी कोई सीधे-सादे आदमी नहीं हैं। किस्म-किस्म के पचड़े खड़े कर देंगे। तुममें अगर हिम्मत और धैर्य हो तो, उनसे कहकर आजमा सकते हो।"

अगले रोज हंसेश्वर के पास जाकर बंशीधर ने निवेदन किया कि उसे कुछ कहना है। हंसेश्वर उस वक्त भैंस के प्रातःकृत्य का निरीक्षण कर रहे थे। बंशीधर से बोले, "जरा सब्र करो!" उसके बाद राजमहिषी के परिचारक से उन्होंने कहा, "ऐ गोपीराम, बहुत अच्छी तरह से बदन पोंछ-पाछ देना! कहीं जरा-सी भी कीच न लगी रहे। यह क्या है रे, नथुने के ऊपर मच्छर ने काटा है? उसके कमरे में डी. डी. टी नहीं छिड़कता है क्या?"

गोपीराम ने जवाब दिया, "बहुत छिड़के हैं हुजूर। लेकिन दीदी से मच्छर नहीं भागते। अगर हुकुम दें तो अपने गाँव से चार बगुले मँगा लें।"

"बगुला क्या चीज है रे?"

"बगुला, हुजूर, बगुला! गोशाला में रखने पर मक्खी, मच्छर, पतिंगा, मकड़ा सब पटापट खा जायगा और भैंस और उसका बच्चा आराम से सो पायँगे।"

"बगुला रहेगा क्यों? वह तो भाग जायगा भले मानस!"

"नहीं हुजूर उनके डैने ज़रा कतर दूँगा। फिर वे उड़ नहीं पायँगे। पन्द्रह दिन के बाद गाँव से मेरा एक चाचा आयगा, कहिए तो बगुला लाने को लिख दें। चार बगलों के लिए बीस रुपए खर्च बैठेंगे!"

"अच्छी बात, आज ही लिख दो!"

गोपीराम को और कुछ सलाह देने के बाद हंसेश्वर बंशीधर को अपने दफ़्तर वाले कमरे में ले गए। पूछा, "हाँ बंशी, क्या खबर है?"

सिर झुकाये हथेलियाँ मलते हुए बंशीधर ने कहा, "चाचा जी बहुत दिनों की एक दुराशा है। उसी सिलसिले में आपसे सम्मति की भीख माँगने आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हंसेश्वर ने कहा, "अऽ । चकोरी से शादी करना चाहते हो, यही बात है न ?"

बंशीधर ने डरते हुए जवाब दिया, "जी हाँ ।"

हंसेश्वर ने कहा, "सुनो बंशी, मैं खरी बात सुनाने वाला आदमी हूँ । जोड़ी के बतौर तुम अच्छे ही हो । शक्ल-सूरत में चकोरी से काफी ज्यादा अच्छे हो । पढ़े-लिखे भी हो और मुझे जितना मालूम है उसके मुताबिक तुम्हारा चाल-चलन भी अच्छा है । लेकिन तुम्हारी माली हालत कुछ अच्छी नहीं । कलकत्ता में तुम्हारा एक पुश्तैनी मकान जरूर है, पर वहाँ तुम्हारी माँ, नानी, भाई, बहन, भांजे इतनी भीड़ जमाये रहते हैं कि उसमें चकोरी एक मिनट भी नहीं ठहर पायगी । फिर तुम्हारी आमदनी कितनी है ? तनख्वाह कितनी मिलती है ? दो सौ ही न ? बाद में ढाई सौ मिलेंगे ? बौराये हो ? उस रुपये से चकोरी को रखना चाहते हो ? उसके साबुन, क्रीम, पौडर, पेण्ट, लिपस्टिक, सेंट इन सबका खर्च ही ढाई सौ से ऊपर है । तुमने शायद सोच रखा हो कि दामाद की परवरिश के लिए हर माह मैं कुछ मोटी रकम देता रहूँगा । सो होने का नहीं बबुआ !"

बंशीधर ने कहा, "मेरे गरीब होने में क्या हर्ज है चाचाजी ? चकोरी आपकी इकलौती सन्तान है । वह सुख से रहे इसके लिए आप रुपए-पैसे की मदद पहुँचायँगे । यह तो बिलकुल स्वाभाविक ही है । आपकी गैर-मौजूदगी में उसीको तो सब-कुछ मिलेगा ।"

"गैर-मौजूदगी होने में काफी देर है । मैं अभी चालीस साल तक जिऊँगा । उससे पहले मैं एक पैसा भी न छोड़ूँगा । लड़की जब तक अनब्याही है, मेरे पैसे से ऐश करे, मुझे कोई एतराज नहीं । लेकिन शादी के बाद सारी जिम्मेदारी उसके पति को लेनी पड़ेगी । और मान लो, अगर तुम्हारा सब खर्च मैं ही निबाहूँ, उससे क्या तुम्हारा सिर नीचा नहीं हो जायगा ? बाप की तनख्वाह के गुलाम पति को कोई भी लड़की आदर की निगाह से नहीं देखती । और मैं भी क्यों किसी चैरिटी-बाय को जवाँई बनाने जाऊँ ?"

बंशीधर ने कातर स्वर में कहा, "तो क्या मेरी आशा पूर्ण न होगी ?"

"आशा, हाँ, हो सकती है । तुम जी जान से लग जाओ कि तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आमदनी बढ़े। तुम्हारी माहवारी आमदनी ढाई हजार हो जाय, तो मुझे कोई एतराज न होगा।"

"इतने रुपये पैदा करने की तो कोई सूरत नजर नहीं आती। और, क्या चकोरी उतने दिन तक इन्तजार करती रहेगी ?"

"सब्र करेगी या नहीं, यह मैं कैसे कह सकता हूँ ? इस बारे में तुम्हीं उसके साथ बैठकर फैसला कर सकते हो। हाँ, एक बात और तुम्हारे लिए जान लेनी जरूरी है। बगैर मेरी इजाजत के अगर चकोरी को पट्टी पढ़ाकर शादी करने के लिए मजबूर कर दिया तो पूरी जायदाद हरिणघाट को दान कर दूँगा—गाय, भैंस, बकरी आदि पशुओं और बत्तख, मुर्गी आदि पक्षियों की उन्नति के उद्देश्य से। और चकोरी को भी अगर मेरी जायदाद मिल जाय तो तुम्हारा क्या फायदा होगा ? वह बड़ी चालाक लड़की है। किसी पर भी एतबार नहीं करती। बैंक की चैकबुक तुम्हें कभी नहीं देगी। जो जायदाद पायगी, उसमें भी तुम्हें हाथ नहीं लगाने देगी। बहुत होगा तो तुम्हें सिगरेट का खर्च दे दिया करेगी या सालगिरह पर कुछ उपहार भेंट कर दिया करेगी। एक सूट, कोई अच्छी पोशाक, रिस्टवाच या कोई कीमती फाउण्टेन पेन। चकोरी से शादी करने का मनसूबा अगर तुम बदल सको तो तुम्हारे लिए बेहतर होगा।"

बंशीधर दुखी होकर चला गया। शाम को उससे सब बातें सुनने के बाद चकोरी ने कहा, "पिताजी तुमसे ऐसी ही बात करेंगे, यह मैं पहले से ही जानती थी।"

बंशीधर ने कहा, "चकोरी, तुम्हारे पिताजी की जायदाद उन्हींको सलामत रहे ! मुझे उसका कोई लालच नहीं है। तुम अगर सचमुच मुझसे प्यार करती हो तो कुछ त्याग क्यों नहीं कर पातीं ? प्रेम के लिए नारी क्या कुछ नहीं करती ? अगर तुममें प्यार है तो तुम मेरे उसी पुराने, छोटे मकान में और इस मामूली आय में भी सुखी रह सकती हो।"

चकोरी ने हँसकर कहा, "सुनो बंशी ! प्रेम बड़ी ऊँची चीज है और तुम पर मेरा प्यार कुछ कम नहीं है। लेकिन पैसा-विहीन प्रेम और पहियाहीन गाड़ी दोनों ही अचल हैं। तकलीफ की गिरस्ती में प्रेम रसहीन हो जाता है।

'प्रेमी को लेकर बन में जाऊँ और रहूँ बीच बन के,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धन-दौलत कुछ भी न चाहूँ, देखूँ मुँह प्रियतम के'।

"यह मुझ से न बनेगा। तुम्हें डराकर भगाने के लिए हालाँकि पिता जी ने बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा है। उन्होंने मुझे एकदम हृदयहीन राक्षसी ही बना दिया ह। लेकिन मैं इतनी हठधर्मी नहीं हूँ। फिर भी पिताजी ने कुछ बेजा भी नहीं कहा। मैं कहती हूँ कि तुम प्रोफेसरी छोड़कर किसी अच्छी नौकरी की तलाश करो! पिताजी की मंत्रियों के साथ मुलाकात है। उनसे कहो तो वे तुम्हें कोई अच्छी नौकरी दिला सकते हैं। पहले तनख्वाह कम भी हो, पर बाद में ढाई-तीन हजार होना कुछ असंभव नहीं है।"

"उतने दिनों तक तुम मेरे लिए इन्तजार करोगी ?"

"गारंटी नहीं दे सकती। अक्षय प्रेम एक बकवास है। भविष्य में मेरा और तुम्हारा, दोनों का मिजाज बदल सकता है। जो कहती हूँ, सुनो! एक अच्छी-सी सरकारी नौकरी के लिए पिताजी के पीछे पड़ जाओ! लेकिन अभी नहीं। अभी उनका दिमाग ठिकाने नहीं है। दिन-रात उसी भैंस के बारे में सोचते रहते हैं। पिताजी के खुफिया लोगों ने बताया है कि तालदीघी के महिम बनर्जी की मुलतानी भैंस साढ़े बीस सेर दूध दे रही है। हम लोगों की राजमहिषी से तनिक ज्यादा। हालाँकि दोनों ही हम-उम्र और तरुणी हैं। इसीलिए पिताजी डर गए हैं। राजमहिषी को बिनौले की भूसी, मूँगफली, पालक का साग, मटर, गाजर, टमाटर, गरी की कतरन, सन्तरे का रस यही सब पौष्टिक चीजें खिला रहे हैं और विटामिन 'बी कौम्प्लेक्स' भी दे रहे हैं। प्रदर्शनी खत्म हो जाने दो! राजमहिषी को अगर गोल्ड मैडल मिल गया तो पिताजी बड़े दरियादिल हो जायँगे। तभी उनसे नौकरी के लिए कहना।"

बस एक महीने के बाद ही पश्चिम-बंग गवादि पशु प्रदर्शनी होनी है और हंसेश्वर बड़ी मुसीबत में फँस गए हैं। राजमहिषी ने खाना-पीना छोड़ दिया है और दूध भी बहुत कम कर दिया है। इस सबका गोपीराम ही, जो कि राजमहिषी का प्रधान सेवक था, जिम्मेदार है। अपने यार-दोस्तों के साथ रासपूर्णिमा के मेले में जाकर, खूब ताड़ी पीकर उसने हंगामा मचा रखा था। पुलिस के आ जाने पर उसके साथ दिलेरी से लड़ते हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक कॉस्टेबल का सिर फोड़ दिया था उसने। सो उसे गिरफ़्तार करके थाने में चालान कर दिया गया। खबर पाते ही उसे छुड़ाने के लिए हंसेश्वर ने बहुत कोशिश की। कलकत्ता से अच्छे बैरिस्टर भी मँगा लिये। अदालत में उन्होंने प्रार्थना की कि जुर्माना करके मुजरिम छोड़ दिया जाय। लेकिन हाकिम ने उनकी एक न सुनी। छः महीने की कैद की सजा का हुक्म सुना दिया। तब बैरिस्टर ने कहा, "योर आनर, यह गोपीराम अगर जेल चला जायगा, तो हंसेश्वर राय का सर्वनाश हो जायगा। उनका मशहूर चेम्पियन बफेलो राजमहिषी गोपीराम के विरह में खाना-पीना छोड़ बैठी है। अगर उसका खाना-पीना बन्द रहा तो अगले कैटल-शो में वह किस तरह खड़ी हो पायगी ? इसलिए, योर आनर, कृपा करके मोटी जमानत लेकर मुजरिम को एक महीने के लिए छोड़ दीजिए, प्रदर्शनी खत्म होते ही वह जेल चला जायगा।" लेकिन हाकिम बड़े ही जिद्दी मिजाज के और नासमझ थे। उन्होंने कुछ भी नहीं सुना। इसलिए गोपीराम इस वक्त जेल में है।

हंसेश्वर को पहले यह समझ में नहीं आ पाया था कि उनकी भैंस गोपीराम से इतनी परकी हुई है। अब उन्हें कहीं भी कोई ओर-छोर दिखाई नहीं दे रहा था। गोपीराम के कोई भी सहकारी डर के मारे आगे नहीं बढ़ते थे। नजदीक जाते ही राजमहिषी उन्हें सींग मारने दौड़ती। सिर्फ हंसेश्वर को वह नजदीक आने देती, बदन पर हाथ फेरने देती। लेकिन वे भी, काफी खुशामद करने के बाद उसे खिला नहीं सके।

हंसेश्वर की यह मुसीबत सुनकर बंशीधर उनके साथ मुलाकात करने आया। वह उस समय सिंगापुरी केले का पूरा एक घौद भैंस के नथुने के पास हाथ में लिये उसे ललचा रहे थे और खाने के लिए खुशामद कर रहे थे। पर भैंस गर्दन फेर लेती थी।

बंशीधर ने कहा, "चाचा जी, क्या मैं भी कोई मदद कर सकता हूँ ?"

हंसेश्वर खौखिया उठे, "सींग की चोट खाने की ख्वाहिश हो तो आगे आओ !"

अचानक बंशीधर के दिमाग में एक लहर दौड़ गई। हंसेश्वर के पास से खिसककर उसने गोपीराम के सहकारियों के साथ बातचीत करके राजमहिषी के बारे में बहुत-सी खबरें जान लीं। उसके दूसरे रोज सुबह की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ट्रेन से वह बर्दवान जेल में गोपीराम से मुलाकात करने चला गया। उसका उद्देश्य सुनकर जेलर ने खुशी से इजाजत दे दी।

राधानाथपुर लौटकर हंसेश्वर से उसने कहा, "चाचा जी आप चिन्ता न कीजिए ! आपकी भैंस खाने लगे उसका इन्तजाम मैं कर रहा हूँ।"

हंसेश्वर ने कहा, "यह तो सुनाओ कि तुम्हारा इन्तजाम क्या है ? तुम उसे खिलाने जाओगे न ! देख लेना वह तुम्हें सींग मार देगी।"

"मैं नहीं, आप ही उसे खिलाइएगा। गोपीराम के साथ मुलाकात करके मैंने सब राज जान लिया है। मामला ऐसा है। भैंस को खिलाते वक्त गोपीराम उसके बदन पर हाथ फेरते हुए एक गाना गाता था। वह गाना सुने बिना राजमहिषी को खाने में रुचि नहीं होती।"

"यह तो बड़ी अजीब बात है !"

"जी, रूसी वैज्ञानिक पैवलोव ने इसे ही 'कंडीशंड रिफ्लैक्स' कहा है। आपको यह गाना सीखना होगा।"

हंसेश्वर ने कहा,"गाना-वाना मुझे आता नहीं। बहरहाल वह कौन-सा गाना है ?"

बंशीधर ने कहा, "चाचा जी, मेरी भी एक कंडीशन (शर्त्त) है। पहले कबूल कीजिए कि भैंस अगर पहले की तरह खाने लगे तो मुझे आप मोटी बख्शिश देंगे।"

"क्या चाहते हो तुम ? चकोरी के साथ शादी करना ?"

"चकोरी की बात बाद में होगी। अगर मैं कामयाब हो गया तो आप अपने तीन मकान मुझे दे दें—ब्रेबोर्न रोड का आठ मंजिला, चौरंगी का छः मंजिला और सदर्न एवेन्यू का तिमंजिला।"

"तुम्हारी हिम्मत तो कुछ कम नहीं है छोकरे ! इन तीनों मकानों से मुझे हर माह करीब साढ़े पाँच हजार रुपये मिलते हैं—यह बात तुम्हें मालूम है ?"

"जी जरूर जानता हूँ। लेकिन उससे कम में तो नहीं होगा चाचा जी ! जब मेरा रोजगार उतना होगा, तब मेरे साथ चकोरी की शादी करने में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आपको कोई एतराज न होगा। आपका भी कुछ फायदा ही होगा, इन्कम टैक्स, प्रापर्टी टैक्स भी आपका कुछ कम हो जायगा।"

"यह मुझे मालूम नहीं था कि तुम इतने बड़े शैतान हो। बहरहाल, जब और कोई चारा ही नहीं, तो तुम्हारी शर्त मुझे मंजूर है। राजमहिषी अगर पेट भर खाने लगे तो तुम्हें ये तीनों मकान दे दूँगा। और अगर न खाये तो तुम्हें इस मकान के पास भी कभी फटकने न दूँगा।"

"जो हुकुम।"

"वचन तो दिया। अब वह गाना क्या है जरा सुनें ?"

"जी, सुनाते शर्म लग रही है। यह गाना भद्र-समाज में सुनाने लायक नहीं है। लेकिन अब कोई चारा भी नहीं है। मुझ ही से आपको यह गाना सीखना पड़ेगा। गोपीराम का गाना है—

'सोनामुखी राज भैंसी पागल करे छे
जादू करेछे रे हामाय टोना करेछे
झमें-झमें, झाँय झाँय, झमें-झमें, झाँय झाँय' !"

"यह कैसा गाना है ?"

"इस गीत का भी एक इतिहास है। गोपीराम पहले दरभंगा में रहता था। वहाँ एक पागल बंगालियों के मकान के सामने यही गाना गाया करता था। लेकिन उस गाने की पहली पंक्ति में कुछ फर्क था। वह था—सोनामुखी बंगालिन पागल करेछे। यह गाना सुनते ही घर के लोग दुरदुरा-कर उस पागल को खदेड़ देते थे। गोपीराम ने वह गीत सीख लिया था और सिर्फ 'बंगालिन' की जगह पर 'राज भैंसी' लगा दिया। आप मेरे साथ गला मिलाकर अभ्यास कीजिए। आज रात दस बजे तक रिहर्सल चलेगा।"

बड़ी ही अनिच्छा के साथ राजी होकर हंसेश्वर गाना सीखने की कोशिश करने लगे। वंशीधर ने बार-बार चेतावनी दी—"'राजमहिषी' नहीं है चाचा जी, 'राज-भैंसी' कहिए, 'आमाय' मत कहिए, कहिए 'हामाय'। उच्चारण भी बिलकुल गोपीराम-जैसा होना जरूरी है। हाँ, अब करीब-करीब आ गया है आपको। घंटा भर और राग अलापने पर यह गाना मँज जायगा।"

सबेरे हंसेश्वर ने कहा, "देखो बंशी, राजमहिषी को खिलाते वक्त तुम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे पीछे रहना ! मेरे साथ रहने पर वह फुंकारेगी नहीं । एक बात और । सिर्फ मैं और तुम ही वहाँ पर होंगे । और कोई रहेगा तो मैं गाना नहीं गा पाऊँगा ।"

बंशीधर ने कहा, "ठीक है और किसी से रहने की जरूरत भी नहीं है ।

राजमहिषी के लिए बंशीधर दो बाल्टी राजभोग ढोकर ले गया । हंसेश्वर ने उसे नाँद में डाल दिया । बंशीधर पीछे से जाकर बोला, "चाचा जी, अब गाना शुरू कीजिए !"

भैंस की पीठ पर हाथ फेरते हुए हंसेश्वर ने मधुर स्वर में कहा, "अरे मेरी लाड़ली प्यारी, पेट भरकर खा ले । नहीं तो सेहत कैसे ठीक रहेगी, दूध कैसे दे पायगी, वह मुलतानी तुम्हें हरा देगी । हँ हँ हँ.....

'सोनामुखी राज-भैंसी पागल करेछे' ।"

भैंस ने फों-फों करते हुए लम्बी साँस ली । बंशीधर ने फुसफुसाकर कहा, "रुकिए मत चाचा जी, दिल लगाकर बार-बार गाते रहिए । आखिरी लाइन के स्वर में गलती न कीजिए 'झमें-झमें झाँय झाँय झमें झमें झाँय झाँय ! नि नि धाप् पा पा मा माग् गा गा रे सा' ।"

ताल-मान-लय को ठीक रखते हुए हंसेश्वर ने तीन बार गाना खत्म किया और चौथी बार शुरू किया—'सोनामुखी राजभैंसी' इत्यादि ।

अचानक भैंस ने सिर नीचा करके नाँद में मुँह डाल दिया । उसके बाद उस सुनसान आँगन की खामोशी तोड़ते हुए मृदु कोमल आवाज आने लगी—चवत्–चवत्-चवत् ।' राजमहिषी भोजन करने लगी ।

बाद की घटनाएँ ब्योरेवार बतलाने की जरूरत नहीं हैं । पन्द्रह दिन के अन्दर ही राजमहिषी का रूप गजेन्द्राणी के समान हो गया । बदन के हल्के रोएँ की आड़ से घना लाल-स्याह रंग भर आया, विशाल पयोधरों से रोजाना छब्बीस सेर दूध निकलने लगा । पश्चिम-बंग-गवादि-प्रदर्शनी में उसने महिम बनर्जी की मुलतानी और दूसरे प्रतियोगियों को अनायास ही हरा दिया । राज्यपाल ने उसके बदन पर जरा-सा हाथ फेर लिया और कृषि-मंत्री ने रजनीगन्धा की एक माला उसके गले में पहना दी । राजमहिषी प्रसन्न होकर वह अर्घ्य स्वीकार करके चबाने लगी ।

बंशीधर की नई फरमाइश सुनकर हंसेश्वर ने कहा, "फिर नौकरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

का शौक क्यों चर्राया ? मेरे सीने पर मूँग दलकर जितना बन सका हड़प तो चुके हो ?"

बंशीधर ने कहा, "जी, एक अच्छी-सी पोस्ट न होने पर सेल्फ-रेस्पेक्ट नहीं रहेगा। लोग कहेंगे कि साला अपने ससुर के पैसे से नवाबी कर रहा है।"

(एक अंग्रेजी कहानी के प्लाट का अनुसरण करते हुए। लेखक का नाम याद नहीं।)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १२ :

नवजातक

सोमनाथ की पत्नी उमा आसन्न प्रसवा थीं। बगल के कमरे में डॉक्टर, नर्स और दाई तैयार बैठे थे। बाहर बैठक में शुभेच्छु स्वजनवर्ग प्रतीक्षा कर रहा था, उमा और सोमनाथ दोनों की ही यह अभिलाषा थी कि सन्तान भूमिष्ठ होते ही सब लोगों का आशीर्वाद पा जाय। सोमनाथ बेचैनी से एक कमरे से दूसरे कमरे में घूम-फिर रहे थे। डॉक्टर बार-बार उसे समझा रहे थे कि इतने उतावले क्यों हो रहे हैं, यह बात सही है कि वह पहली बार प्रसव करने वाली हैं, फिर भी आपकी पत्नी का स्वास्थ्य काफी अच्छा है इसलिए चिन्ता का कोई कारण नहीं।

शाम के साढ़े सात बजे थे। उदीयमान ज्योति-सम्राट् तारक सान्याल ने अपनी कलाई-घड़ी देखकर कहा, "रेडियो से मिला रखी है, करैक्ट टाइम। अगर ऐन आठ बजकर पाँच मिनट पर बच्चा भूमिष्ठ होता है तो वह राजचक्रवर्ती होगा। डॉक्टर को चाहिए कि तब तक बच्चे को रोक रखें।"

नास्तिक भुजंग भंज ने कहा, "क्या चंडूखाने की हाँकते हो। तुम लोगों का ज्योतिष तो शुरू से आखिर तक गलत है, जन्म-क्षण तय करने से ही क्या होगा? जो आ रहा है वह न तुम्हारी बात सुनेगा, न डॉक्टर की रुकावट की परवा करेगा, वह तो अपनी मर्जी से वक्त पर निकल आयगा। और भला ऐसा ही क्यों माने ले रहे हो कि लड़का ही होगा?"

"बेशक लड़का होगा। मैंने सोमनाथ की बीबी की हस्तरेखा देखी है, इसके अलावा खना* के फारमूले से हिसाब लगाने पर, भाग शेष एक मिला है, एक से सुत, दो से सुता, तीन होने पर गर्भ झूठा।"

---

* किंवदन्तियों में प्रसिद्ध ज्योतिर्वित् नारी, बराह की पुत्रवधु, मिहिर की पत्नी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अचानक सोमनाथ भागता हुआ आया और सिर का बाल नोचता हुआ बोला, "ओफ् अब तो यह दर्द देखा नहीं जाता। कौन-सा पाप मैंने किया है जिसके लिए उसे इतना क्लेश उठाना पड़ रहा है।"

सोमनाथ के बहनोई पाँचूबाबू ने कहा, "पाप नहीं, तुम्हारा सिर। तुमने पाप क्या किया है, मानवधर्म का पालन किया और अपनी बीबी को श्रेष्ठ भेंट दी है बस। न देने पर हमेशा उलाहना ही मिलता। लेकिन हाँ, अगर उसे तुम तीन बार से ज्यादा सौरी में भेजते हो तो तुम्हें बर्बर, स्वार्थी, समाजद्रोही कहूँगा। अब कोई मलका विक्टोरिया का जमाना नहीं कि दर्जनों बच्चे दान करने पर देश के लोग आभारी हों।"

पंडित हरिविष्णु सत्यार्थी बोले, "अजी सोमनाथ बहू को जम्भला का नाम रटने को कहो! 'अस्ति गोदावरी तीरे जम्भला नाम राक्षसी, तस्या स्मरणमात्रेण गर्भिणी विशल्या भवेत्।' यानी गोदावरी के किनारे जम्भला नामक राक्षसी रहती हैं, जिसका नाम स्मरण करते ही गर्भिणी का दर्द दूर होकर सुप्रसव होता है।"

तारक ज्योतिषी बोले, "अभी नहीं, आठ बजकर तीन मिनट पर जम्भला का नाम लेने को कहना! कल सबेरे ही मैं जन्म-पत्री बनाने लग जाऊँगा, प्राच्य और पाश्चात्य सिद्धांत, भृगु और जैडकिल दोनों का ही समन्वय करूँगा, प्राचीन नवग्रह और आधुनिक यूरेनस, नेपचून, प्लूटो कुछ भी नहीं छुटेगा। देख लीजिएगा मेरी भविष्य गणना कितनी अचूक निकलती है।"

पाँचूबाबू बोले, "भविष्य तो बाद की बात है, शिशु के वर्त्तमान पर कुछ प्रकाश डाल सकते हैं?"

"जी नहीं, वर्त्तमान मेरे दायरे के बाहर है, मेरा कारोबार सिर्फ भविष्य के साथ है।"

हरिविष्णु सत्यार्थी बोले, "गीता में है, जीव में केवल मध्यम दशा यानी जीवित दशा के बारे में ही हम जान सकते हैं, उससे पूर्व वह क्या था और मृत्यु के बाद क्या होगा, वह अज्ञात है। सोमनाथ की सन्तान इस समय अतीत और वर्त्तमान के सन्धिक्षण पर है। इस सम्बन्ध में हमारे शास्त्र में जो कुछ है बताता हूँ, सुनिए! परलोकवासी मानवात्मा के पाप-पुण्य का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

फलभोग जब समाप्त होता है तब वह मृत्यु-लोक में आ गिरती है और मेघ में प्रवेश करके जलमय रूप पा जाती है। वही जल वर्षा के रूप में पत्र, पुष्प, फल, मूल, औषधि तथा वनस्पति में संचरित होता है और उन्हींके भक्षण से नर-नारी की देह में शुक्र एवं शोणित उत्पन्न होते हैं। गर्भाधान के समय शुक्र की अधिकता से पुरुष, शोणित की अधिकता से स्त्री और दोनों के संतुलन से क्लीव की सृष्टि होती है। गर्भाशय मध्यस्थ भ्रूण प्रथम दिवस पर पंकतुल्य, पाँच दिन में बुल्ले, सात दिन में पेशल, एक पक्ष में अर्बुद, पच्चीस दिन में घन, और एक महीने में ठोस आकार पाता है। दो महीने में मस्तक, तीन महीने में ग्रीवा, चार महीने में त्वचा, पाँच महीने में नख तथा रोम, छः महीने में चक्षु, कर्ण, नासिका और मुख का सर्जन होता है। सातवें महीने में भ्रूण स्पन्दित होने लगता है, आठवें में उसमें बुद्धि जुड़ती है और नवें महीने में सभी अंग-प्रत्यंगों को पूर्णता प्राप्त हो जाती है। जन्म के उपरान्त ही शिशु में अनुभूति आती है। क्रमशः वह वृद्धि प्राप्त करता है, प्राक्तन कर्म के अनुसार संसार में सुख-दुःख भोगता है और मृत्यु के बाद पुनः देहान्तर प्राप्त करता है।"

पाँचूबाबू बोले, "अजी प्रोफेसर अनादि, तुम लोगों का शास्त्र क्या कहता है ?"

बायोलजिस्ट अनादि राय बोले, "सत्यार्थी जी ने कुछ गलत नहीं कहा है। हम लोग जो कुछ जानते हैं उसे सुनाता हूँ। पहले अति क्षुद्र दो कोषों के संयोग, उससे क्रमशः असंख्य कोषों की उत्पत्ति, उसीका परिणाम यह मानव-देह है। पहले कई महीने भ्रूण मनुष्य के रूप में पहचाना नहीं जा सकता, लगता है मछली, छिपकली या बिल्ली का छौना है। करोड़ों साल से मनुष्य का जो क्रमिक रूपान्तर हुआ है गर्भाशयस्थ भ्रूण मानों उसीका पुनराभिनय करता है। चार-पाँच महीनों में उसकी शक्ल इन्सानों-जैसी हो जाती है, वह हाथ-पैर हिलाने लगता है, बीच-बीच में सिर के बल गर्भ में हुमसता भी है, शायद उँगली भी चूसता हो। गर्भवास के समय वह साँस नहीं लेता, लेकिन डेढ़ महीने का हो जाने के बाद ही उसका दिल धुकपुकाने लगता है। भ्रूण की पुष्टि के लिए, हर वह वस्तु, जो उसके लिए आवश्यक होती है, माँ के खून से फूल या प्लासेंटा में से फिल्टर होकर गर्भनाड़ी से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होती हुई उसकी देह में प्रवेश करती रहती है। जरायुस्थ तरल पदार्थ में वह मानो जलचर की भाँति रह रहा हो, भूमिष्ठ होते ही वह सहसा थलचर बन जाता है। दो-एक मिनट में ही वह साँस लेने की कोशिश करता है, हिचकियाँ लेकर रोने लगता है और उसके नाक-मुँह से लार झरने लगता है। नवजात मानव-शावक लम्बाई में एक हाथ से कम, वजन में करीब साढ़े तीन सेर, सिर बड़ा, पेट लम्बा, हाथ-पैर छोटे-छोटे होते हैं। माँ-बाप, बहन-भाई के साथ उसके चेहरे में कितना ही सादृश्य रहे, वह एक स्वतंत्र तथा बेजोड़ आदमी होता है। प्रथम कई महीने वह बकरी के बच्चे-जैसा असहाय होता है, लेकिन उसके बाद धीरे-धीरे उसकी शक्ति और बुद्धि दोनों क्रमशः बढ़ने लगती हैं।"

हरिविष्णु सत्यार्थी बोले, "अनादिबाबू ने सिर्फ स्थूल देह की उत्पत्ति का ब्योरा दिया, किन्तु मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार और आत्मा के बारे में कुछ नहीं बताया।"

अनादि राय बोले, "ये सब-कुछ जब जानता ही नहीं हूँ सत्यार्थी जी तो भला बताऊँ कैसे ?"

सोमनाथ के कान खड़े थे। सहसा एक अस्पष्ट कराह सुनते ही व्यस्त व व्यग्र होकर वह भागे। तारक सान्याल ने अपनी कलाई-घड़ी पर निगाह जड़ दी। बाकी सभी लोग खामोशी से इन्तजार करने लगे। उसके बाद अचानक आवाज आई—'ओ आं, ओ आं।'

तारक ज्योतिषी बोले, "आठ बजकर तीन मिनट, हाय, दो मिनट रुक गया होता तो क्या ही अच्छा होता। बहरहाल, मेरी गणना में कोई गलती नहीं हुई है, पुत्र ही तो है न।"

भुजंग भंज ने कहा, "यह तुम्हें कैसे मालूम पड़ गया ?"

वह जो बिलौटे की तरह बोल पड़ा। लड़की होती तो 'उआँ उआँ' करती।"

कवि श्रीकंठ नन्दी अब तक चुप थे। अब बोले, "तारकबाबू सही कहते हैं। कृत्तिवास ने अपनी रामायण में लिखा है, जनक राजा ने हल चलाते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुए अचानक देखा, मिट्टी के ढेलों में से एक छोटी-सी लड़की निकल आई है, 'उआँ उआँ करि काँढे येन सौदामिनी।"

भुजंग भंज बोले, "तारक की तरह गणना करके तो सभी बता सकते हैं। या तो लड़की होगी या लड़का, इन दोनों में अगर एक बाइ चान्स मिल जाय तो उसमें कौन-सी बहादुरी है ?"

सोमनाथ की भांजी तोता शंख बजाती हुई आई और बोली, "भाभी को मुन्ना हुआ है, इत्ता बड़ा गुलाब की तरह लालोलाल।"

पाँचूबाबू बोले, "लालोलाल रंग एक महीने में ही नवघनश्याम हो जायगा। तेरा मामा क्या कर रहा है री ?"

नर्स बार-बार चले जाने को कह रही है पर मामा उस कमरे से हिलते ही नहीं। बच्चे की ओर टकटकी लगाये खड़े हैं।"

"हंऽ। मेरे जब पहली दफा लड़का हुआ तो सोचा, वाह वाह। सोमनाथ की वही दशा है। अब देर करने की क्या आवश्यकता है, हम लोगों का आशीर्वाद अभी हो जाय। सोमनाथ को बुलाने की जरूरत नहीं है, बाद में बता दिया जाय तो कोई हर्ज नहीं। उसे इस समय बच्चे का चाँद-सा मुखड़ा ही देखने दिया जाय। सत्यार्थी जी, आप ही शुरू कीजिए !"

गला खंखारकर हरिविष्णु सत्यार्थी सस्वर शुरू हो गए—

"कुलं पवित्रं जननी कृतार्था
वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।
अपार संवित्सुख सागरे हस्मिन्
लीनं परे ब्रह्मणि यस्य चेतः॥"

यह नवकुमार स्वस्थ विद्वान्, धर्मप्राण होकर जीवित रहे, परम ज्ञान लाभ करे, परब्रह्म-रूप अपार संवित्सुसागर में उसका चित्त लीन हो, उसीसे वंश पवित्र होगा, जननी कृतार्था होगी, वसुन्धरा पुण्यवती होगी। इससे बड़ा आशीर्वाद मेरे ज्ञान में और नहीं।

पाँचूबाबू ने हाथ हिलाते हुए कहा, "यह कैसा वाहियात आशीर्वाद दिया आपने सत्यार्थी जी ! सोमनाथ के लड़के का चित्त अगर परब्रह्म में लीन हो जाय तो बाकी उसका बचा ही क्या ? उसके माँ-बाप नाते-रिश्तेदार बड़ी मुसीबत में पड़ जायँगे।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हरिविष्णु सत्यार्थी ने कहा, "अच्छी बात, तो आप अपने मन के मुताबिक भी एक आशीर्वाद दे दीजिए न।"

पांचूबाबु बोले, "सुनिए। आशीर्वाद देता हूँ कि यह लड़का स्वस्थ शरीर लेकर दिन-ब-दिन बढ़ता रहे—बीमारी से ज्यादा भुगतकर माँ-बाप को ज्यादा तंग न करे। सुन्दर, सबल मुन्ना बनकर बालगोपाल की तरह उधम मचावे, वक्त पर लिख-पढ़ ले, अच्छा रोजगार करे, प्रेम करने के उपरान्त शादी कर ले या शादी करने के उपरान्त प्रेम करे। वह तेजस्वी और वीर बने। गुंडा बनने का आशीर्वाद नहीं दे रहा हूँ, पर एक झाँपड़ के बदले तीन झाँपड़ रसीद कर सके। जरूरत पड़ने पर वह देश के लिए लड़े, उड़े या जहाज चलावे। वह अलस-विलास-हो-हल्ले में न फँसे, नाच-गान और फिल्म में ज्यादा दिलचस्पी न ले, चोर, रिश्वतखोर, शराबी लम्पट न बने। बहुत लोगों का वह प्रतिपालन करे, काफी कमाकर जनहित में खर्च करे, लेकिन ज्यादा रुपया इकट्ठा करके वंशधरों का दिमाग न बिगाड़ दे। उसके असंख्य मित्र हों, चन्द शत्रु भी, वर्ना वह आत्मगर्वी बन जायगा। वह जितना चाहे साहित्य, विज्ञान, दर्शन, कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग की चर्चा करे, पर कहीं बुद्ध, ईसा, शंकर या श्री चैतन्य की तरह संसार-त्यागी न बन जाय। उसे महापुरुष, परमपुरुष या अवतार बनने की बिल्कुल जरूरत नहीं। लेकिन हाँ, बंकिमचन्द्र ने काट-छाँटकर जिस तरह bowdlerized निर्दोष सर्वगुणान्वित आदर्श पुरुष श्रीकृष्ण खड़ा किया है अगर वह उस तरह हो सके तो मुझे कोई एतराज नहीं। कुल मिलाकर हम यह चाहते हैं कि सोमनाथ का बेटा एक मान्य, गण्य, स्वनामधन्य चौकस परिपूर्ण पुंगपुरुष बन जाय, जिसे कहते हैं hundred per cent he-man."

भुजंग भंग ने कहा, "पाँचूदा ने जो कुछ कहा सो अच्छा ही है, पर उनके आशीर्वाद में बुर्जोआ भाव उभर आया है। प्रजा का भाग्य और राष्ट्र का भाग्य एक साथ सम्बन्धित है, राष्ट्र का संस्कार न होने से प्रजा का सर्वतोमुखी कल्याण नहीं हो सका। इसलिए राष्ट्र और प्रजा दोनों की कल्याण-कामना करते हुए मैं आशीर्वाद देता हूँ कि यह सद्यजात भारत-सन्तान ऐसे शासनतंत्र का आश्रय पावे जो उसे सर्वतोमुखी शिक्षा दे, उसकी योग्यता के अनुसार कार्य दे, उसकी आवश्यकता के अनुसार योग्य जीविका का बन्दोबस्त

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करे, वह तन-मन-धन से राष्ट्र का भक्त हो, उसका चित्त परब्रह्म में लीन न होकर राष्ट्र में ही लीन हो। वह यह समझ सके कि वह राष्ट्र का ही एक अंग है, हाथ-पैर आदि की तरह वह भी एक प्रकांड मस्तिष्क के अधीन है—स्वतंत्र नहीं।"

पाँचूबाबू बोले, "तुम कहना चाहते हो कि यह शिशु राष्ट्रदास बनकर जन्म ले चुका है और हमेशा राष्ट्रदास ही बना रहेगा। उसे अपने विचार पर चलने का या उस तरह विरोध जताने का कोई अधिकार नहीं, जैसा अधिकार राष्ट्र के सब प्रकांड मस्तिष्क यानी बड़ों-बड़ों को है। यह सब नहीं चलेगा जी, सोमनाथ का अपत्य राष्ट्रनायकों को माई-बाप बनाकर मशीन की गुड़िया की तरह हाथ-पैर हिलायगा या चींटी या शहद की मक्खियों की तरह निश्चित संस्कार से बँधा एकरस जीवन बितायगा ऐसा हम लोग नहीं चाहते। अजी श्रीकंठ कवि, तुम्हारा कंठ नीरव क्यों है? तुम भी एक आशीर्वाणी उचारो न!"

श्रीकंठ नन्दी बोले, "बोलने का मौका ही कहाँ मिल रहा है? स्वर्ग से एक शिशु आया है, उसे कहाँ तो लाड़-दुलार से घर में आसन दें, सो नहीं, बस वायोलाजी, ब्रह्मनिर्वाण, समाज-तत्त्व और राजनीतिक झाँय-झाँय। आइए हम लोक नवजात का अभिनन्दन करें, महात्मा कबीर ने जिस प्रकार अपने पुत्र कमाल को पाकर कहा था हम भी सोमनाथ की ओर से कहें—

'अजब मुसाफिर घर में आया धरो मंगल थाल,
उज्जर बंस कबीर का उपजे पुत्र कमाल।'

—अनोखा यात्री घर में आया है, मंगल थाल लेकर उसका वरण करो, कबीर का वंश उजागर हुआ, पुत्र कमाल ने जन्म लिया। या टेनीसन की तरह उदात्त कंठ में संभाषण कीजिए—

'Out of the deep, my child, out of the deep
From the great deep, before our world begins,
Where on the spirit of God moves as he will....
From that true world within the world we see,
Where of our world is but the bounding shore

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

With this ninth moon, that sends the hidden sun
Down you dark sea, thou comesh, darling boy.'

या रवीन्द्रनाथ की तरह कहिए—

'सब देवतार आदरेर धन
नित्यकालेर तुई पुरातन
तुइ प्रभातेर आलोर समवयसी ।
तुइ जगतेर स्वप्न हते
एसेछिस आनन्दस्रोते' —

लाज व संकोच भरा चेहरा लिये सोमनाथ कमरे में दाखिल हुए और बोले, "चाय बनाने के लिए कह दूँ ? उसके साथ कचौड़ी और रसगुल्ला ?"

पाँचूबाबू बोले, "राम कहो ! तुम्हारे ऊपर इस समय जाताशौच है, इस घर की कोई भी चीज हम नहीं खा सकते हैं, क्यों सत्यार्थी जी ? एक महीना बीत जाय, तुम्हारी बीबी भली चंगी हो जाय, उसके बाद मुन्ने को गोद में लिये हम लोगों को, जो खुशी से परोसेगी ।"

तोता बोली, "भई वाह मुन्ने को गोद में लिये कहीं परोसा जा सकता है ।"

"अच्छा अच्छा, मुन्ना तेरे मामा की गोद में रहेगा ।"

"और अगर मामा के—"

"तब तो मेरे मामा की चौदह पुश्त तर जायगी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १३ :

पत्र-व्यवहार

सुकान्त दत्त बड़ा भला लड़का है। एम-एस० सी० पास करने के कुछ दिन बाद ही पी-एच० डी० की डिग्री भी उसे मिल गई। एक अच्छी-सी नौकरी तलाश करके करीब साल भर हुआ, सिन्द्री के खाद कारखाने में काम कर रहा है। उसके माँ-बाप जिन्दा नहीं हैं—मामा ने उसे पाला-पोसा था।

आज सुबह की डाक में मामा से सुकान्त को एक चिट्ठी मिली। उन्होंने लिखा है—"सुकान्त, तुम्हारी शादी विजयलक्ष्मी काटन मिल के मालिक विजय घोष की बेटी सुनन्दा के साथ तय की गई है। पुराना घराना है। विजय बाबू हम लोगों के नजदीक शांखारीपाड़ा में ही रहते हैं। लड़की खूबसूरत है, काफी गोरी है, बी-एस० सी० पास नहीं कर पाई, पर काफी समझदार है। फोटो भेज रहा हूँ। अपनी आँखों से देखकर लड़की पसंद करना तुम्हारा काम था। पर पता नहीं क्यों आजकल के लड़के होकर भी तुमने मेरे ऊपर यह जिम्मेदारी सौंप दी। बहरहाल, भरसक देख-सुनकर ही मैंने यह लड़की पसन्द की है। उम्मीद है, तुम्हें भी पसन्द आयगी। २३ फागुन को शादी है। अब से सिर्फ पाँच हफ़्ते के बाद ही। तुम अभी से कोशिश करो, जिससे पन्द्रह दिन की छुट्टी मिल जाय। शादी से कम-से-कम दो रोज पहले तुम्हारा यहाँ पहुँच जाना जरूरी है।"

सुकान्त ने ध्यान से मामा की चिट्ठी पढ़ी। फोटो भी अच्छी तरह से देखा। कुछ देर सोचते रहने के बाद उसने अपने रंग के बक्स से तीन-चार किस्म के रंग निकाले और उसे एक कागज पर लगाया। उसके बाद अपनी कलाई पर वह कागज रखकर देखा कि अपने बदन के रंग के साथ वह रंग मेल खा रहा है या नहीं। उसके बाद और भी थोड़ी देर सोचने-समझने के बाद उसने यह चिट्ठी लिखी—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"श्रीमती सुनन्दा घोष समीपे,

मेरे साथ आपके विवाह का रिश्ता तय हुआ है। मामा जी की चिट्ठी से पता चला कि आप बहुत गोरी हैं। लेकिन मेरा रंग काफी काला है। शायद आप सुन चुकी होंगी कि मैं साँवला हूँ। पर उसमें भी बहुत-से शेड होते हैं। मेरा असली रंग क्या है, यह आपको बताना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ। इसलिए कागज के एक टुकड़े पर रंग लगाकर भेज रहा हूँ। मेरे बाएँ हाथ की कलाई के पिछले हिस्से के रंग से यह रंग पूरी तरह मेल खाता है। इस तरह के घोर साँवले रंग के पति से आपको अगर एतराज न हो तो कृपा करके एक लाइन लिख भेजिएगा—'एतराज नहीं है।' अपने पत्र के साथ लिफाफा भेज रहा हूँ। अगर एतराज हो तो चिट्ठी लिखने की जरूरत नहीं। पाँच रोज में आपकी चिट्ठी न मिली, तो समझ लूँगा कि आप राजी नहीं हैं। ऐसी हालत में मैं मामाजी को लिख दूँगा कि यह रिश्ता मुझे पसन्द नहीं। दूसरी लड़की तलाश की जाय।

भवदीय

सुकान्त।"

चार रोज के बाद जवाब आया—

"डॉ० सुकान्त दत्त समीपे,

एतराज नहीं। लेकिन असली खबर आपको मिली नहीं। मेरे बदन का रंग आपसे भी काला है। लड़की दिखाते वक्त मुझे पेण्ट करके आपके मामाजी को ठगा गया था। लेकिन आपकी तरह सत्यवादी सज्जन को मैं ठगना नहीं चाहती। मेरे पास चित्र बनाने वाला रंग नहीं है। आपने जो नमूना भेजा है, उसी कागज से एक टुकड़ा काटकर उसके ऊपर जरा ब्लू-ब्लैक स्याही लगाकर अपने हाथ के रंग के समान बनाकर भेज रही हूँ।

मर्द के साँवले रंग से कोई नुक्स नहीं पड़ता। पर गोरी लड़की सभी ढूँढ़ते हैं। जोंक की तरह काला कलूटा आदमी भी अप्सरा-सी दुल्हिन चाहता है। आप जरा-सा भी संकोच न करें। मेरे काले रंग से एतराज हो तो रिश्ता तोड़ दें। और एतराज न हो तो पाँच दिन के अन्दर एक लाइन लिखकर सूचित कीजिएगा।

भवदीया

सुनन्दा।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिट्ठी पाते ही सुकान्त ने जवाब लिखा—

"आपका रंग मुझसे भी एक पर्त ज्यादा काला हो तो मुझे उसमें कोई एतराज नहीं। फिर भी सच्ची बात ही बताऊँगा। पहले-पहल मन जरा छोटा पड़ गया था। वजह यह कि सुन्दरी पत्नी एक सम्पदा के समान है। वह पति का गौरव और रौब बढ़ाती है। लेकिन बाद में यह ख्याल हुआ कि ऐसा सोचना महज खुदगर्जी है। फोटो देखकर ही मैं समझ गया हूँ कि आपमें सुडौलपन की कमी नहीं है। इतना ही काफी है। रंग साँवला होने से ही इन्सान बदसूरत नहीं हो जाता।

मेरी एक बुरी आदत है, जिसे बतलाना मैं उचित समझता हूँ। रोज पन्द्रह-बीस सिगरेट मैं पी जाता हूँ। मेरी एक मामी जी कहती हैं कि सिगरेट पीने वालों की साँस में एक बहुत खराब, जले चाम की-सी बू आती है जिसे उन लोगों की बीवियाँ पसन्द नहीं करतीं। लेकिन मारे लिहाज के कुछ कह भी नहीं पातीं। लेकिन दो-चार बंगाली लड़कियाँ मेमों की नकल करके सिगरेट की आदत डाल चुकी हैं, उन्हें शायद एतराज न हो। पर आप अवश्य ही उन लोगों के दल में न आतीं होंगीं। आपको कोई एतराज हो तो एक लाइन लिख भेजिएगा, मैं रिश्ता तोड़ दूँगा।

भवदीय
सुकान्त।"

चार रोज बाद सुनन्दा का जवाब आया—

"चामजली बू से मुझे कोई एतराज नहीं, पर मैंने सुना है कि सिगरेट पीने पर कैन्सर होता है। आप उसे छोड़कर हुक्का पीना क्यों नहीं शुरू कर देते? उसकी गन्ध भी मुझे बुरी नहीं मालूम होती। अब मेरी सुनिए—मेरी भी एक बुरी आदत है। रोजाना बीस-पच्चीस बीड़े पान और जर्दा खाती हूँ। दाँत की क्या हालत होगी, इसका अन्दाजा तो आप लगा ही लेंगे। जो लोग पान जर्दा खाते हैं, सुना जाता है, उनकी साँस से अमोनिया की बू आती है। मेरे छोटे भाई लम्बू की नाक काफी सेन्सिटिव है, कुत्ते से भी ज्यादा। रेडियो पर कृष्ण-सुहागिन देवी का कीर्त्तन होता है, तो उसीसे लम्बू को अमोनिया की बू मिल जाती है। फिर, ग्रामोफोन पर जब उस्ताद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बड़े गुलाम मौला के कनाडा राग का रेकार्ड बजता है, तब लम्बू को लहसुन की बू मिल जाती है। मेरी बुरी आदत के बारे में आपको कोई एतराज न हो, तो एक लाइन लिख भेजिएगा, नहीं तो रिश्ता तोड़ दीजिएगा।

भवदीया

सुनन्दा।"

सुकान्त ने जवाब लिखा—

"आप जब सिगरेट की बदबू बरदाश्त करने को तैयार हैं, तब आपके पान-जर्दे से भी मुझे कोई एतराज नहीं। इसके अलावा हमारे यहाँ के कारखाने में अमोनिया बड़ी मात्रा में तैयार किया जाता है। उसकी मुझे आदत हो गई है। हुक्के के बारे में आपका जो प्रस्ताव है, उस पर गौर करूँगा।

किसी भी मामले में मैं आपको ठगना नहीं चाहता। इसलिए इस पत्र में मैं अपना एक और नुक्स आपको बता रहा हूँ। मर्द लोग जिस तरह से अनन्यपूर्वा स्त्री चाहते हैं, लड़कियाँ भी उसी तरह ऐसा पति चाहती हैं, जिसका पहले कभी किसी लड़की से प्रेम न हुआ हो। मैं यह इकरार करता हूँ कि मैं अक्षत हृदय नहीं हूँ। डिप्टी कमिश्नर लाला तोपचाँद ढींगड़ा की बेटी सुरंगी के साथ मेरा प्रेम हो गया था। उसके माँ बाप को कोई ऐतराज नहीं था, पर सुरंगी ही आखिर में भड़क गई। हाल में उसने कामर्स डिपार्टमेंट के मिस्टर हनुमन्तैया से शादी कर ली है। वह था तो यमदूत-सा काला-स्याह, पर उसकी तनख्वाह मुझसे तिगुनी है। मेरे दिल का घाव अब काफी भर गया है। उम्मीद है, आपसे शादी करने के बाद वह बिलकुल पूरा हो जायगा। सुरंगी का एक फोटो मेरे पास है। आपके सामने ही उसे जला डालूँगा।

सुरंगी की शादी हो जाने के बाद मुझे भी ख्याल हुआ कि मेरी भी शादी जल्दी हो जाना जरूरी है। खाली वक्त में मैं चित्र बनाता हूँ, फोटो खींचता हूँ और कई तरह की वैज्ञानिक खोजें करता हूँ। गिरस्ती का झंझट कन्धों पर लेने के लिए एक घर वाली रहने पर मैं बेफिक्र होकर अपने शौक पूरे कर सकता हूँ। अब मुझे यह अक्ल आ गई है कि अचानक प्रेम में पड़ना बेवकूफी है, एक साथ रहने के कारण आहिस्ता-आहिस्ता स्त्री और पुरुष

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में जो प्रेम जमता है, वही खालिस चीज़ है। सन्तान पैदा होने से पेश्तर उसे देखने का कोई भी उपाय नहीं है, फिर भी माँ-बाप के प्यार में कोई कमी नहीं आती। उसी तरह व्याह से पहले लड़की न देखने से भी कोई नुकसान नहीं। इसीलिए मामा जी पर ही सब-कुछ छोड़ रखा है।

अपने चाल-चलन के बारे में सभी कुछ मैंने आपको बता दिया। एतराज न होने पर जरा खबर भेजिएगा !

भवदीय
सुकान्त।"

सुनन्दा का जवाब आया—

"आपके चाल-चलन और मतामत के बारे में मुझे कोई एतराज नहीं। जो चिट्ठियाँ आपने लिखी हैं, उससे यह समझ पाई हूँ कि आप बड़े ही सत्यवादी, सरल व साधु पुरुष हैं। इसलिए मैं भी सरल मन से अपनी खामियों के बारे में बता रही हूँ। पवनकुमार पोस्ट ग्रेजुएट का विद्यार्थी था, उसके साथ मेरा प्रेम हो गया था। लेकिन वह था भादुड़ी ब्राह्मण। उसके पुराने दर्रे के माँ-बाप मुझे बहू बनाने को राजी नहीं हुए। पवन इस वक्त बंगलौर में है। काफी बड़ी-सी कोई पोस्ट मिल गई है। उसे एकदम भूल नहीं पाई हूँ, पर आपके समान महाप्राण पति पाने पर एकदम भूल जाऊँगी, इसमें कोई शक नहीं। मैं कहती हूँ कि सुरंगी और पवन की फोटो जलाकर क्या होगा, बल्कि एक ही फ्रेम में दोनों की फोटो एक साथ मँढ़वाकर अपने सोने के कमरे में टाँग रखूँगी। इससे जहर से जहर मारने का काम होगा। आपकी क्या राय है ? अपना इरादा बताइएगा !

भवदीया
सुनन्दा।"

सुकान्त ने जवाब लिखा—

"सुनन्दा, आज तुम्हें नाम लेकर सम्बोधित कर रहा हूँ, क्योंकि हम दोनों में अब कोई बात लुकी-छिपी नहीं रह गई। शादी में भी कोई रुकावट नहीं रही। लोग कहते हैं कि मैं जरा गम्भीर तबीयत का आदमी हूँ, मेरी भलाई चाहने वाले मित्र कहते हैं कि मैं जरा बेवकूफ हूँ। तुम्हारी चिट्ठी पढ़कर समझ में आया कि तुम जरा मजाक पसन्द हो और मामाजी की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चिट्ठी से पता चला कि तुम बी० एस-सी० फेल होने पर भी समझदार लड़की हो। लगता है कि तुम्हारी और मेरी प्रकृति एक-दूसरे की पूरक या कंप्लीमेंटरी है। मनोविज्ञान के पंडितों के अनुसार यही सर्वोत्तम जोड़ी है। आदर्श दम्पति के यही लक्षण हैं। आज सोलह फाल्गुन है, सात रोज के बाद हम लोगों की शादी है। तुम्हारे साक्षात्कार की कल्पना का आनन्द ले रहा हूँ।

तुम्हारा
सुकान्त।"

चन्द रोज के बाद ही सुनन्दा की चिट्ठी आई–

"मुझे क्षमा कीजिएगा। सब चौपट हो गया। पवन भादुड़ी यहाँ आ गया है। कल मुझसे मुलाकात करी और कहा, 'देखो सुनन्दा अब मैं आजाद हूँ, अच्छा-खासा कमाता हूँ। माँ-बाप के अधीन रहकर चलने की कोई जरूरत नहीं। तुम मेरे साथ चलो, बंगलौर में सिविल या हिन्दू मैरेज जो चाहती हो वैसा ही होगा।'

अब यह परिस्थिति है। मेरी हालत क्या है, यह तो आप जरूर ही कूत पाये होंगे। पवन भादुड़ी को हँका देना मेरे बस का नहीं। कल ही, यानी आपके साथ शादी के दो रोज पहले ही मैं पवन के साथ तिड़ी हो रही हूँ। लेकिन आपकी ओर भी मेरा एक कर्त्तव्य है। उसी कर्त्तव्य को ध्यान में रखकर आपका इन्तजाम बगैर किये मैं नहीं जा रही हूँ। मेरी छोटी बहन नन्दा मुझसे डेढ़ साल छोटी है। शक्ल-सूरत मुझ-जैसी ही है, सिर्फ रंग गोरा जरूर है। वह भी बी० एस-सी० फेल है। दाँत बिलकुल चमाचम चमकते हुए, पान-जर्दा नहीं खाती, आज तक कभी प्रेम का शिकार भी नहीं हुई। आपकी सब चिट्ठियाँ उसने भी पढ़ी हैं। और पढ़कर काफी मुग्ध हो गई है। आपसे शादी करने के लिए उतावली हो बैठी है। डॉक्टर सुकान्त, आपसे प्रार्थना है कोई हंगामा खड़ा न कीजिएगा, घर के लोगों से भी कुछ न कहिएगा। अपने प्रोग्राम के मुताबिक बारात लेकर वक्त पर हमारे घर आइयेगा, पुरोहित जो मंत्र पढ़ावें, उसे भले लड़के की तरह पढ़िएगा। मेरे पिताजी नन्दा को ही आपके हाथों में समर्पित करेंगे। उसे पाकर आपको जरूर खुशी होगी। आप तो गिरस्ती की देख-भाल के लिए एक घर वाली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चाहते हैं, लिहाजा सुनन्दा के बदले नन्दा मिलने पर भी आपका काम मजे में चल जायगा। अपनी बहन की तारीफ करना भला नहीं लगता, वर्ना मैं विस्तार से लिखती कि नन्दा कितनी अच्छी लड़की है। अब विदा लेती हूँ। इसके बाद कभी मौका मिला, तो आपसे मुलाकात करके क्षमा माँग लूँगी।

भवदीया

सुनन्दा।"

सुनन्दा की उक्त चिट्ठी पाकर सुकान्त भौंचक रह गया। उसे गुस्सा भी आया। लेकिन वह था तर्कवादी यानी रैशनल। थोड़ी देर बाद ही समझ गया कि सुनन्दा का प्रस्ताव बुरा नहीं। जब घर वाली ही चाहिए तो एक लड़की के बदले दूसरी लड़की हो तो क्या नुकसान, खास तौर से जब वह गोरी है और न पान ही खाती है। सुकान्त ने निश्चय किया कि वह कोई हंगामा खड़ा न करेगा। किसी तरह की खोज-खबर भी नहीं लगायगा। पूरी तौर पर मामा के अधीन चलेगा। वह जैसा भी इन्तजाम करेंगे, उसे सिर नवाकर पूरा करेगा।

विवाह से दो दिन पूर्व सुकान्त जब कलकत्ता में मामा के घर पहुँचा, तो किसी ने भी सुनन्दा के बारे में कहीं कुछ न कहा और न कोई व्याकुलता ही दिखाई पड़ी। वक्त पर बारातियों के साथ सुकान्त शादी के मकान पर पहुँच गया। वहाँ पर भी किसी तरह के गोल-माल के कोई लक्षण दिखाई न पड़े।

सुकान्त ने देखा कि सोलह-सत्रह साल का एक लड़का सबको पान और सिगरेट दे रहा है और लड़की वाले उसे 'लम्बू' नाम से पुकार रहे हैं। उसे इशारे से नजदीक बुलाकर सुकान्त ने धीरे से उससे पूछा—"तुम सुनन्दा के छोटे भाई 'लम्बू' हो?"

लम्बू ने कहा, "जी हाँ।"

"इधर की खबर क्या है?"

"खबर सब अच्छी ही है। दीदी का इस वक्त सिंगार हो रहा है। थोड़ी देर बाद ही तो शादी की शुभ घड़ी है।"

"सुनन्दा चली गई?"

"यह क्या कह रहे हैं आप? शादी की दुलहिन कहाँ चली जायगी?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"तुम्हारी और एक दीदी नन्दा है, उसकी क्या खबर है ?"

"वाह भई, मेरी तो एक ही दीदी है जिसके साथ आपकी शादी हो रही है ।"

सुकान्त ने आश्चर्य से कपार पर आँखें चढ़ाते हुए कहा—"अच्छा !"

रात बारह बजे के बाद जब बासर-घर में कोई और न रहा, तब सुकान्त ने अपनी पत्नी से पूछा—"तुम सुनन्दा हो या नन्दा ?"

"दोनों ही । कालेज का नाम सुनन्दा है और घर का नाम नन्दा ।"

"चिट्ठी में इतनी झूठी बातें क्यों लिखी थीं ?"

"कोई बुरा इरादा नहीं था । सत्यवादी, उदार भावी दूल्हे को जरा ठोक-बजाकर देख रही थी कि उसमें बरदाश्त करने की ताकत कितनी है ।"

"तुम्हारे उस पवन भादुड़ी की क्या खबर है ?"

"हवा होकर उड़ गया है । उसका कोई अस्तित्व ही नहीं है । मेरे पास हनुमान जी का एक अच्छा-सा चित्र है, तुम्हारी उस सुरंगी के फोटो के साथ रखने से अच्छा रहेगा न ?"

"तुम बड़ी ही शरीर लड़की हो । तभी तो बी० एस-सी० में फेल हुईं ।"

"झुनी मित्तर मुझसे शरीर में डबल है, पर वह फर्स्ट कैसे आ गई ? मैं सवाल में कच्ची हूँ । मैक्सवेल की थिओरी मेरी समझ में बिलकुल नहीं आती और वही सवाल इम्तहान में आ गया । मैं क्या करती ?"

"क्यों ? वह तो काफी सीधा सवाल है । समझाये देता हूँ । सुनो, बी इक्वल टू रूट ओवर वन बाई कम्पाउंड · · · · ."

"बस, बस ! बासर-घर में सवाल हल करना अशुभ माना जाता है ।"

"अच्छा, कल समझा दूँगा ।"

"कल तो कालरात्रि है । दूल्हा-दुल्हन में मुलाकात नहीं हो सकती । बस परसों सुहाग-रात में ही मुलाकात होगी ।"

"अच्छी बात । तभी समझा दूँगा ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"सुहाग-रात में सवाल लगाने से महापाप होता है, यह भी नहीं जानते क्या ? उस दिन तो मेरी दादी-अम्मा कमरे के बाहर कान लगाकर खड़ी रहेंगी। अगर उन्होंने यह सुन लिया कि सुहाग-रात में नया जवाँई सवाल हल कर रहा है, तो गोबर खिलाकर घर भर का प्रायश्चित्त करेंगी। जल्दी किस बात की है ? मैं कोई भागी थोड़े ही जा रही हूँ। साल भर बीत जाने दो, उसके बाद समझा देना !"

"अच्छा, ऐसा ही होगा। अब क्या कहती हो ? सुनो सुनन्दा, तुम देखने में खूब अच्छी-खासी हो।"

"सच ? तुम्हारी नज़र तो बड़ी तेज है।"

"सुनन्दा, मेरा जी क्या कर रहा है, जानती हो ?"

"मुझे चबाकर खा डालने को ?"

"ठीक ऐसा नहीं। लग रहा है....."

"जो कुछ लगता है, लगने दो ! मगर अब चुपचाप सो जाओ !"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १४ :

सत्यसन्ध विनायक

विनायक सामन्त अस्पताल में मर गया। ख्यातनामा न होने पर भी वह असाधारण था, महात्मा गांधी की तरह जिद्दी सत्याग्रही। फर्क सिर्फ यह है कि गांधीजी मौका-महल देखकर समझौता भी कर सकते थे लेकिन विनायक को इतनी अक्ल न थी। एक अधपगले ने अपनी सनक या दूसरों के बहकावे से गांधीजी की हत्या की थी। विनायक अनगिनत लोगों के भ्रष्टाचार और निष्क्रियता के खिलाफ लड़ता हुआ मरा। उसकी मृत्यु के लिए शायद हम लोगों में सभी थोड़े-बहुत जिम्मेवार हैं। हम लोग मजबूरन बहुत-से बेजा काम किया करते हैं और बहुत-सी बेजा हरकतें बरदाश्त भी करते रहते हैं उसी सबका नतीजा थी विनायक की अपमृत्य। मरने के अलावा उसके सामने और कोई चारा ही नहीं था; क्योंकि सामान्य-ज्ञान शून्य, निष्पाप, हठधर्मी कर्मवीर के लिए दुनिया में कोई जगह नहीं। बगैर कुछ पाप किये इस पापमय धरती पर जिन्दा रहना भी असम्भव है, यह मोटी बात विनायक की अक्ल में समाती ही न थी।

जो लोग उसे पहचानते थे उनमें से सभी को यह विश्वास था कि विनायक के दिमाग में काफी खराबी है, बिलकुल पागल नहीं तो उसे सनकी तो जरूर कहा जा सकता था। लेकिन इसमें किसी को भी सन्देह नहीं था कि वह बड़ा ही ईमानदार और देश-प्रेमी था। कम उम्र में ही वह विप्लवियों के दल में शामिल हो गया था, बाद में स्वदेशी और सविनय अवज्ञा आन्दोलन में उसने काफी दिलचस्पी ली थी। उसके बाद एक-एक करके कांग्रेस, कम्युनिस्ट, प्रजा सोशलिस्ट, हिन्दू महासभा आदि विभिन्न दलों में जाने के बाद अन्त में उसने तय किया कि राजनीति अत्यन्त घृणित और कुटिल पंथ है, सभी दलों को छोड़कर अब सिर्फ सत्य की शरण लेनी होगी, प्रिय हो चाहे अप्रिय, सिर्फ सत्य की ही घोषणा करनी होगी, उसका नतीजा क्या होगा उसे सोचने की जरूरत नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यानी 'सर्वधर्मान् परित्यज्य' और 'मा फलेषु कदाचन'—गीता के इन दोनों मंत्रों को मान लिया था।

विनायक से बहुत दिनों तक मुलाकात नहीं हुई थी। यकायक एक शाम को वह एक अजीब पोशाक में हम लोगों के जमाव म आ धमका। फीके बैंगनी रंग का धोती-कुरता था और कन्धे से एक थैला लटक रहा था। वह भी बैंगनी रंग का। मैंने अचरज से पूछा, "क्या मामला है विनायक, अब किस पार्टी में हो? बाहर एक झुंड देख रहा हूँ वे तुम्हारे चेले हैं क्या?"

विनायक बोला, "उन्ह भीतर आने को कहूँ? दस जने हैं, आपके तखत पर जगह न हो तो फर्श पर ही बैठ जायँगे।"

इजाजत मिलने पर विनायक के साथी कमरे में आकर कुछ तखत पर और कुछ फर्श पर बैठ गए। उनकी उम्र सोलह से तीस के अन्दर थी। सभी लोगों की पोशाक बैंगनी रंग की और कंधे में एक-एक झोला लटका हुआ। चाय के लिए मैं कह ही रहा था कि विनायक बोला, "हम लोग नशा नहीं करते हैं, चाय, सिगरेट, पान कुछ भी नहीं।"

मैंने कहा," बहुत खूब। अब हम लोगों का कुतूहल मिटाओ! देख रहा हूँ कि तुमने नई पार्टी बनाई है, इसका नाम क्या, उद्देश्य क्या, यह सब खुलासा बताओ।"

विनायक ने कहा, "मेरे दल का नाम है सत्यसन्ध संघ। उद्देश्य—निडर होकर सत्य का प्रचार करना। इस चुनाव में हम लोग लड़ेंगे।"

"क्या कहते हो जी! तुम्हारी पार्टी के मेम्बर कितने हैं? रुपये का जोर भी है? कांग्रेस, कम्युनिस्ट, प्रजा सोशलिस्ट, हिन्दू-महासभा, इनके खिलाफ किस हिम्मत से लड़ना चाहते हो? तुम लोगों को वोट कौन देगा?"

बेहद नफरत से मुँह बनाते हुए विनायक बोला, "हम लोग इलेक्शन में खड़े नहीं होंगे, अपने लिए या किसी और के लिए भी वोट नहीं माँगेंगे। हम लोगों का उद्देश्य है वोटरों को होशियार कर देना, जिससे वे धूर्त लोगों की बातों में फँसकर अंट-शंट लोगों को वोट न दे बैठें।"

"बहुत ही साधु संकल्प हैं। तुम्हारी बैंगनी पोशाक का क्या मतलब है?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"बैंगनी सत्य का प्रतीक है।"

"यह तो नई बात सुना रहे हो। अब तक तो सफेद ही सत्य का रंग था।"

"जी नहीं। सफेद ही सबसे बड़ा मिलावटी रंग है, सभी रंग की खिचड़ी, फिजिक्स पढ़कर देखिएगा। समझाये देता हूँ—सुनिए। कांग्रेस का रंग सफेद, कम्युनिस्टों का लाल, हिन्दू महासभा का नारंगी या गेरुआ। बौद्ध, जैन श्रमणों का रंग पीला है, पाकिस्तानी पीरों का हरा, जहाजी खलासियों और मोटर मिस्त्रियों का नीला और मटियर है किसान या मजदूरों का रंग। बाकी रहा बैंगनी रंग—सबसे सूक्ष्म तरंगों का रंग—उसी रंग को हम लोगों ने अपनाया है। अपने लोगों का मैनीफेस्टो पढ़ रहा हूँ जरा ध्यान से सुनिए—

'ऐ देश के लोगो, मर्द-औरत, जवान-बूढ़े, अमीर-गरीब, पढ़े-लिखे और जाहिल सभी लोगो, होशियार, होशियार! जो कुछ कह रहा हूँ सब आप ही लोगों के कल्याण के लिए—हम लोगों का इसमें कोई भी स्वार्थ नहीं। इलेक्शन में आप लोग अवश्य वोट देंगे, लेकिन खबरदार मतलबी लोगों के चक्कर में न आ जाइएगा। जो लोग वोट माँगेंगे उनके बारे में अच्छी तरह जाँच-पड़ताल कर लीजिएगा। कन्या-दान से पहले जिस तरह से होने वाले दामाद के बारे में पूरी जाँच कर ली जाती है उसी तरह वोटदान से पहले भी होना चाहिए। किसी की भी विनती न सुनिएगा, भाषणों के भुलावे में न आइयेगा, अच्छी तरह से सोच-विचार कर सबसे योग्य उम्मीद-वार को वोट दीजिएगा। कांग्रेसी, प्रजातंत्री, कम्युनिस्ट, हिन्दू महासभाई आदि हो जाने से ही लोग अच्छ नहीं हो जाते, कोई भी दल का मेम्बर है इसलिए ही वह देश का मंगल करेगा, ऐसी बातों में विश्वास न कीजिएगा। चोर, घूँसखोर, दुश्चरित्र को वोट न दीजिएगा; शराबी, अफीमची, लम्पट, परस्त्रीगामी को भी वोट न दीजिएगा। जो लोग कहते हैं कि रातोंरात तुम्हारा सब दुःख दूर कर देंगे, कोई बेकारी नहीं रहेगी, सभी लोगों को काम मिलेगा, मकान मिलेगा, मजदूर और किसानों का रोजगार दुगुना होगा, सभी को खाना-कपड़ा सस्ते में मिलेगा, टैक्स घटगा—ऐसे धोखेबाज झूठों को वोट न दीजिएगा। जो लोग करोड़पतियों के दोस्त हैं, जिनके इलैक्शन का खर्च करोड़पति लोग सँभालते हैं वे कहीं वोट माँगने आयें तो उन्हें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुरदुरा दीजिएगा। जिनके बहकाने से छोटे-छोटे बच्चे सड़कों पर वोट के दलाल बनकर नारे लगाते रहते हैं उन बच्चों के दिमाग खाने वालों को वोट न दीजिएगा! जिन लोगों के पास अपनी विचार-शक्ति नहीं है, विदेशी मालिकों के कहने पर उठक-बैठक करते हैं, विदेशी मालिकों में कोई दोष भी वे देख नहीं पाते हैं, उन खुशामदी गुर्गों की बातों पर भी कान न दीजिएगा! जो लोग गरीब मास्टरों के लिए कुली-मजदूरों से भी कम तनख्वाह तय करते; हालाँकि बड़े-बड़े अफसरों को तीन-चार हजार देने में भी आनाकानी नहीं करते; उन एक आँख वाले स्नबों को भी वोट न दीजिएगा। बड़े-बड़े कुकर्मों की जाँच के लिए जो लोग कमीशन बिठाते हैं और जाँच का नतीजा दबा रखते हैं, भ्रष्टाचार के पोषक उन बेईमानों को वोट न दीजिएगा! जो लोग खाने के सामान में मिलावट करते हैं, चोर-बाजार चलाते हैं, टैक्स देने में धोखेबाजी करते हैं, विपन्न इस्लाम और विपन्ना गोमाता की दुहाई देते हैं—"

बीच में रोकते हुए मैंने कहा, "बस, बस, तुम्हारा वक्तव्य मैं समझ गया हूँ। धर्मपुत्र युधिष्ठिर और पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण की तरह लोग भी तुम्हारे टस्ट में फेल होंगे। ऐसा शुद्ध पापरहित आदमी तुम्हें कहाँ मिलेगा? शुकदेव, गोस्वामी, गौतम बुद्ध और चैतन्य महाप्रभु की तरह के लोगों से बजट नहीं बनेगा, हरिणघाटा में दूध का इन्तजाम भी न होगा। जो लोग काम के हैं उनके चरित्र में नुक्स पकड़ने से नहीं चलेगा। शराबी और लम्पट अगर दूसरे मामलों में साधु हों, करोड़पति अगर दाता हों तो थोड़ा-बहुत चोर होने पर भी अगर कोई बुद्धिमान, सुवक्ता और जनहितैषी हो तो उसे वोट देना बुरा न होगा। सच्चरित्र, गूँगे, गोबर-गणेश से देश का कौन-सा काम होगा?"

तख्तपोश पर घूसा मारते हुए विनायक बोला, "सब काम होगा, चरित्र-वान शुद्ध आदमी अभी तक विधान-सभा में प्रवेश करके अपना जौहर ही नहीं दिखा पाया है। देश की जनता अगर होशियार हो, बेईमान धूर्तों को अगर वोट न दे, तभी अच्छे आदमी निर्वाचित होंगे और अपना जौहर दिखाने का उन्हें मौका मिलेगा।"

"तुम लोगों का खर्च कैसे चलता है? पहले तो तुम घुघुडांगा हाई स्कूल में मास्टर थे। अब भी हो या नहीं?"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

"उस स्कूल से मुझे निकाल दिया गया है। अब एक कोचिंग क्लास खोला है—ये लोग भी उसीमें पढ़ाते हैं। यह भूपेश, जितेन और शैलेन के बापों की हालत अच्छी है, इन्हें रोजगार करने की जरूरत नहीं। यह रहा विनय, यह लड़कियों को गाना सिखाता है और यह सुबल बद्रीनाथ चौधरी की फर्म पर काम करता है।"

"क्या कहते हो जी! मिलावटी घी बेचने के कारण बद्रीनाथ कई दफ़ा गिरफ़्तार हो चुका है, काफी रिश्वत और पैरवी के जोर पर हर बार उसे छुटकारा मिल गया।"

"आप ठीक जानते हैं?"

"जरूर। अरे मैं ही तो उसका वकील था।"

विनायक बोला, "ऐ सुबल, तू आज ही काम से इस्तीफा दे दे!"

सुबल ने कहा, "तो खाऊँगा क्या?"

"दो रोज न खाने से मर नहीं जाओगे, कोशिश करके कहीं दूसरी जगह काम जुटा लो!"

मैंने कहा, "अजी विनायक, तुम लोगों का संकल्प महान् है यह बात तो समझ में आ गई। हम लोगों से क्या चाहते हो, अब यह बताओ!"

"आप लोगों से सभी तरह की सहायता चाहता हूँ। इश्तहार दे रहा हूँ—जाने-पहचानों में भरसक बाँटिएगा, सत्यसन्ध संघ का उद्देश्य अच्छी तरह समझा दीजिएगा और हम लोगों के खर्च के लिए भरसक दान कीजिएगा।"

मेरे मित्र हरिचरण बाबू ने कहा, "वैरी सौरी। हम लोगों की जान पोंठी मछली की जान है, पानी में रहते हैं, मगर-घड़ियाल शेर-बुआर सभी से अच्छा रिश्ता निभाना है हमें।"

एक और दोस्त कालीचरण ने कहा, "ठीक बात है। न्यूट्रल रहना ही हमारे लिए सबसे बेखतरे की पालिसी है। हुकूमत किसी को भी मिले, हमें क्या? कांग्रेसियों ने इतने दिनों में अच्छी तरह से बना-सँजो लिया है अब कोई दूसरा दल भी कुछ फायदा उठाए।"

दूसरे एक दोस्त शिवचरण ने कहा, "सुनिए विनायक बाबू! आप लोग जो कुछ कर रहे हैं उसे सिडीशन कहते हैं, ब्रिटिश जमाने में इसे ही वेजिंग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वार यानी राजद्रोह कहा जाता था। अब राजा एक नहीं—झुंड भर राजा हैं। वोट जिसे मर्जी, उसे दूँगा, वह तो कोई देख नहीं पायगा, लेकिन किसी भी दल से विगाड़ नहीं कर सकता हूँ, जनाब !"

विनायक ने कहा, "दादा क्या कहते हैं ?"

दादा यानी मैंने कहा, "सुनो विनायक ! यहाँ पर जो लोग बैठे हैं ये सभी मेरे गहरे दोस्त हैं और तुम लोग भी साधु सज्जन हो। तुम्हारी तरह मैं पूरमपूर सत्यसन्ध नहीं हूँ फिर भी इस बैठक में मन की बात खोलकर कहने में कोई एतराज नहीं। हम लोग घर-गिरस्ती वाले लोग हैं, दुनिया के साथ हमें सर-समझौता करके चलना पड़ता है। यह देखो न, श्रीयुत सुधा-विन्दु नन्दी विधान सभा के लिए उम्मीदवार हैं। वह व्यक्ति जैसा शराबी है उतना ही चरित्रहीन। दो मुकदमे अब भी उनके खिलाफ चल रहे हैं। लेकिन वह हमारे बहुत बड़े मुवक्किल हैं। अगर वे सुन लें कि मैं तुम्हें मदद कर रहा हूँ तो मुझे और कोई केस नहीं देंगे। उसके बाद मिस्टर राधाकान्त बासू लोकसभा के उम्मीदवार हैं। नामी चोर और रिश्वतखोर। लेकिन उनके लड़के के साथ मेरी छोटी बेटी की शादी तय हुई है। अब अगर तुम्हारी बात मान लें तो ऐसा बढ़िया रिश्ता टूट जायगा।"

विनायक ने कहा, "जान-बूझकर एक रिश्वतखोर के बेटे के साथ अपनी बेटी की शादी करेंगे ?"

"उसमें नुकसान क्या है, लड़की तो सुख से रहेगी। इसके अलावा मिस्टर बासू चोर हैं इसलिए मेरा दामाद भी चोर होगा ऐसी बात तो साइंस भी नहीं कहती। और भी देखो, मेरा बड़ा लड़का किसी कदर एम. ए. पास करके बेकार बैठा हुआ है और कामरेडों के पल्ले पड़कर बिगड़ता जा रहा है। उसे एक अच्छी-सी पोस्ट दिलाने के लिए श्री गिरधारी लाल पाचाडी बहुत कोशिश कर रहे हैं। वह मेरे खास दोस्तों में से हैं, लेकिन बड़े प्रेम से काला बाजार चलाते हैं और पाकिस्तान में चावल, आटा, तेल, कपड़ा, यह सब चोरी से चालान कर देते हैं। तुम क्या कहना चाहते हो कि उन्हें बिगाड़कर मैं अपने लड़के का भविष्य बरबाद करूँगा ?"

विनायक बोला, "तो आप लोगों से कोई आशा नहीं ?"

"सुनो विनायक, तुम लोगों ने जो महान् व्रत लिया है उससे कम-से-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कम मुझे तो सिम्पैथी है। तो समझ ही सकते हो मैं आगे पीछे बँध गया हूँ। चाहते हो तो कुछ रुपया दे सकता हूँ, पर उसका कोई प्रचार न होने पावे।"

विनायक ने कहा, "रहने दीजिए, रुपया अभी नहीं चाहिए। अच्छा, मैं चला, नमस्कार!"

दो हफ़्ते के बाद विनायक फिर मेरे पास आया। पहले की तरह उसके साथ कोई बड़ा दल न था—सिर्फ तीन जने थे। पूछा—"क्या खबर है विनायक, काम कैसा चल रहा है?"

विनायक बोला, "शास्त्र में लिखा है कि 'श्रेयस्कर कार्यों में बहुत-सी रुकावटें आती हैं', सो ठीक है। हमारे दल के सात आदमी भाग खड़े हुए हैं।"

"क्या कहते हो? कहाँ गये वे?"

"दो तो नौकरी लेकर दस बजे से पाँच बजे तक दफ़्तर जा रहे हैं—उन्हें फुरसत नहीं। दो लड़के बाप की घुड़की से ठंडे होकर पढ़ने-लिखने में ध्यान दे रहे हैं। वह छोकरा जिसका नाम विनय था और जो लड़कियों को गाना सिखाता था, प्रेम करने लगा है और उसे भी जरा-सी फुर्सत नहीं। और दो जने आपके होने वाले समधी मिस्टर राधाकान्त बासू और आपके मुरब्बी गिरधारीलाल पाचाड़ी के दलाल बनकर मुँह में भोंपू लगाये चिल्ला रहे हैं—'वोट दो, वोट दो।' उस रोज शाम को एक गुंडा आकर मुझे डरा-धमका गया है।"

"देख रहा हूँ कि तुम बड़ी मुश्किल में फँसे हो। खर्च के लिए कुछ रुपया लोगे?"

"दीजिए, पर दान के बतौर नहीं, कर्ज। आप अगर हमारे संघ की सहयोगिता कर सकते तो मैं आपका दान ले सकता था। रुपया जितना जल्द हो सकेगा, चुका जाऊँगा।"

"वह तो अच्छी ही बात है—तुम्हारा आत्म-सम्मान बना रहेगा। लेकिन देश-भर में भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाले बड़े-बड़े लोगों से तुम कैसे निपट सकते हो? किसी रोज शायद गुंडे के हाथ जान चली जायगी। मैं कहता हूँ कि तुम यह होपलेस (आशा-शून्य) व्रत छोड़ दो! अच्छे और

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेखतरे के बहुत-से सत्कार्य ह; उन्हीं में से एक चुन लो—आर्त्त-त्राण, रोगी की सेवा, गरीब बच्चों की शिक्षा, वेश्याओं का उद्धार—"

"देखिए जनाब, सब काम सब लोगों के लिए नहीं होते हैं। मैंने अपना रास्ता ढूंढ़ लिया है—कोई न साथ दे तो अकेला ही चलूँगा। ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जो लोग पहले-पहल खड़े हुए थे वे संख्या में कितने थे? दूसरा कोई बेखतरे का सत्कार्य उन लोगों ने क्यों न ढूंढ़ लिया? उन लोगों ने जान दी—और आगे दूसरे लोगों ने आकर उनकी जगह ली। मेरा यह व्रत धर्मयुद्ध-सा है—हो न हो, मैं ही पहला शहीद बन जाऊँ। देखिएगा, मेरे बाद भी और भी बहुत-से लोग इस काम में लगेंगे, पहले तादाद में कम आयेंगे, उसके बाद झुंड-के-झुंड आयेंगे। अच्छा, चलता हूँ, नमस्कार!"

दस रोज बाद सबेरे एक लड़के ने आकर कहा, "विनू दा ने यह रुपए की थैली आपको देने को कहा है। साढ़े सात रुपये कम हैं इसमें, वह मैं इसके बाद चुकता कर दूँगा।"

रुपया लेकर मैंने कहा, "नहीं, नहीं, बाकी चुकाना नहीं पड़ेगा, विनायक की क्या खबर है?"

"कल रात से अस्पताल में हैं—जीने की कोई आशा नहीं है। रात के आखिरी पहर मुझसे कुछ बातें की थीं आपका उधार चुका देने के बारे में। आज सुबह से कोई होश नहीं। रुपये की बड़ी तंगी थी, महीने भर से नाम-मात्र खाना मिल पाता था, बेहद कमजोर हो गए थे। कल शाम को सड़क पर बेहोश होकर गिर पड़े और उसी वक्त राधाकान्त बोस की मोटर के नीचे वे आ गए।"

जब मैं अस्पताल पहुँचा तब विनायक की मृत्यु हो चुकी थी। उसके दल के तीनों लोग वहीं मौजूद थे।

विनायक को जो रुपया मैंने दिया था वह सभी उसने वापस भेज दिया—साढ़े सात रुपये के अलावा। मेरी सहायता का मूल्य वही साढ़े सात रुपया है। अगर मैं उसे दो तीन हजार भी दे सकता तो भी वह क्या कर सकता था? उसने आन्तरिक सहायता माँगी थी—मुझ-जैसे आदमी के लिए वह असम्भव-

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सा था। विनायक की बहुत बड़ी भूल थी कि उसने दुष्टों का विनाश करना चाहा था, जो काम युग-युग में अवतारों के ही करने की बात है। पागल विनायक अनधिकार कार्य करने में पतंगे की तरह जलती आग में जान दे चुका है। बड़े ही अफसोस की बात है, लेकिन इसीका नाम होनहार है, हम लोगों की क्या मजाल कि उसका विरोध करें। नहीं, हमें अफसोस करने का कुछ नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

: १५ :

ययाति की जरा

महाराज ययाति ने अपने कनिष्ठ पुत्र पुरु से कहा, "बेटा, पच्चीस साल तक मैंने तुम्हारी दी हुई जवानी का उपभोग किया है और तुम उसके बदले में मेरी जरा का गुरुभार अपने शरीर पर ढोते रहे हो। अब मुझे भोग-विलास में कोई रुचि नहीं है। अब मैंने समझ लिया है कि काम्यवस्तु के उपभोग से कामना शांत नहीं होती, बल्कि आग की तरह घी डालने पर बढ़ती ही रहती है। इसलिए विषय-तृष्णा त्याग ही देनी चाहिए। मेरे पाँच पुत्रों में कनिष्ठ होते हुए भी गुण में तुम श्रेष्ठ हो। तुम्हारे और भाई स्वार्थी हैं—किसी ने भी मेरा अनुरोध स्वीकार नहीं किया था, पर तुमने बगैर कुछ कहे झट अपनी नई जवानी मुझे दे दी थी और उसके बदले में मेरे पके हुए केश, टूटे दाँत, लोल चर्म और दुर्बल इन्द्रियग्राम ले लिया था। पुत्र. अब जरा लौटाकर तुम अपनी जवानी ले लो और मेरा राज्य भी ले लो! तुम अपने मन के अनुसार सुन्दरी कन्या से व्याह करो, लम्बे अरसे तक जीवित रहकर सुख-सम्पदा का उपभोग करो! मैं संसार त्यागकर वन जाऊँगा।"

यहीं पर जरा पूर्वकथा बता देना जरूरी है। ययाति की पहली पत्नी देवयानी थी, जो कि शुक्राचार्य की कन्या थी। दूसरी पत्नी शर्मिष्ठा थी—दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या। उनके तीन पुत्र थे—जिनमें पुरु सबसे छोटा था। ययाति ने छिपकर शर्मिष्ठा से शादी कर ली थी—पता लगने पर देवयानी नाराज होकर पिता के आश्रम में चली गई थी। शुक्राचार्य के शाप से ययाति असमय में ही साठ साल के बूढ़े की नाईं जराग्रस्त हो गए थे।

ययाति की बातें सुनकर पुरु ने हाथ जोड़कर विनयपूर्वक कहा, "पिताजी मुझे क्षमा कीजिए! एक बार आपकी आज्ञा मैंने शिरोधार्य कर ली थी, लेकिन आपकी यह नई आज्ञा मानने की कोई अभिलाषा मुझमें नहीं है। आप कृपया यह आज्ञा वापस ले लीजिए! मुझे अपनी जवानी वापस नहीं चाहिए, आप ही उसका मजा लीजिए, मैं अपने बुढ़ापे से ही खुश हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ययाति बोले, "बेटा, तुमने मुझे आश्चर्य में डाल दिया। मेरे अनुरोध करने पर तुमने मुझसे जरा ली थी, वक्त गुज़रने के कारण वह जरा और बढ़ी होगी। अब उससे क्यों छुटकारा पाना नहीं चाहते हो यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही है।"

पुरु बोले, "पिताजी, हमारे दोनों की मौजूदा हालत की ओर तो जरा ख्याल कीजिए। जब आपने मेरी जवानी लेकर अपनी जरा मुझे दी थी, तब मेरी उम्र बीस की थी और आपकी साठ। उसके बाद पच्चीस साल बीत गये हैं। अब आप पैंतालीस साल के प्रौढ़ हैं और मैं पचासी साल का स्थविर हूँ। आपकी प्रौढ़ता की मुझे तनिक भी चाह नहीं है। जराग्रस्त होने के बाद से मैं लगातार शास्त्र-पाठ, योग-चर्चा और अध्यात्म-चिन्तन में लगा हुआ हूँ, इन्द्रिय-भोग में मुझे आसक्ति नहीं, सभी तरह की विषय-तृष्णा भी लुप्त हो चुकी है। मैंने विवाह नहीं किया है, परम सुन्दरी रमणी देखने पर भी मेरा चित्त चंचल नहीं होता है, अत्यन्त स्वादिष्ट मांस या मिठाई में भी मेरी रुचि नहीं है। इस शांतिपूर्ण दशा में मैं कोई परिवर्त्तन नहीं चाहता हूँ। अब मैं मोक्ष के लिए तपस्या कर रहा हूँ, आपके साथ उम्र बदलने पर मेरी पच्चीस साल की साधना भ्रष्ट हो जायगी।"

ययाति अब स्वस्थ बलवान मँझली वयस के थे, उनके बाल और मूँछों में अभी कतई सफेदी नहीं आई थी, देखने पर तीस साल के युवक ही लगते थे। उनका पुत्र पुरु पचासी साल का वृद्ध, सिर पर अब भी कुछ पके बाल बचे थे, मुँह पर विशाल सफेद मूँछ और दाढ़ी। प्रौढ़ ययाति अपने महा-स्थविर पुत्र से जरा डरते भी और उससे शर्माते भी। पुरु की बातें सुनकर बोले, "बेटा, मैं तुम्हारी तपस्या को खंडित नहीं करना चाहता; लेकिन मेरी क्या गति होगी? यह यौवन तुल्य दुर्मद प्रौढ़ता मुझे अब और सहन नहीं होती।"

पुरु बोले, "पिताजी, किसी स्थविर सद्विप्र या सत् क्षत्रिय को आप अपनी प्रौढ़ता दे दीजिए और बदले में उससे उसकी जरा ले लीजिए! आप मंत्री को इस बारे में आज्ञा दे दीजिए! वे राज्य में हर कहीं डुग्गी पिटवाकर ऐलान करा देंगे। प्रार्थी की कमी नहीं होगी। आप योग्यतम के साथ ही उम्र का विनिमय कर सकेंगे। अब मुझे जाने की आज्ञा दीजिए! मैंने अग्निष्टोम यज्ञ का संकल्प किया है, उसीका प्रबन्ध करना है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुरु के चले जाने के बाद पचास राज-भार्याएँ अन्तःपुर से आ व्याकुल होकर ययाति को घेरकर खड़ी हो गईं। प्रथम पटरानी देवयानी नाराज होकर जो पीहर गई थी सो वापस नहीं लौटी थी। दूसरी पटरानी शर्मिष्ठा की उम्र भी अब साठ के लगभग थी। वह किसी से मिलती-जुलती नहीं, आड़ में रहकर धर्म-कर्म में ही अपना समय बिताती है। पुनर्यौवन पाने के बाद ययाति ने एक-एक करके पचास शादियाँ की थीं। उन सब पत्नियों की उम्र अब चालीस से पच्चीस के अन्दर थी। इनमें से जो सबसे प्रवीण थी वह पृथुलांगी अपनी सौतों की मुखतार बनकर ययाति से बोली, "आर्यपुत्र, यह कैसी बातें सुन रही हूँ ? सुनते हैं कि अपनी जवानी पुत्र को वापस देकर आप उससे पचासी साल का बुढ़ापा लेने वाले हैं ?"

ययाति बोले, "ऐसी ही तो अभिलाषा थी। जवानी अब मुझे भाती नहीं। सोचता हूँ कि अब वैराग्य ले लूँ। पर पुरु तनिक अड़ गया है, अब वह पहले की तरह आज्ञाकारी पितृ-भक्त पुत्र नहीं रहा। वह अपनी जरा छोड़ना नहीं चाहता, मानो कितनी ही दुर्लभ सामग्री हो। अगर किसी तरह से भी उसे न मना सकूँ तो किसी स्थविर ब्राह्मण या क्षत्रिय को अपनी उम्र देकर उससे उसकी जरा ले लूँगा।"

राज-पत्नियों में जो सबसे कनिष्ठा थीं उस करंजाक्षी ने कहा, "महाराज, अगर यही आपकी अभिलाषा थी तो आपने हम लोगों से विवाह ही क्यों किया ? आप बहुत-सी पत्नियों के पति हैं, अपनी जवानी भोग लेने के बाद अपने लड़के की जवानी भी भोग रहे हैं। जवानी से आपका जी ऊब सकता है पर हम लोगों के साथ ऐसी बात नहीं। हम लोगों को अनाथ बनाकर अगर आप बुढ़ापा स्वीकार करेंगे तो आपको महापाप लगेगा।"

ययाति बोले, "मैंने निश्चय कर लिया है—अपना संकल्प नहीं बदल सकता हूँ। तुम लोगों में सभी को मैंने पत्नीत्व से मुक्ति दे दी, राज-कोष से काफी धन भी तुम्हें मिलेगा। जो चाहे फिर से शादी कर सकती है।"

करंजाक्षी ने तीखे स्वर में कहा, "महाराज आपका सामान्य ज्ञान भी जाता रहा। हम लोग सभी सन्तानवती हैं, कौन हमें पत्नीत्व में वरण करेगा ? सवत्सा धेनु का जो मूल्य है सो मूल्य सवत्सा नारी का नहीं होता।"

ययाति बोले, "अच्छा, अच्छा तुम लोगों के लिए यथायोग्य प्रबन्ध

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किया जायगा। नया पति अगर न भी मिले फिर भी सुख से रह सकोगी। अब जाओ, मेरे पास काफी काम है।"

पुत्र का मत बदलने के लिए ययाति ने काफी कोशिश की, लेकिन कोई नतीजा न निकला। तब उनकी आज्ञा के अनुसार राजमंत्री ने यह घोषणा की।—"भो भो विद्या-विनय-सम्पन्न सद्वंश जात स्थविर ब्राह्मण तथा क्षत्रियगण, अवधान कीजिए! कुरुराज ययाति अब और जवानी का उपभोग करना नहीं चाहते। किसी जराग्रस्त सत्पात्र के साथ अपनी आयु का विनिमय करना चाहते हैं। श्री ययाति की वर्तमान अवस्था पैंतालीस है, पूर्ण यौवन के समान ही है। प्रार्थी स्थविर अगली अमावस के पूर्वाह्न में हस्तिनापुर राज-भवन के चौक में उपस्थित हों। महाराज स्वयं निर्वाचन करेंगे, जिन्हें योग्यतम विचारेंगे उन्हींके साथ आयु का विनिमय होगा। उनके सिद्धान्त का कोई विरोध स्वीकृत नहीं होगा।"

निश्चित दिवस पर लगभग एक हजार जराग्रस्त ब्राह्मण और क्षत्रिय हस्तिनापुर आए। इनकी उम्र सौ से साठ तक की थी। कोई बिलकुल कुबड़ा बन गया था, लाठी टेककर चलता था। कोई आँखों की जोत खो चुका था और कोई हाथ के सहारे लाया गया था। कोई तो बिलकुल ही चल नहीं पाता था—डोली पर सवार होकर आया था। ययाति के संकल्प की खबर पाकर देवलोक से दोनों अश्विनीकुमार और देवर्षि नारद भी कुतूहल के मारे वहाँ आ पहुँचे, पर आत्म प्रकाश न कर के अगोचर ही रहे।

समवेत प्रार्थियों की आवभगत करके ययाति उनकी परीक्षा करने जा ही रहे थे कि ऐसे समय बुढ़ियों का एक दल भीड़ धकेलते हुए आगे बढ़ आया। उनकी नेत्री एक अनेक वयस वाली ब्राह्मणी थीं। उसका सिर करीब-करीब केशशून्य था, माथे पर वैधव्य की प्रतिषेधक एक बड़ी-सी सेंदुर की बिन्दी थी और वह लाल रंग की रेशमी साड़ी पहने हुए थी। इन्होंने काँपते स्वर में कहा, "कुरुराज ययाति, शास्त्र में है कि यौवन, धन सम्पदा, प्रभुता और अविवेक इनमें से हर एक अनर्थकर है और दुर्दैव से आप में ये चारों ही एकत्रित हो गए हैं। एक जवानी में ही बचाव नहीं, आपने दो-दो जवानियों का मजा ले लिया ह इसलिए जवानी की बीमारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाले बूढ़े किस प्रकार के जीव हैं सो आप भली भाँति जानते हैं। जिस वृद्ध के साथ आप आयु विनिमय करेंगे वह अवश्य ही युवती भार्या घर में लायगा। तब उसकी वृद्धा पत्नी की क्या दशा होगी क्या आपने कभी यह सोचकर देखा है ?"

ययाति कुंठित होकर बोले, "हाँ आपकी आशंका यथार्थ है।" अजी मंत्री, अभी घोषणा कर दो कि जिनकी पत्नियाँ जीवित हैं उनके साथ मैं वय-विनिमय नहीं करूँगा। एक-एक स्वर्णमुद्रा प्रणामी के बतौर उन्हें देकर विदा कर दो !"

जिन्हें छोड़ दिया गया उन लोगों ने प्रणामी तो स्वीकार कर ली, पर कोई गया नहीं। राजा किसका मनोनयन करता है यह देखने के लिए प्रतीक्षा करते रहे।

जो पंगु ब्राह्मण डोली पर सवार होकर आये थे वे राजा के सामने उपस्थित होकर डोली में बैठे-बैठे ही बोले, "महाराज की जय हो। मैं महा-कुलीन विप्र कुलीरक हूँ, उम्र सौ साल, सर्व शास्त्रज्ञ हूँ—मेरी पाँचों पत्नियाँ एक-एक करके गुजर चुकी हैं। मेरे समान योग्य पात्र आपको कहीं नहीं मिलेगा, इसलिए मेरे ही साथ वय विनिमय कीजिए !"

नमस्कार करके ययाति बोले, "द्विजोत्तम कुलीरक, मैं जरा चाहता हूँ, पर पंगुता नहीं। मंत्री जी इन्हें पाँच स्वर्णमुद्रा देकर विदा कीजिए !"

उसके बाद एक कुबड़े वृद्ध अपने दो पोतों का हाथ पकड़े ययाति के पास आकर बोले, "महाराज, मेरा नाम किंचुलुक है, कार्तवीर्यार्जुन का वंशधर हूँ, उम्र अस्सी है। आँखों से अच्छी तरह दिखाई नहीं पड़ता है, पर लोग मेरी अथाह विद्याबुद्धि के लिए मुझे प्रज्ञाचक्षु कहते हैं। बहु पुत्र-पौत्रों के होने पर भी मैं असुखी हूँ, सभी लोग मेरी अवहेलना करते हैं, जायदाद के लालच में मेरी मृत्यु-कामना करते हैं। आपकी भरी जवानी मिल जाय तो मैं फिर से विवाह करके सुखी बन सकता हूँ।"

ययाति बोले, "महामति किंचुलुक, मैं जरा की कामना करता हूँ, पर प्रज्ञाचक्षु से मेरा काम नहीं चलेगा। मंत्री इन्हें पाँच अशर्फियाँ देकर विदा करो !"

अनेक प्रार्थी एक-एक की राजा के सामने अपनी-अपनी गुणावली सुनाते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रहे, लेकिन ययाति ने किसी को भी अपने महान् दान के योग्य पात्र नहीं समझा। सहसा एक गुंजन सुन पड़ा, जनता ने सम्मानपूर्वक उनके लिए रास्ता बना दिया। दो पलितकेश पलितश्मश्रु वृद्ध एक अपूर्व रूप-लावण्यवती ललना का हाथ पकड़े राजा के सामने आए।

ययाति ने विस्मय से पूछा, "आप लोग कौन हैं ब्राह्मणवर? यह वर-वर्णिनी सुन्दरी कौन है जिसके आने से सभा आलोकित हो उठी है?"

दोनों वृद्धों में जो वयस में ज्येष्ठ थे वह बोले, "महाराज, विन्ध्यपादस्थ तपोवन विल्वाश्रम से आ रहे हैं। आपने महातपा भल्लातक ऋषि का नाम सुना होगा। मैं उनका बड़ा लड़का विभीतक हूँ और छोटा यह हरीतक है। यह रूपवती कुमारी सुवर्त्तराज मित्रसेन की कन्या मनोहरा है। प्रौढ़ वय में पत्नी की मृत्यु हो जाने पर मित्रसेन ने वानप्रस्थ ग्रहण करने का संकल्प किया और पुत्र का राज्याभिषेक करने के बाद इकलौती बेटी के विवाह की तैयारी करने लगा। लेकिन इस मनोहरा ने उस समय कहा, 'पिता विवाह रहने दीजिए, मैं भी वन जाऊँगी वर्ना आपकी सेवा कौन करेगा?' कन्या का आग्रह देखकर मित्रसेन राजी हो गये और अपने कुलगुरु हमारे पिता भल्लातक के आश्रम के पास कुटिया बनाकर वहाँ पर रहने लगे। हमारे पिता की काफी अवस्था हो गई थी। कुछ दिनों बाद वह स्वर्ग प्रस्थान कर गये। हाल में राजा वसुमित्र ने पन्द्रह वर्ष वनवास के उपरान्त देह-त्याग किया है। मृत्यु के समय उन्होंने कहा, 'हाय, कन्या को अनूढ़ा रख-कर ही मुझे जाना पड़ रहा है। गुरुपुत्र विभीतक और हरीतक, इसकी जिम्मेदारी तुम लोग सँभालो, समय नष्ट न करके इसका विवाह कर दो, लेकिन वृद्ध के साथ कभी नहीं। वृद्ध पति में मेरी कन्या की रुचि नहीं है।' राजा की मृत्यु के बाद हम लोग बड़ी समस्या में फँस गये। हम दोनों ही वृद्ध हैं इस कारण मनोहरा के मन के मुताबिक पात्र नहीं हैं। ऐसे ही समय सौभाग्य से आपकी घोषणा सुनी इसलिए झटपट चले आये हैं। महाराज, सभी विषयों में मैं इस कन्या का योग्य पात्र हूँ, मेरे साथ ही आप वय-विनिमय कीजिए तो हमारे विवाह में कोई बाधा न रहे।"

हरीतक जोश में आकर बोले, "महाराज, मेरे दादा का प्रस्ताव कतई न्यायपूर्ण नहीं है। मैं उनसे ज्यादा रूपवान और विद्वान् हूँ, मनोहरा के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साथ मेरी वयस का फर्क भी कम है, उसकी तीस है और मेरी साठ और दादा की पैंसठ है। मैं अभी योग्य पात्र हूँ—महाराज की जवानी मिल जाय तो पूछना ही क्या।"

विभीतक ने डाँटते हुए कहा, "तू चुप रह! मूर्ख ज्येष्ठ से पहले कनिष्ठ का विवाह हो ही नहीं सकता।"

ययाति ने पूछा, "राज-कन्या तुम्हारी क्या राय है? तुम जिसे चाहोगी उसीको मैं अपनी जवानी दे दूँगा। इन दोनों भाइयों में तुम किसे योग्य समझती हो?"

मनोहरा बोली, "दोनों ही समान हैं।"

ययाति बोला, "सुन्दरी, तुमने मुझे बड़ी समस्या में डाल दिया, विभीतक और हरीतक में से किसी को भी ऊँच-नीच नहीं पा रहा हूँ। अच्छा एक काम किया जाय तो कैसा हो? जरा मेरी ओर तो देखो।"

अपने काले घुँघराले पट्टेदार बालों पर हाथ सहला और राजकीय मोटी मूँछों पर ताव देकर ययाति बोले, "जवानी तो मेरे पास है ही, अगर मैं उसका दान न करके रख ही लूँ और मैं ही तुमसे ब्याह कर लूँ तो कैसा हो मनोहरा?"

विभीतक और हरीतक क्रुद्ध होकर बोले, "यह कैसी बात है महाराज! आपने डुग्गी पीटकर ऐलान किया है कि अपना यौवन आप दूसरे को दान करेंगे, अब उल्टी बातें क्यों कर रहे हैं?"

समवेत वृद्धों में कुछ ने हाथ हिलाकर कहा, "महाराज, अपना वादा तोड़ने पर आप रौरव नरक में जायँगे। हम लोगों को बुलवाकर धोखा देंगे, इतनी बड़ी हिम्मत।"

जनता से शोर उठा—"नहीं चलेगी, नहीं चलेगी।"

मामला तूल पकड़ता देखकर नारद और अश्विनीकुमारद्वय ने आत्म प्रकाश किया। ययाति पाद्य-अर्घ्य देने की तैयारी करने लगे पर नारद बोले, "महाराज व्यस्त न होइए, उपस्थित संकट से पहले उबरिए!"

ययाति बोले, "महर्षि मेरा दिमाग चकरा गया है, आप ही बताइए कि अब मेरा कर्त्तव्य क्या है।"

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नारद बोले, "तुम सत्यभ्रष्ट हो चुके हो। पुरु को बुलाओ, वही तुम्हारी वचन-रक्षा की व्यवस्था करेगा।"

ययाति के बुलाने पर पुरु जनसभा में आये। पूज्यों की वन्दना करने के उपरान्त बोले, "पिताजी आप मुझे फिर इसमें क्यों फँसाना चाहते हैं। मेरे यज्ञ का अनुष्ठान अभी तक समाप्त नहीं हुआ है, यज्ञान्त-स्नान बिना किये ही आपकी आज्ञा से यहाँ चला आया हूँ। बताइए क्या करना होगा।"

ययाति चुप रहे। नारद बोले, "राजपुत्र, तुम्हारे पिता का किंचित् चित्त-विकार हुआ है, उनके संकल्प की सिद्धि की व्यवस्था तुम्हें ही करनी है। इस सभा में उपस्थित वृद्धों में कौन योग्यतम है जिनके साथ ययाति वय-विनिमय करें यह तुम्हीं तय करोगे।"

पुरु ने पूछा, "यह विद्युद्वल्लरी की नाईं ललना जिनके दो हाथ दो वृद्ध पकड़े हुए हैं, कौन है ?"

नारद बोले, "वह स्वर्गगत सुवर्त्तराज मित्रसेन की कन्या मनोहरा है। वे दोनों वृद्ध उनके पिता के गुरुपुत्र विभीतक और हरीतक हैं। वे दोनों ही मनोहरा से विवाह करना चाहते हैं, ययाति की जवानी भी वे चाहते हैं। लेकिन तुम्हारे पिता बड़ी समस्या में पड़ गए हैं, किसके साथ वय-विनिमय करें वह निश्चय नहीं कर पा रहे हैं।"

पुरु बोले, "इसमें मुझे तो कोई समस्या नहीं दिखाई पड़ती है, मैं अभी मीमांसा किये दे रहा हूँ। क्यों राज-कन्या ? तुम उन दोनों वृद्धों में किसे योग्यतर समझती हो ?"

मनोहरा ने जवाब दिया, "दोनों को ही समान देखती हूँ।"

थोड़ी देर सोचने के बाद पुरु ने कहा, "वरवर्णिनी मनोहरा, तुम्हारे साथ एकान्त में मैं कुछ परामर्श करना चाहता हूँ। उस अशोक वृक्ष के नीचे चलो !"

अशोक वृक्ष के नीचे कुछ देर वार्त्तालाप करने के पश्चात् पुरु सबके समक्ष में आकर बोले, "परमाराध्य पितृदेव, त्रिलोकपूज्य देवर्षि, देव वैद्य अश्विनीद्वय और समवेत भद्रगण, सुनिए ! आज सहसा मैं यह समझ पाया हूं कि पिता की आज्ञा न मानकर मैं बड़ा ही अपराधी बन गया हूँ। अब वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे क्षमा करें, अपने यौवन के बदले में मेरी जरा ग्रहण करें। यह राज-कुमारी मनोहरा मुझ ही को पतित्व में वरण करेगी।"

नारद और दोनों अश्विनीकुमार बोल पड़े, 'साधु साधु !' जनता से ध्वनि उठी, 'राजा ययाति की जय हो, युवराज पुरु की जय हो।' विभीतक और हरीतक विषाद भरा चेहरा लेकर चुपचाप लौट गए।

ययाति धीमे स्वर में मन-ही-मन बड़बड़ाने लगे, "छी-छी-छी, अगर मुझे यही करना था तो उस रोज इतनी शान बघारकर मेरे कहने पर इन्कार क्यों किया था ? इतने लोगों के सामने ऐसी भद्द करने की क्या जरूरत थी ?"

दोनों अश्विनीकुमार बोले, "महाराज ययाति, राजपुत्र पुरु, हम लोग अभी नश्तर लगाकर तुम लोगों की जरा-जवानी बदले दे रहे हैं। अस्त्रों का भांड हम लोगों के साथ ही है।"

नारद बोले, "तुम लोगों को कुछ भी नहीं करना पड़ेगा, पिता-पुत्र के पुण्य-बल से बिना अस्त्र के ही परिवर्त्तन हो जायगा।"

पुरु ने अपने पिता का चरण स्पर्श किया। पुरु के मस्तक पर हाथ रखकर ययाति ने कहा, "पुत्र मेरा यौवन तुममें संक्रमित हो और तुम्हारी जरा मुझमें प्रवेश करे !"

तत्क्षण विनिमय हो गया।

SPS
891.433 R 14 A
21211

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE